International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences Volume – 7 Issue – 2 July-December 2019 (Special Issue)
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

राजस्थान के मरू प्रदेश में पर्यटन विकास के भौगोलिक आधार

डॉ. मानवेन्द्र, *भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।*

1. प्रस्तावना : राजस्थान प्रदेश वृत पश्चिमी भाग थार मरुस्थल के नाम से जाना जाता हे इसके अन्तर्गत राज्य के 12 जिले आते हैं जो हैं – बाड़मेर, बीकानेर, चुरु, गंगाानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जालौर, झुन्झुनू, जोधपुर, नागौर, पाली और सीकर तथा 208751 वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में फैले है जो राजस्थान प्रदेश का 61 प्रतिशत तथा भारत देश के कुल भू भाग का 6.35 प्रतिशत है। विश्व के मरुस्थलों में से थार का मरुस्थल सबसे अधिक आबाद क्षेत्र है। मरुस्थलीय वर्गीकरण के अन्तर्गत यह भाग शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। (मानचित्र 1)

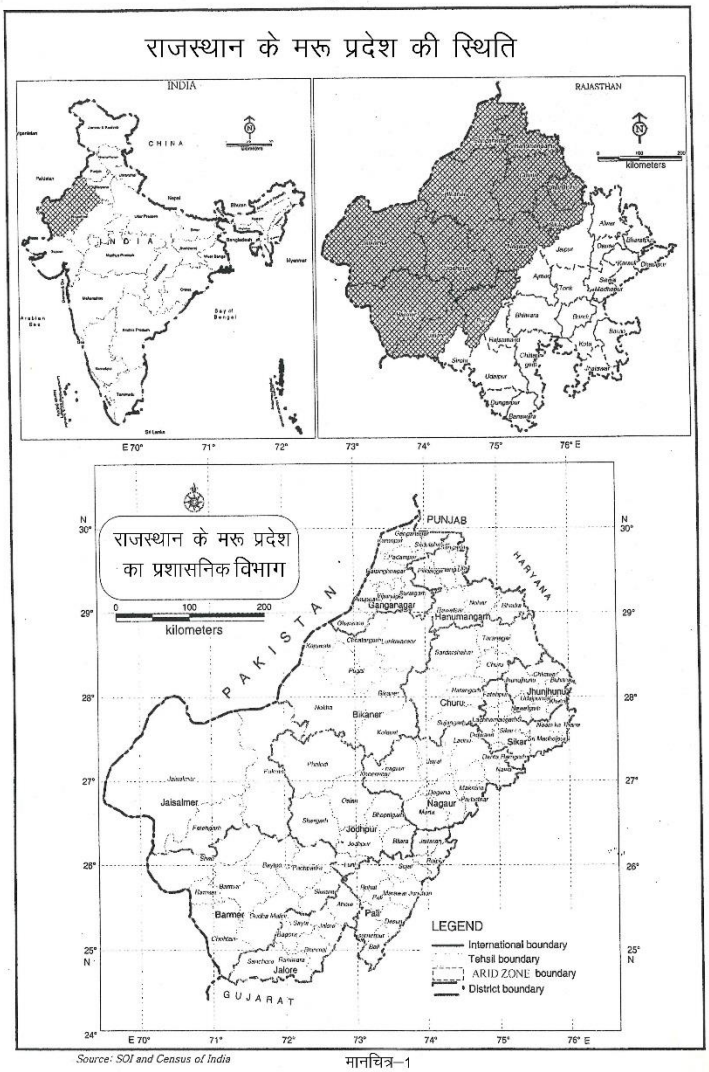

मानचित्र–1

राजस्थान का यह मरूस्थल लगभग 2,08,487 वर्ग कि.मी. क्षेत्र जो $24^0 40'$ से $30^0 12'$ उत्तरी अक्षांश तथा $69^0 31'$ एवं 76^0 पूर्वी दिशान्तर के मध्य स्थित है। राजस्थान के अन्तर्गत 12 जिलों यथा –श्रीगगांनगर, हनुमानगढ़, झुंझुनूं, सीकर, चुरू, नागौर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर तथा पाली को मरूस्थलीय जिलों की सूची में समाविष्ट किया है।

मरू प्रदेश अपनी गौरव गाथाओं, भव्य महलों, ऐतिहासिक स्मारकों, आकर्षक एवं मनोहारी स्थापत्य कला, भित्ति चित्रों, हस्तकलाओं एवं लोक कथाओं के लिये पर्यटकों को सदैव ही उत्सुकता प्रदान करता रहा है। यह उत्सुकता ही मरू प्रदेश में पर्यटन का आधार कहा जा सकता है। मरू प्रदेश गौरवपूर्ण इतिहास व परम्पराओं की वह वीर भूमि हैं, जहां की राजपूतानी आन और शौर्य की कीर्ति विश्व में बेजोड़ है । पहाड़ पहाड़ियों पर निर्मित दुर्लभ दुर्गो, प्रसादों व विस्तृत मरूभूमि आदि अप्रकृति आदि प्रकृत के विभिन्न रूपों में श्रृंगारित यह राजघरानों की भूमि यदि पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है तो क्या? देश–विदेश के विभिन्न भागों से

आने वाले असंख्य प्रदेश की सुरम्यता व चिंताकर्षण पर्यटन स्थलों का परिचायक है । इस प्रदेश की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परम्परायें, जन जीवन, प्राकृतिक वातावरण सभी अपने में अनूठी विविधता लिये हुए हैं।

ष्राजस्थान के मरुप्रदेश में पर्यटन विकास की समस्याएं एवं संभावनाएंष शोध प्रबंधा का अध्ययन क्षेत्र मरु क्षेत्रों के 12 जिलों में फैला हुआ क्षेत्र है। ये जिले हैं – बाड़मेर, बीकानेर, चुरु, गंगालगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जालौर, झुंझनू, जोधपुर, नागौर, पाली व सीकर। यह क्षेत्र 2,08,751 वर्ग किलो मीटर है जो राजस्थान राज्य का 61 प्रतिशत है तथा 24°40श से 30°12′ उत्तरी अक्षांश तथा 69°31′ से 76° उत्तरी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस क्षेत्र के चार जिले गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से सटे है जो कुल 1070 किलोमीटर लम्बे है।

राजस्थान राज्य के छः संभागों में से बीकानेर संभाग में गंगाानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर व चुरु जिले सम्मिलित हैं। जोधपुर संभाग में जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, जोधपुर व पाली जिले आते हैं। जयपुर संभाग में सीकर व झुंझनू जिले सम्मिलित है तथा नागौर जिला अजमेर संभाग के अन्तर्गत आता है। मरु क्षेत्र के 12 जिले 85 पंचायत समितियों में विभाजित हैं। यहां की कुल जनसंख 215.11 लाख है जो राजस्थान राज्य की जनसंख्या की 38.07 प्रतिशत है।

2. पर्यटन–अर्थ एवं महत्ता : आज के वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील युग में मनुष्य पर काम व जिम्मेदारीयां बहुत बढ़ गई है। एक और मनुष्य काम करके धन अर्जन करता है और दूसरी और अपने नीरस, कष्ट साध्य व नियमबद्ध जीवन से तनावयुक्त रहता है यह भौतिक जगत की एक विशेषता है। अपनी भागदौड़ की जिन्दगी से परेशान होकर मनुष्य कुछ समय विश्राम चाहता है और वह भी अपने वातावरण व परिवेश से दूर रहकर। इस दृष्टि से मनुष्य ऐसे स्थान की तलाश में रहता है जहां जाकर उसे पूर्ण विश्राम मिले जो मनोरंजक व अर्थपूर्ण हो साथ ही अपनी उबाऊ जीवन से छुटकारा करके पुनः शक्ति संचार कर सके जिससे वह अपने कार्य व उत्तरदायित्व को अधिक गतिमान रहकर सम्पन कर सके।

यातायात व संवाद वाहन के साधनों में वृद्धि होने से मनुष्य की पहुंच विश्व के हर कोने में हो गई है और मनुष्य दुनियां भर में कहीं भी तुरन्त पहुंच सकता है परन्तु वह ऐसे स्थान का चयन करता हे जो उसकी रुचि के अनुरूप हो और जहां जाकर उसे वास्तव में वह सब कुछ प्राप्त हो जिसकी इच्छा लेकर उसने अपनी यात्रा की हैं । इस सबमें महत्वपूर्ण बात यह है कि पर्यटक कौन है। पर्यटक उस व्यक्ति को माना जाता है जो अपने कार्यक्षेत्र, परिवेश, प्रदेश व देश से 24 घंटे से अधिक या छः माह तक की अवधि बाहर बिताता है।

सामान्य शब्दों में पर्यटन का अर्थ है–ष्पर्यटन व प्रकृति संरक्षण का प्रबंध इस ढंग से किया जावे कि पर्यटक अपने निहित उद्देश्य की प्राप्ति कर सके और जाने वाले स्थान का पर्यावरण व पारिस्थितिकी सन्तुलन निरन्तर बना रहे।'' पर्यटन के दो पक्ष होते है – एक पक्ष वह व्यक्ति या समूह जो अपने स्थान से दूसरे स्थान पर जाते है और दूसरा पक्ष जहां पर्यटक आते हैं। आज के युग में पर्यटन दोनों पक्षों के लिए महत्वपूर्ण है और दूसरे शब्दों में परस्पर एक दूसरे से संबद्ध हैं। व्यक्ति या समूह जिस स्थान पर जाते हैं या जाना प्रस्तावित करते है वहां जाकर उसकी निहित उद्देश्य की प्राप्ति नहीं होती, वह स्थान पर्यटक की दृष्टि में अर्थहीन हो जाता हे। इसी प्रकार जिस स्थान पर पर्यटक आते है वहां के लोगों की सुख शान्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है तो पर्यटन अनुपयोगी हो जाता है। अतः पर्यटन के द्वारा दोनों पक्षों को यथोचित लाभ मिलना सतत प्रक्रिया जारी रखने में मदद देता है। आज पर्यटन एक सुव्यवस्थित एवं समृद्ध व्यवसाय बन गया है जिससे देश व स्थान की अर्थव्यवस्था पर सापेक्ष प्रभाव पड़ता है। आज दुनियां के बहुत से देशों की अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्त्रोत पर्यटन बन गया है और उन देशों में तेजी से खुशहाली आई है। इसी श्रृंखला में भारत सरकार ने भी पर्यटकों को देश में आने के लिए आकर्षित करने के लिए बहुत सापेक्ष उपाय किए है जिससे पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। भारत सरकार ने पर्यटन को एक उद्योग का दर्जा दिया है जिससे इस क्षेत्र में पर्याप्त विनियोजन किया जा सके और अधिकाधिक पर्यटन देश के विभिन्न प्रदेशों में आवें। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन वर्ष के रूप में मनाए जाने से पर्यटन के विश्वव्यापी महत्व, उसके परिलाभ व प्रभावों को मान्यता दी गई है। आर्थिक विकास एवं प्रगति के साथ संरक्षण के साधन के रूप में पर्यटन की क्षमताओं को पहचानने के लिए सुव्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाया जाने लगा है।

भारत देश का प्रत्येक प्रदेश पर्यटकों की अपने यहां आने के लिए आकर्षित करने के लिए सतत् प्रयतनशील है और विभिन्न प्रचार माध्यमों के द्वारा अपने यहां के पर्यटक स्थलों का प्रचार प्रसार कर अधिकाधिक पर्यटक जुटाने के लिए समन्वित प्रयास कर रहा है। इन सब पहलुओं की पृष्ठ भूमि में पर्यटन से होने वाले परिलाभ है जो देश व प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डालते है। पर्यटक जिस स्थान पर जाते हैं वहां अपनी सुख सुविधा व मनोरंजन के लिए यथोचित धन खर्च करते हैं । पर्यटन से होटल व्यवसाय, यातायात, गाईड़ आदि के साथ स्थानीय वस्तुओं की खरीद भी होती है इससे रोजगार में काफी वृद्धि होती है और स्थानीय अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि होती है। यह पर्यटन व्यवसाय से आय का एक पहलू है।

दूसरी और आधारभूत ढांचे के रूप में होटल, विश्राम स्थल, ट्यूरिस्ट सेण्टर बड़ी संख्या में निर्मित किए जाते हैं। सड़कों व पर्यटन स्थलों के विकास के लिए समुचित उपाय किए जाते है और पर्यटकों की आवश्यकतानुसार सुख सुविधाएं जुटाने पर तीव्र गति से विनियोजन हो रहा है। पर्यटक क्षेत्रों के परिवेश का समन्वित विकास किया जाता है, प्राचीन धरोहरों को संरक्षण मिलता है और विभिन्न व्यवसाय तीव्र गति से पनपने लगते हैं। सरकारी प्रयासों के साथ साथ स्थानीय लोग भी अपने पर्यटक स्थलों को विकसित व व्यवस्थित करने में सापेक्ष योगदान देते हैं।

पर्यटक स्थल अपने भीतर विशिष्टताएं संजाए होता है जिसके कारण पर्यटक वहां आने के लिए आकर्षित होते हैं। पर्यटक स्थल अपने आप में एक सापेक्ष केन्द्र होता है जहां मुख्य पर्यटन स्थल के साथ जुड़ाव होने के कारण पूरा गांव, कस्बा या शहर एक विशिष्ट स्थान का दर्जा प्राप्त होता है जिससे आकर्षित होकर पर्यटक वहां आते हैं। मुख्य पर्यटन स्थल के साथ पर्यटक वहां के

परिवेश पर भी ध्यान केन्द्रित करता है और आकर्षक वस्तुओं में रुचि लेता है ये वस्तुए वहां की कला व संस्कृति, हस्तकला, कुटीर उद्योग, आदि से संबंधित हो सकती है। इस दृष्टि से जो भी वस्तु उसे आकर्षित करती है उसके बारे में उसका रुचि लेना स्वाभाविक है और यहीं से पर्यटक स्थानीय परिवेश के लिए लाभदायक सिद्ध होता है।

3. अनुसंधान का उद्देश्य : मरुक्षेत्र विभिन्न कारणों से देश में विशिष्ट स्थान रखता है। विश्व के मरूस्थलों में यह थार मरुस्थल सबसे धनी आबादी वाला क्षेत्र हैं यहां के निवासी अपनी प्राचीन धरोहर, संस्कृति, परम्परा के संजोए हुए हैं।

राजस्थान के 61 प्रतिशत क्षेत्र में फैले इस मरुस्थल में हरियाली, टीले शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्र हैं जो विभिन्न कारणों से अपने आप में विशिष्ट स्वरूप और स्थिति रखते हैं। पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र काफी रोचक है। यहां आकर लोगों की विभिन्न प्रकार की भौगोलिक, पारिस्थितिक व भौतिक परिस्थितियों का सामना होता है जो अपने आप में अजूबे से कम नहीं है। वर्तमान अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

(1) राजस्थान के मरुप्रदेश के पर्यटन विकास की समस्याएं एवं सम्भावनाओं का अध्ययन करके यह ज्ञात करना है कि इस क्षेत्र के विभिन्न भागों का पर्यटन विकास के लिए किस प्रकार वर्गीकरण किया जावे जिससे विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आने वाले पर्यटकों को पूर्ण सन्तोषजनक वातावरण मिल सके।
(2) मरुक्षेत्र के पर्यावरण और पारिस्थितिकी का अध्ययन ओर पर्यटकों से इस पर पड़ने वाले प्रभाओं का अध्ययन कर ऐसे उपाय करना जिससे पर्यावरण व पारिस्थितिकी सन्तुलन बना रहे और सतत् विकसित हो।
(3) मरुक्षेत्र के वन क्षेत्र के वन्य जीव तथा आरक्षित, संरक्षित व अवर्गीकृत क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से विकसित कर इसे आकर्षक स्वरूप प्रदान करना तथा वर्तमान पर्यावरण व पारिस्थितिकी के वन क्षेत्र विकसित करने के सुझाव देना जो व्यावहारिक हो और जिन्हे कार्य रूप में परिणित किया जा सके।
(4) मरुक्षेत्र के जैव विविधता का पर्यटन विकास के उद्देश्य से अध्ययन करना और इस क्षेत्र में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए परिणाममूलक सुझाव देना।
(5) मरुक्षेत्र की प्राचीन धरोहर, संस्कृति और सभ्यता को वर्तमान स्वरूप में विकसित करने की संभावनाओं का अध्ययन करना और पर्यटन विकास की संभावनाओं का अध्ययन करना।
(6) पर्यटन क्षेत्र में आधुनिक दृष्टिकोण अपनाते हुए इस क्षेत्र की समस्याओं का अध्ययन करना और पर्यटन संभावनाओं के विकास के लिए सारगर्भित उपाय सुझाना।
(7) मरुक्षेत्र में हुए विकास को आधार मानते हुए पर्यटन उद्योग को नवीन स्वरूप देने की संभावनाओं का अध्ययन करना और भविष्य में विकास की दिशा निर्धारित करने के लिए ठोस सुझाव देना।

वर्तमान अध्ययन को उपरोक्त उद्देश्यों के परिपेक्ष्य में अध्ययन करते हुए यह शोध प्रबन्ध तैयार की गई है जिसने पर्यटन विकास के बहुमुखी स्वरूप का अध्ययन करते हुए समस्त पहलुओं पर विचार किया गया है।

4. परिकल्पना : राजस्थान का मरुक्षेत्र विचित्र परिस्थितियों का संयोजन है। यहां भौगोलिक परिस्थितिया अत्यन्त विषम है और यह क्षेत्र पानी संकट से गंभीर रूप से ग्रसित है। यहां की आर्थिक विकास की गति धीमी है और मरुस्थलीकरण की समस्या विकास में बाधा है। पर्यावरण व पारिस्थितिकी का सन्तुलन बिगड़ रहा है तथा भयंकर सूखे की सम्भाव्यता के कारण विकास अवरुद्ध हो रहा है। ऐसे भूभाग में पर्यटन विकसित करना एक दुरूह कार्य है। आज के युग में पर्यटन एक विशाल उद्योग बन गया है जिससे आर्थिक विकास की संभावनाएं बढ़ती है । अतः दुनिया भर के देश पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विविध प्रयास करते है। मरु प्रदेश में पर्यटन विकास की समस्याओं व संभावनाओं के परिपेक्ष्य में निम्नलिखित परिकल्पनाओं की दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान शोधकार्य किया गया है :–

(1) मरुक्षेत्र के पर्यटन स्थलों को यदि पर्यटन उपयोग के रूप में संमन्वित स्वरूप देकर विकसित किया जावे तो यह इस क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक स्तर को सुधारने में रहयोग प्रदान करेगा साथ ही अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।
(2) पर्यावरण पर आधारित पर्यटन इस मरुस्थलीय और अर्द्ध मरुस्थलीय भूभाग की आर्थिक उन्नति का एक प्रमुख साधन बन सकता है।
(3) मरुप्रदेश के आकर्षक स्थलों को रोचक स्वरूप प्रदान करते हुए पर्यटन विकास के अभिनव प्रयोग के रूप में इसे विकसित किया जा सकता है।
(4) मरुप्रदेश मे ऐसे अजूबे हैं जिन्हे समन्वित प्रचार प्रसार द्वारा दुनिया के समक्ष पर्यटन विकास की संभावनाओं से जोड़कर विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया जा सकता है।
(5) मरुप्रदेश के विभिन्न जोन बनाकर मरुक्षेत्र का समन्वित विकास कर दुनिया के समक्ष मरुस्थलीय क्षेत्रों के विकास का एक मोड्ल प्रस्तुत किया जा सकता हैं
(6) पर्यटकों के रुचि के अनुसार यहां के क्षेत्रों को चिन्हित कर एक आकर्षक स्वरूप प्रदान किया जा सकता है जिसके द्वारा यहां की विविधताओं को पुनर्जीवित किया जाकर दुनिया के नक्शे में मरुप्रदेश का विशिष्ट स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है जो इसके समन्वित विकास में सहयोगी हो सके।

उपरोक्त परिकल्पनाओं को इस अध्ययन के माध्यम से आंकलित किया गया है तथा इस क्षेत्र के बारे में उपरोक्त परिकल्पनाओं का मूल्यांकन कर इनकी व्यावहारिकता और उपादेयता को परखा गया हे। इस अध्ययन में उपरोक्त सभी तथ्यों की क्रियान्वयन करने के समन्वित दृष्टिकोण से आकंलित किया गया है।

5. शोध विधि : राजस्थान के मरुप्रदेश में पर्यटन विकास की समस्याएं एवं संभावनाएं वर्तमान शोध प्रबंध का विषय है जो बहुआयामी अध्ययन हे। प्रस्तुत शोध प्रबंध में भूगोल, भू–भौतिकी, विकास, आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियां, ऐतिहासिक संरक्षित व असंरक्षित धरोहरों, कला व संस्कृति का वृहद व सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए विश्वसनीय स्त्रोतों से आंकड़ों का एकत्रीकरण व संकलन दो प्रकार से किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत वाली सूचना विभिन्न स्थानों पर जाकर संबंधित क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया है और पर्यटकों के साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से वहां के स्थानीय लोगों पर पड़ने वाले पर्यावरणीय व पारिस्थितिकी प्रभावों का अध्ययन किया गया हैं । इन क्षेत्रों के निवासियों से पर्यटन उद्योग से होने वाले लाभ व अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन परिलाभों पर विस्तृत बातचीत कर सूचनाओं का संकलन व विश्लेषण किया गया है।

इस अध्ययन के लिए राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग और राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अधिकारियों से संपर्क कर पर्यटन की नीति व प्रयासों के बारे में जानकारी एकत्रित कर उनका यथोचित विश्लेषण किया गया हे। राजस्थान सरकार के समस्त संबंधित विभागों के माध्यम से मरुक्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों के बारे में सूचना एकत्रित कर उसका अध्ययन व विश्लेषण किया गया है। राजस्थान परिवहन विकास निगम द्वारा तथा रेल्वे प्रशासन द्वारा यातायात तथा भारत संचार निगम लिमिटेड व सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के माध्यम से संचार व्यवस्था की जानकारी एकत्रित कर उसके प्रभावी उपयोग पर विचार किया गया है।

मरुक्षेत्र के 12 जिलों के अधिकारियों से संपर्क कर पर्यटन विकास की समस्याओं व संभावनाओं तथा प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है। भारतीय जनगणना विभाग के राजस्थान संभाग कार्यालय से वर्ष 2001 जनगणना की सूचना एकत्रित कर उसका परीक्षण किया गया है। यह अध्ययन करने के दौरान इस संबंध में प्रकाशित सामग्री का अध्ययन किया गया है तथा संग्रहीत सूचना को विभिन्न क्षेत्रों में जाकर अनकी वर्तमान स्थिति व उपादेयना का अध्ययन किया गया है।

इस अध्ययन को तैयार करने के लिए संग्रहीत सूचनाओं का विश्लेषण करते हुए उन्हें मानचित्र, सारिणियों के माध्यम में प्रस्तुत किया गया है जिससे अध्ययन के आधार व पृष्ठभूमि की विश्वसनीयता बनी रहे । प्रस्तुत अध्ययन एक मौलिक प्रयास है तथा इस क्षेत्र के समन्वित स्वरूप को प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया गया है अध्ययन क्षेत्र का बड़ा भाग अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से जुड़ा होने के कारण इन क्षेत्रों में व्यक्तिशः जाकर समस्याओं का आंकलन किया गया है।

मरु पर्यटन के भौगोलिक आधार

भारत का रेगिस्तान थार मरुस्थल के नाम से जाना जाता है जो विश्व के छः मरुस्थलों में एक विशिष्ट भू भाग है। यह क्षेत्र विश्व के मरुस्थलीय क्षेत्रों में सबसे अधिक आबाद क्षेत्र है और इसीलिए दुनिया का एक आकर्षण केन्द्र है। राजस्थान का मरुप्रदेश प्रागैतिहासिक काल से एक समृद्ध संस्कृति का केन्द्र रहा है। प्रागैसिहासिक काल में प्रदेश एक हरा भरा, नदी जल के समृद्ध आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न प्रदेश था जो समय चक्र के परिवर्तन से एक मरुस्थलीय क्षेत्र में परिवर्तित हो गया है। सिन्धु घाटी की सभ्यता काल इस प्रदेश के समृद्ध स्वरूप को प्रतिबिम्बित करती हैं मध्यकाल से विदेशी व्यापार इसी मार्ग से होता था तथा ऊंट यातायात का एक मात्र साधन था।

मरुप्रदेश की भू भौतिकी संरचना का एक विशिष्ट स्वरूप हैं यहां वर्षा बहुत कम होती है और भूमिगत जल स्त्रोत अत्यधिक सीमित है। मरुस्थलीय पर्यावरण व पारिस्थितिकी भी अन्य भूभागों से सर्वधा भिन्न है यहां नमी अत्यल्न कम है और जैविक विज्ञान की दृष्टि से अपर्याप्त है। यह प्रदेश प्रायः रेतीले टीलों के नाम से जाना जाता है। विश्व में मानव सभ्यता के समरूप पूर्व पाषाण काल में मानव जीवन का इस क्षेत्र में विद्यमान होने के अनेक प्रमाण हैं।

राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से देश का सबसे बड़ा प्रदेश है तथा राज्य का मरुस्थलीय क्षेत्र काफी वृहद है। प्रशासनिक दृष्टि से 32 जिलों मे से 12 जिले मरु प्रदेश में आते हैं जो भौगोलिक दृष्टि से 2,08,751 वर्ग किलोमीटर है जो राजस्थान प्रदेश के कुल भूभाग का 61 प्रतिशत है। जिलेवार मरु क्षेत्र का विवरण सारिणी सं 1 में दर्शाया गया है।

सारिणी सं. 1 : मरु क्षेत्र का जिलेवार विवरण

क्र.सं.	जिला	क्षेत्र (वर्ग किमी)	प्रतिशत क्षेत्र			
			मरु	राज्य	शहर / कस्बे	गांव
1.	बाड़मेर	28387	13.66	8.29	2	1941
2.	बीकानेर	27244	13.05	7.96	3	778
3.	चुरु	16830	8.06	4.92	11	979
4.	गंगानगर	10932	5.24	3.19	9	3014
5.	हनुमानगढ़	9702	4.65	2.83	6	1905
6.	जालौर	10640	5.10	3.11	3	706
7.	जैसलमेर	38401	18.40	11.22	2	637
8.	झुंझनू	5928	2.84	1.73	11	859
9.	जोधपुर	22850	10.95	6.68	4	1063

10.	नागौर	17718	8.49	5.18	12	1500
11.	पाली	12387	5.93	3.62	11	949
12.	सीकर	7732	3.70	2.26	9	992
योग मरु क्षेत्र		208751	100.00	61.00	83	15323
राजस्थान		342239		100.00	222	41353

स्त्रोत : स्टेटिस्टिकरण एब्सट्रेक्ट, राजस्थान 2002, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान

उपरोक्त सारिणी में अंकित संरचना के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आता है कि राजस्थान का मरु क्षेत्र एक विस्तृत भूभाग हैं राज्य के 12 जिले जो मरु क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं उनका क्षेत्रफल 61 प्रतिशत है और शेष 20 जिलों का क्षेत्र मात्र 39 प्रतिशत है। परन्तु इस क्षेत्र में 37.39 प्रतिशत शहर व कस्बे है तथा 37.05 प्रतिशत गांव है। यह क्षेत्र पाकिस्तान की सीमा से जुड़ा हुआ है और गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर व बाड़मेर जिलों के क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से जुड़े हुए हैं जो 1070 किलोमीटर लम्बी है। इस कारण सीमा क्षेत्र में बहुत चौकसी रखनी होती हैं। वैसे सीमा पर तारबंदी कर दी गई है और सेना की गश्त व चौकिंया स्थापित है परन्तु भौगोलिक स्थितियों का लाभ उठाकर आतंककारी प्रदेश में प्रवेश कर जाते हैं। विगत 4 युद्धों में सीमा क्षेत्र के निवासियों की बहुत जन व धन हानि हुई है। सामान्य समय में लोग एक दूसरे क्षेत्र में आगे जाते है। क्योंकि विभाजन के पूर्व आपसी रिश्ते अभी भी कायम है। राजस्थान का प्रशासनिक विवरण जिसमें मरु भाग का जिलेवार विवरण अंकित है। (मानचित्र–2)

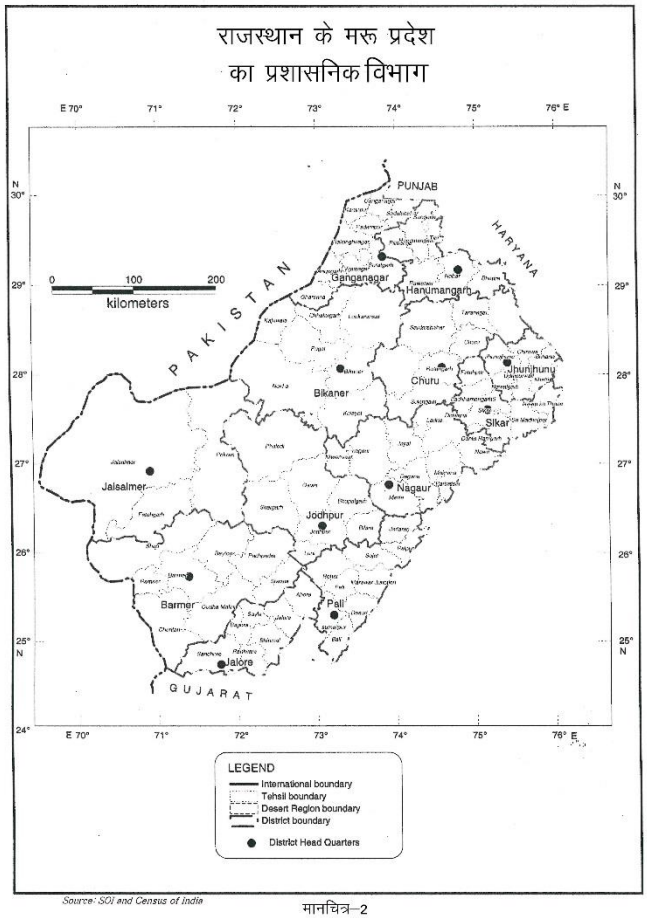

मानचित्र–2

6. भूगर्भीय संरचना : राजस्थान की भूगर्भीय संरचना एवं चट्टानों का प्रमुख लक्षण पूर्व केम्ब्रियन ;च्तम.बंउइतपंदद्ध चट्टानों के सुस्पष्ट अनुक्रमण में देखने को मिलता है जो नीचे की ओर आर्कीयन के आधार की ओर जाता हैं वह प्रक्रम बुन्देलखण्ड नाइस से प्रारंभ होता है जो कि पृथ्वी के धरातल प्रकट प्राचीनतम ग्रेनाइटस मे से एक हैं पूर्व भूगर्भवेत्ता इसे विन्ध्य प्रणाली के समस्तर एवं अपरिवर्तित अजीवाश्ममय अवसाद का मूल नाइस मानते हैं। बुन्देलखण्ड नाइस क्षरित सरित विषम विन्यासों ;न्दबवदवितउपजपमे) से विलग कुल सात समूह है जिनमें से मालानी बालकेनिक्स इस क्षेत्र में आते है। राजस्थान के उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चित दिशा में फैली अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम मोड़दार श्रेणियों में मानी जाती है। यह पर्वत श्रृंखला पेलियोजोइक काल में प्रायः समभूषित थी परन्तु बाद में मेसोजोइक काल में पुनरुत्थित हुई। इस उत्थापन का प्रभाव, वृहद् सीमा भ्रंश ;ळतमंज ठवनदकतल थ्नसजद्ध के सहारे जो उत्क्रम ;जीतनेजद्ध लगभग 480 किलोमीटर तक अनुरेखित किए गए हैं, असाधारण स्थानीय तीव्र मोड़ो एवं भ्रंशों में प्रकट होता है।

अरावली श्रेणी के पार तीनों सिस्टम जिनमें अरावली निर्मित है अर्थात अरावली, रायोलाज और दिल्ली के कायान्तरित की मात्रा में वृहद् विभिन्नताएं स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। अरावली सिस्टम और प्राक् अरावली समूह अर्थात् बेन्डेडनाइसी काम्पलेक्स और बुन्देल खण्ड नाइस, अरावली से प्राचीन हैं जो उनके ऊपर क्षरण असमानता के साथ आरोपित हैं। दोनों अरावली पूर्व समूहों के संगम बहुत गहराई पर जुदा हैं और दोनों में परस्पर संबंध प्रायः स्पष्ट नहीं है। फिर भी निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि बेन्हेड काम्प्लेक्स और बुन्देलखण्ड नाइस देश की प्राचीनतम चट्टाने हैं जिन पर अरावली और परावर्ती शैल समूह एवं संरचनाएं बनी है। मरु क्षेत्र का भूगर्भिक अनुक्रम, ठोस भूगर्भ रचना में अत्यन्त जटिल शेल रचना है।

अरावली समूह : अरावली समूह में मृष्मय शैलों ;तहपससंबमवने तवबोद्ध की बड़ी मोटाई है। इन शैल समूहों का कायान्तरण हुआ है और यह पूर्व से पश्चिम तक स्पष्ट रूप से अंकित है। पूर्व से पश्चिम तक स्पष्ट रूप से अंकित है। पूर्व में शैल ;ीमससेद्ध मिलता है पश्चिम की ओर अपस्लेट्स फाइलाइटस तथा गारनेट व मैग्नेटाइट के साथ उत्तम माइका शिष्ट में से गुजरते हैं। कुछ क्षेत्रों में अम्ल ग्रेनाइट के साथ परिवर्तन हुआ है जिसके परिणामस्वरूप मिश्रित नाइस बना है। सामान्यतया यह परिलक्षित होता है कि श्वेत क्वार्टज शिराओं के अतिरिक्त आग्नेय अन्तर्मेदन अरावलीज में विशिष्ट रूप से सामान्य नहीं है।

मलानी श्रेणी : विन्ध्यन का अधिकतम विकास अरावली के पूर्वी बाजू पर हुआ, जबकि पश्चिमी मरुस्थली प्रदेश में वह कम आकार में विखण्डित उद्गातों में हुआ। ये चट्टानें, जिन्हें इस समूह से अन्तर्सबंधित किया जा सकता है रायोलाइटिक लावा समूह से बनी है जिनमें फैल्साइट व ऐसी ही ज्वाला खण्डमय पदार्थ ;चलतवबसेंजपब उंजमतपंसद्ध सम्मिलित है। ये सब विषम विन्यसित ;नदबवउवितउंइसलद्ध रूप से अरावली शिष्ट पर टिकी हुई है। इन सभी आग्नेय जमावों को जोधपुर के समीप एक स्थान के नाम पर मलानी श्रेणी कहा गया है। मरु क्षेत्र में वे लगभग 240 किलोमीटर लम्बे व 190 किलोमीटर चौड़े एक क्षेत्र को अधिकृत करते हैं। इस क्षेत्र में ग्रेनाइट के वृत्त स्कन्ध ;ठवेमे व िळतंदपजमेद्ध, जिन्होने विस्फोटों के मैग्नीय पदार्थ की पूर्ति की थी, अनाच्छाइन के कारण प्रकट हो गए है। यहां दो प्रकार के ग्रेनाइट मिलते हैं जालौर ग्रेनाइट (हार्न ब्लैण्डी – बायोटाइट ग्रेनाइट) और सिवाना ग्रेनाइट (हार्न ब्लैण्डी ग्रेनाइट)। ये ग्रेनाइट वृत्त स्कन्ध सतह से लगभग 920 मीटर की ऊंचाई तक उठते है और मलानी एवं अरावली शिष्ट दोनों के अन्तर्भेदी स्वरूप को दर्शाते हैं। अरावली पर्वतों का उत्थान मलानी युग की ज्वाला मुखी सक्रियता के कारण नहींय बल्कि उसके बाद में हुआ। मलानी ग्रेनाइट और पोरफाइरीज ;च्वतचीलतपमेद्ध ठोस ;ब्वदेवसपकंजमद्ध एरिनपुरा ग्रेनाइट को काटते हैं। मालानी श्रेणी भी पुराणा ;च्नतंदेंद्ध में सम्मिलित की जाती है।

विन्ध्यन श्रेणी : विन्ध्यन युग के उत्कर्ष से राजपूताना समभिनति में आर्कीयन और पुराणा तलछटी जमाव के अत्यन्त जटिल और अनोखी श्रेणी का अन्त हो गया। विन्ध्यन समूह बालुका पत्थर, शेल एवं चूना पत्थर की एक वृहद तलछटी का निर्माण करता है जिसकी मोटाई लगभग 12,844 मीटर है। भूवैज्ञानिक दृष्टि से राजस्थान ने भारत के अन्य किसी भाग की अपेक्षा तीव्र भू–हलचलें अनुभव की हैं। विन्ध्यन चट्टानें मुख्यतः दिल्ली समभिनति के दोनों पार्श्वों पर दो अलग–अलग बेसिन में जमा हुई थीं पश्चिमी राजस्थान के उद्गत दो अर्धगोलाकार चाप बनते हैं और जोधपुर नगर के समीप मिलते हैं। वे जलोढ़ से अधिक अवरोधित हैं और ऊपर विन्ध्यन चट्टानों के प्रकीण–टुकड़ों से बने हैं जिनकी मोटाई लगभग 92 मीटर है। यह रचना मलानी रायोलाइट्स अथवा अरावली स्लेट्स पर जमा हैं

ऐसा अनुमान है कि संभवतः पश्चिमी राजस्थान में अपर विन्ध्यन के जमाव के समय शुष्क दशाएं विद्यमान थी। विन्ध्यन श्रेणी पश्चिम में अधिक्षेपों ;वअमतजीतनेजेद्ध से प्रभावति हुए है, जिनके परिणाम स्वरूप वृहद सीमा भ्रंश ;ळतमंज ठवनदकंतल थ्नसजद्ध का निर्माण हुआ है। इसकी लम्बाई लगभग 805 किलोमीटर है और विक्षेप ;जीतवूद्ध लगभग 1530 मीटर है। इस भ्रंश के फलस्वरूप ऊपर विन्ध्यन अत्यधिक वलित अरावली के सम्मुख आ गया है।

रायलो श्रेणी : यह श्रेणी निम्नतर भाग में अरावली के मध्य पाई जाती है और दिल्ली समूह द्वारा आच्छादित है दोनों ही समूहों के संगम कटाव विषम विन्यास द्वारा अंकित है। रायलो, दिल्ली समूह से अलग कर दिए गए हैं तथा अलग श्रेणी में समूहित कर दिए गए हैं। सामान्यतया लगभग 612 मीटर की औसत मोटाई का श्वेत एवं स्फटिक चूना शेल इस श्रेणी की मुख्य चट्टान बनाता है। चूना पत्थर जमाओं के बल पर कांग्लोमरेट्स और बलुआ पत्थर एवं क्वार्टजाइट के जमाव पाए जाते हैं और चूना पत्थर, अरावली बुन्देलखण्ड नाइस अथवा पट्टित बाइसी सम्मिश्रण पर प्रत्यक्षतः आश्रित हैं। यह श्रेणी वृहद् रूप से जोधपुर आदि विलग क्षेत्रों में पाई जाती है। राइलो जटिल रूप से वलित अभिमति से उपगत है।

जुरैसिक ;श्रनतेंपबद्ध रू राजस्थान का अत्यन्त प्राचीन आकर्षक एवं जटिल भूगर्भिक इतिहास, विन्ध्यन कल्य के उत्कर्ष के पश्चात समाप्त हो गया है। विशेषकर विन्ध्यन युग के अन्त व जुरेसिक युग के प्रारंभ के बीच, कोई तलछटी जमाव नहीं हुआ। इस युग का भूगर्भिक इतिहास प्रायः लुप्त है। ऐसा माना जाता है कि गोंडवाना महाकल्य के प्रारंभ में, साल्ट रेंज हिमानी जमावों की बीच मलानी रायोलाइट्स के गोलाश्मों की उपस्थिति, हिमानियों के अस्तित्व का आभास देती हैं। पश्चिमी राजस्थान का मरुक्षेत्र किसी समय समुद्र से आवृत था जो जुरेसिक युग में दक्षिण पश्चिम दिशा में फैला हुआ था।

चट्टानों के जमाव से संहत, पांडु, हल्के भूरे या पीले चूना पत्थर धूसर तथा भूरे बलुआ–पत्थर और शिष्ट की तहे हेर फेर के साथ मिलती हैं। मरु क्षेत्र में चट्टानें अधिकतर वातोढ़ बालू से ढकी हुई है, परन्तु बीकानेर व जैसलमेर सहित कुछ स्थानों पर वे धरातल पर दिखाई देती है। इन चट्टानों को कच्छ की चट्टानों से भी अन्तर्सवंधित पाया गया और उनकी रचना उसी स्वरूप की प्रतीत हुई है। जैसलमेर में निम्नलिखित प्रकार की चट्टानें पाई जाती हैं :–

अबूर संस्तर	चूना पत्थर एवं शेल
परिहार बलुआ पत्थर	फैल्स पाथिक बलुआ पत्थर
बादासर संस्तर	लौहमय बलुआ पत्थर

जैसलमेर बलुआ पत्थर एवं चूना पत्थर जीवाश्मय व बलुआ पत्थर व चूना पत्थर

इस प्रकार जैसलमेर चूना पत्थर के ऊपर चट्टानों की ऐसी श्रेणी स्थापित है, जिसकी तीन स्पष्ट निरन्तर अवस्थाएं बतलाई जा सकती है – अबूर संस्तर, परिहार बलुआ पत्थर और बादासर संस्तर।

टर्शियरी समूह ;ज्मतजपंतल˝लेजमउद्ध सम्पूर्ण भारत, राजस्थान व मरुक्षेत्र के धरातलीय स्वरूपों के निर्माण में टशियिरी समूह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इयोसीन के मध्य में भू–हलचलों का एक ऐसा कल्प आरम्भ हुआ जिसने देश के भूगोल के स्वरूप को प्रायः बदल दिया है। राजस्थान में ऐसी अवस्थिति स्पष्ट रूप से दृष्टि गोचर होती है। मरु क्षेत्र में, विशेषकर अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में, टर्शियरी समूह की चद्दानें बीकानेर, जैसलमेर व जोधपुर की जुरेसिक तथा क्रिटेशियस चट्टानों के साथ संबंद्ध है। इस समूह में मरु क्षेत्र का वृहद् भाग समुद्र से आवृत था, जिसके परिणामस्वरूप श्वेत, पीला, पाण्डु, जीवाश्ममय चुना पत्थर की मोटी परतों का जमाव हुआ। लाकी श्रेणी के सहसम्बन्धित इयोसीन संस्तरें बीकानेर तथा जैसलमेर में अवस्थित हैं। जैसलमेर के उत्तर में जुरैसिक न्यूमूलाइटिक चूना पत्थर ;छनउउनसपजम स्पउमेजवदमद्ध से अतिव्याप्त ;व्अमतसंचचमकद्धए जो कि पूर्व की ओर क्रमशः पतला होता जाता है और कुछ स्थानों पर लेटेराइट से ढका हुआ है। इस उद्गत को बीकानेर के मुख्य उद्भासनों से सम्बन्धित किया जा सकता है तथा लगभग 650 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को आच्छादित करता है।

प्लिसटोसीन समूह ;च्सपमेजवबमदम˝लेजमउद्ध रू राजस्थान का मरुस्थलीय क्षेत्र बातोढ़ जमाओं ;ेबवसपंद ेबबनउनसंजपवदेद्ध का होने के कारण उसी युग में बना जबकि गंगा–सिन्ध जलोढ़ ;प्दकवत्रळमदहमजपब ेससनअपनउद्ध का निर्माण हुआ। यह मरुस्थल अरावली के पश्चिम से सिन्धु के कछार तक फैला हुआ है। मरुस्थलीय बालू की बंजर भूमि समतल नहीं है, वरन् अनेक स्थानों पर अगणित शैलीय रचनाएं धरातल पर दिखाई देती है।

धरातलीय स्वरूप : मरुक्षेत्र की स्थलाकृति बहुत पुरानी है जो अनाच्छादन तथा अपक्षरण की अनेक वर्षों की प्रक्रिया से बनी है। वर्तमान भौतिक आकृतिक तत्व और उपवाह प्रणाली शैल समूहों और संरचना अधिक प्रभावित और निश्चित हुई है। वर्तमान भू आकार भूतकालीन नदी के अपरदन चक्र और हाल के मरु अपरदन चक्र का परिणाम हैं संरचना की दृष्टि से मरु क्षेत्र को दो प्रमुख भागों में विभक्त किया जा सकता है। इन भागों की सीमा रेखा अरावली श्रेणी के पश्चिमी किनारे से जाती है, जो उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की और फैली है। संरचना की दृष्टि से उत्तर पश्चिमी भाग की इसी खण्ड का एक विस्तार है जबकि सतही स्वरूप विभिन्न स्थानों पर चट्टानों का संकेत देते है और धरातल का एक बड़ा भाग चल और अचल बालू के स्तूपों से ढका हुआ है।

मरुस्थली : यह क्षेत्र थार के मरुस्थल नाम से जाना जाता हैं क्योंकि यहां पूर्णतया मरुस्थलीय परिस्थितियां विद्यमान हैं। इस क्षेत्र में बीकानेर और जैसलमेर जिले, चुरु, जोधपुर, बाड़मेर तथा नागौर जिलों का अधिकांश भाग सम्मिलित है। यह भाग धूलभरी आंधियों की समस्या से ग्रसित रेत के टीबों से ढका हुआ है। यहां गरमी व सरदी का तापमान अत्यधिक चरम सीमा पर रहता हैं। इस शुष्क क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा बहुत कम है। जैसलमेर की औसत वर्षा 185 मिमी, बाड़मेर 266 मिमी, बीकानेर 243 मिमी, चुरु 354 मिमी, जोधपुर 314 मिमी व नागौर 312 मिमी है। कम वर्षा के कारण धरातल पर वनस्पति नगण्य दृष्टिगोचर होती है तापमान में आर्द्रता कम है और बरसात के दिनों को छोड़कर पूरे वर्षभर शुष्क तापमान रहता है। यहां के निवासी मूलतया कृषि और पशुपालन पर आधारित हैं। भूमिगत जल के अतिरिक्त अन्य कोई जलस्त्रोत नही है कम वर्षा व निरन्तर जल दोहन के कारण भूमिगत जल स्तर विभिन्न क्षेत्रों में 100 मीटर से 150 मीटर की गहराई पर हैं। इस क्षेत्र में पेयजल की समस्या गंभीर है और गरमी के मौसम में प्रायः टैंकर से पानी भी पहुंचाना पड़ता है। अकाल के दौरान पेयजल समस्या भयावह हो जाती है।

अर्द्ध मरुस्थलीय क्षेत्र या वागर क्षेत्र : अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी ढाल से मरुस्थलीय क्षेत्र का विस्तार है। इस क्षेत्र के उत्तर गंगानगर व हनुमानगढ़ का नहरी तथा घग्घर नदी का क्षेत्र है। उत्तर पूर्व में शेखावटी क्षेत्र है जिसमें चुरु का पूर्वी भाग, झुंझनू व सीकर जिले स्थित हैं। मध्यवर्ती भाग में नागौर जिला स्थित है। इस क्षेत्र के दक्षिणी भाग में लूनी नदी अपनी सहायक नदियों के साथ फैली हुई है, जहां जोधपुर व बाड़मेर के अधिकांश भाग, पाली, जालौर व सिरोही जिले का पश्चिमी भाग स्थित है।

मरुस्थली क्षेत्र की तुलना में यहां अधिक वर्षा होती है तथा भूमिगत जल का स्तर भी तुलनात्मक रूप से कम गहरा हैं। लूनी और उसकी सहायक नदियों पर कई लघु सिंचाइ योजनाएं निर्मित की गई है जिससे कुछ सिंचित क्षेत्र भी विकसित हुआ है। इस क्षेत्र में बाजरा, मूंग, मोठ के अतिरिक्त कपास, गन्ना, चना, चुकन्दर व तिलहन की पैदावार की जाती हैं यहां के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि, पशुपालन व लघु उद्योग है। दुग्ध व्यवसाय के आधुनिकीकरण, भेड़ व ऊन व्यवसाय के विकास, सिंचाई के साधनों का विकास, विपणन सुविधाओं का विस्तार तथा लघु और कुटीर उद्योगों के विकास होने से निवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

पश्चिमी बालुका मैदान ॅ;मेजमतद˝दकल च्संपदेद्ध रू पश्चिमी मैदान अरावली पहाड़ियों के पश्चिम और उत्तर पश्चिम एक वृहद् भाग को घेरे हुए हैं। पश्चिमी मैदान की पूर्वी सीमा अंशतः जलवायुपूरक है। पश्चिमी सीमा भारत और पाकिस्तान के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सीमा द्वारा बनी है। उत्तरी सीमा पंजाब और दक्षिण पश्चिम में गुजरात की सीमा है। साधारणतया यह क्षेत्र बालुका मैदान कहलाता है परन्तु पश्चिमी राजस्थान के संरचनात्मक भूविज्ञान का धरातलीय स्थलाकृति पर बहुत कम प्रभाव है, क्योंकि धरातल का वृहत्तर भाग पाकिस्तान की सीमा तक बाहर के विशाल फैलाव से ढका हुआ है जो यदाकदा चट्टानी बहिसरणों से भरे पड़े हैं। उत्तर पश्चिमी क्षेत्र बालुकामय, जलाभावग्रस्त और बंजर हैं।

पश्चिम में मरुस्थल, उत्तर–पूर्व से दक्षिण पश्चिमी पेटियों के अनेक प्राकृतिक प्रदेशों में उप विभाजित किया गया है। ऐसे विभाजन का नियंत्रक अरावली पहाड़ियां और बाड़मेंर–जैसलमेर–बीकानेर क्षेत्र का चट्टानी भू भाग है सबसे पहले पश्चिम की पेटी वृहत् मरुस्थल बालुका स्तूपों से आवृत्त है और वृहद रन से पाकिस्तान की सीमा के सहारे पंजाब तक फैली है। इस पेटी के बाद

बाड़मेर–जैसलमेर–बीकानेर का चट्टानी प्रदेश है जो बालू मुक्त है और यहां एक बड़ी संख्या में शैल समूह है जो जुरेसिक से इयोसीन समुद्री रचना तक के हैं। इस प्रदेश में तलघट वाली बनावट के कारण भूमि के अन्दर जल भी पाया जाता है। इस पेटी के और पूर्व भाग में लघु मरुस्थल है जो वृहद कच्छ रन से प्रारंभ होकर बीकानेर के उत्तर में वृहद् मरुस्थल में मिलता है। इसके पश्चात अर्द्ध शुष्क प्रदेश स्थित है जहां लूनी नही की अपवात प्रणाली अत्यन्त प्रमुख लक्षण है और उत्तर में डीडवाना सांभर व अन्य खारी झीले हैं।

सम्पूर्ण पश्चिमी राजस्थान बालू से ढका नहीं है किन्तु बालुका स्तूपों की मात्रा एवं विस्तार इस क्षेत्र की आर्थिक क्रिया को बहुत अधिक प्रभावित करता है। राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 63 प्रतिशत विभिन्न मात्रा में उड़ी हुई बालू से ढका हुआ है। बालू के बड़े स्तूप मरुस्थल के पश्चिमी भाग में बाड़मेर, जैसलमेर और बीकानेर जिलों में स्थित हैं। बालु का स्तूपों का विस्तार और प्रभावित क्षेत्र सारिणी सं. 2 में दर्शाया गया है :

सारिणी सं. 2 : मरुक्षेत्र में बालुका स्तूपों की मात्रा एवं विस्तार

क्र.सं.	स्तूपों का विस्तार	क्षेत्र वर्ग किलोमीटर	कुल क्षेत्र का प्रतिशत
1.	कोई स्तूप नहीं	85,659.81	40.09
2.	क्षेत्र का 0 से 20 प्रतिशत प्रभावित	24,856.60	11.63
3.	क्षेत्र का 20 से 40 प्रतिशत प्रभावित	10,164.91	4.76
4.	क्षेत्र का 40 से 60 प्रतिशत प्रभावित	33,322.11	15.59
5.	क्षेत्र का 60 से 80 प्रतिशत प्रभावित	39,782.25	18.62
6.	क्षेत्र का 80 से 100 प्रतिशत प्रभावित	19,902.85	9.31
	योग	213688.53	100.00

स्त्रोत – रेहजा तथा सेन, 1964

पश्चिमी बालुका मैदान को दो भागों में उप विभाजित किया गया है। प्रथम उपविभाजित भाग बालू शुष्क मैदान (मरुस्थली) है और द्वितीय उपविभाजित भाग है अर्द्धशुष्क संक्रमणीय मैदान जो राजस्थान वागर क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। द्वितीय उपविभाजित भाग को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है जो (अ) लूनी बेसिन या गोदासर क्षेत्र, (ब) अन्तर्स्थलीय प्रवाह का मैदान अर्थात शेखावाटी क्षेत्र और (स) घग्घर मैदान का क्षेत्र हैं। बालूमय शुष्क मैदानों और अर्ध शुष्क मैदानों के विभाजन का मुख्य आधार जलवायुपरक है जिसे 250 मिमी वर्षा क्षेत्र से कम और अधिक के आधार पर उपविभाजित किया है।

1 **बालूमय शुष्क मैदान (मरुस्थली)** ̈;दक ।तपक च्संपदेऋडंतने जैंसपद्ध रू यह क्षेत्र मारवाड़ मैदान का अधिकतर भाग घेरे हुए है और इसमें बीकानेर, जैसलमेर, चुरु, पश्चिमी नागौर का कुछ भाग, बाड़मेर का दो तिहाई भाग और जोधपुर जिला सम्मिलित है। इसके आगे पश्चिम में बालूमय और शुष्क मरुस्थल को विशाल थार मरुस्थल के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसका कुछ भाग भारतीय सीमा से आगे पाकिस्तान में वहावलपुर, खेरपुर के कुछ भागों थार और परकार जिलों में फैला हुआ है। इसमें वालू का वृहद फैलाव है और शैल दृश्यांश भी सामान्य रूप से मिलते है। मुख्यतः अरावली नाइस, शिष्ट, मलानी ग्रेनाइट और विन्ध्यन के उद्ग्रत थार क्षेत्र में अभिव्यक्त है। उत्तर पश्चिम में जुरैसिक तथा इयोसीन चद्दानों के विस्तृत तथा कुछ उभरे हुए क्षेत्र मुख्यतया चूना पत्थर जेसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, चुरु, गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में पाये जाते हैं। बालूमय धरातल से प्राचीन चट्टानों का उभरना इस तथ्य का पुष्टिकरण करता है कि थार पठारीय खण्ड के पश्चिमवर्तीय विस्तार का एक भाग है।

अपरदन स्थलाकृति बाड़मेर, जालौर, जैसलमेर व कुछ अन्य क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है, जहां शैल समूह सतह पर भी दिखाई देते हैं। ऐसे क्षेत्रों में वायु द्वारा चिकनाई गई सतहों वाले वृत्तस्कन्धों एवं कूटों के रूप में एक विशिष्ट प्रकार की क्षरण स्थलावृत्ति मिलती हे। आबू इदर प्रदेश में गुफाओं एवं गोलाकार गर्तों का निर्माण दृष्टि गोचर होता हे। ये गर्त वायु द्वारा बहाए गए बालू कणों की अपक्षरण क्रिया अथवा नदी कंकड़ों से निर्मित हो सकते हैं। जलघिद् प्रायः पर्वतीय सीमाओं के किनारे बनते हैं और पानी के लुप्त होने के पश्चात् दीवारों के सहारे मिलते हैं। सम्पूर्ण उप पर्वतीय क्षेत्र के सहारे, जालोढ़ शैल, मलवा और टैलस ;ज्ंसनेद्ध की अवबालिकाएं, जालोढ़ पंखे एवं जलोसीडियां भी मिलती हैं। ये सभी अपरदन स्वरूप स्पष्ट करते है कि उप–पर्वतीय क्षेत्र की निम्नीकरण प्रक्रिया जारी है।

पश्चिमी राजस्थान में स्तूपों का निर्माण एक बहुत ही लाक्षणिक भू–आवृतिक स्वरूप हैं, उनकी आकृति, आकार वायु दिशा एवं वानस्पतिक पदार्थ के आधार, पर तीन प्रकार के स्तूप मिलते हैं –

;पद्ध अनुदैर्ध्य टीबा, ;पपद्ध बरखान टीबा और ;पपपद्ध अनुप्रस्थ टीबां/अनुदैर्ध्य टीबा प्रचलित वायु के समानान्तर उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम भाग में है तथा ऐसा टीबा मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी और दक्षिणी भाग में भी है। ऐसे टीबों में लम्बाकार धुरी बायु दिशा के समानान्तर होती है। अन्य प्रकार का बालू जमा बरखान के रूप में हाता है जिसमें अवतल पार्श्व अंतरंग में वायु की दिशा के सम्मुख होता है। अनुप्रस्थ टीला वायु दिशा के आड़े रूप में बनते हैं और मैदान के पूर्वी और उत्तरी भाग में सामान्यतया पाए जाते हैं। ऐसे टीबों की लम्बाकार धुरी वायु दिशा के समकोण में होती है।

वायु मुख पार्श्व लम्बा एवं कम ढालू होता है जबकि वायु–विमुख पार्श्व तीव्र तथा अधिक ढालू होता है ओल्डहम ;1893द्ध ने स्पष्ट किया है कि अनुदैर्ध्य टीबा तीव्र वायु वाले स्थानों पर मिलते हैं। अनुप्रस्थ टीबे अधिकांशतः यू–आकार ;न्ेंीचमकद्ध के होते है और मूल यू आकार टीबें का अवतल पार्श्व वायु के सन्मुख होता है। ये टीबे बरखान से भिन्न है जिनके अवतल पार्श्व वायु–विमुख दिशा में होते हैं। प्रायः ऐसा देखा गया है कि ऐसे यू आकार के टीबे अर्द्ध शुष्क दशाओं में निर्मित होते हैं जब वे वनस्पति की बाढ़ से स्थिर हो

जाते हैं। ऐसा भी पाया गया है कि अनुप्रस्थ टीबों के वायु–विमुख पार्श्व पर बड़े–बड़े वृक्ष उगते हैं जो यह विश्लेषित करते हैं कि स्तूप काफी समय से स्थिर हो गए हैं।

2. अर्द्ध–शुष्क संक्रमणीय मैदान–राजस्थान बागर : अर्द्ध–शुष्क मैदान उत्तर–पूर्व से दक्षिण पश्चिम दिशा में फैला हुआ है। इसकी पश्चिमी सीमा 250 मिलीमीटर वर्षा–रेखा से बनती है। इस मैदान का पूर्वी भाग पृष्ठस्थ बालू निक्षेपों से ढका है। इस क्षेत्र में प्राचीन चट्टानें, समीपस्थ बालुकामय धरातल से पश्चिमी शुष्क मैदानों की अपेक्षा अधिक सामान्य रूप से बाहर निकली हुई हैं। यह मैदान छोटी–छोटी भौताकृतीय इकाइयों में उप विभाजित किया गया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

3 लूनी बेसिन–गोदावर क्षेत्र ;स्नदप ठेंपद.ळवकूंत ज्तंबजद्ध रू लूनी नदी अजमेर के दक्षिण–पश्चिम में अरावली पर्वतमाला से निकलती है और दक्षिण पश्चिम की ओर बहने वाली बरसाती नदी है। इसकी अनेक छोटी–छोटी सहायक नदियां हैं जो प्रायः सभी अरावली के उत्तरी–पश्चिमी तीव्र ढ़ालों से पानी बहाकर लाती है और लूनी नदी के पश्चिमी किनारे पर मिलती हैं। लूनी और उसकी सहायक नदियां जोधपुर जिले की दक्षिणी–पूर्वी सीमा, पाली, जालौर एवं सिरोही जिलों का पानी बहा कर लाती है। लूनी और उसकी सहायक नदियों द्वारा बरसात के मौसम में पहाड़ियों से अपवाहित जल कछार क्षेत्र में अपवाहित किया गजाता है। लूनी अपवाह क्षेत्र को छोड़कर पश्चिमी राजस्थान क्षेत्र की अन्य नदियां अन्तरप्रदेशिय अपवाह का क्षेत्र है। श्रेणी के सहारे वार्षिक औसत वर्षा 650 मिलीमीटर है और कछार की पश्चिमी सीमा की ओर 250 मिलीमीटर तक घट जाती है।

पश्चिम और दक्षिण पश्चिम से कच्छ के रन तक तेज हवाओं द्वारा उड़ा कर लाई हुई बालू, लघु सरिताओं और वनस्पति की न्यूनता से नहीं रुकती है, जो कछार की विशेषता है। ला टूश ;1902द्ध ने पश्चिमी राजपूताना की बालू का वर्णन किया है जिसके अनुसार ष्दक्षिण–पश्चिमी झंझावातों, जो मरुस्थल के पार, वर्ष के अधिकांश महीनों में चलते हैं, द्वारा लाई गई और आगे बढ़ने में प्रवाहित जल सरिताओं के द्वारा अबाधित, बालू ने भूमि पर अतिक्रमण किया है, यहां तक कि कोई भी जिला उससे मुक्त नहीं है, केवल उन जिलों को छोड़कर जो अरावली पर्वत श्रेणी के समीपवर्ती क्षेत्रों में स्थित है, या उन पहाड़ियों से उतरने वाले नाले, बहकर आई बालू को आगे भी बहा ले जाने में सक्षम है, यद्यपि जल प्रवाह की अवधि केवल वर्षा दिवसों तक ही सीमित रहती हैं।''

उप पर्वतीय अरावली प्रदेश में अवनालिकीकरण ;ळनसलपदहद्ध से कॉग्लोमरेट का निर्माण हुआ है जो संश्लेषित अथवा असंश्लेषित हैं। यह कॉग्लोमरेट बालोढ़ बालू के जमाओं के साथ विभिन्न संस्तरों में पाया जाता है। ये स्थानीय शैलों के जल द्वारा बहाकर लाए गए गोलाकार कंकड़ों से बने हैं। इस क्षेत्र में वर्षाकाल में भी नदियां बालू से इतनी भरी रहती हैं इस कारण पानी के साथ अन्य कोई वस्तु बता पाना संभव नहीं है।

लूनी नदी और उसकी सहायक खारी नदी व जवांई नदी के दक्षिण की ओर के क्षेत्र के स्थलाकृति स्वरूप यह परिलक्षित करते हैं कि प्रारंभिक भू–आवृतिक क्रियाएं जलीय थी जिन्होंने इस क्षेत्र की परतदार चट्टानों को काटा है परन्तु समय के साथ इस क्षेत्र ने शुष्क स्थितियों का अनुभव किया है और वर्तमान भू–आकृतियां जल एवं शुष्क क्षरण चक्र की उत्पत्ति है। वर्तमान में वायु क्रियाएं अधिक सशक्त हैं, यद्यपि इन मौसमी नदियों में तीव्र गति से वर्षा होने पर बाढ़ भी आती रहती है। स्थलावृति अधिक ढालों वाली पहाड़ियों और विस्तृत जलोढ़ मैदानों से बनी हुई हैं। पश्चिमी जलोढ़ मैदान और पदस्थ क्षेत्रों के दक्षिणी–पश्चिमी भाग बालोढ बालू निक्षेप से आवृत हैं । यह क्षेत्र पूर्व–पश्चिम बहने वाली खारी और जवाई नदियों द्वारा अपवाहित किया जाता है। ये दोनों नदियां लूनी की सहायक नदियां है। ये नदियां ग्रेनाइट और रायोलाइट शैलों से निर्मित, उप–धरातलीय चट्टानों की गुम्बदीप संरचना प्रवृत्ति का अनुसरण करती है।

इस प्रकार वर्तमान स्थलाकृति प्रारंभिक जल क्षरण और उप–वायवीय क्षरण की उत्पत्ति है, जिन्होंने इस प्रदेश से विन्ध्यन बालू पत्थर का पूर्णतया कटाव कर दिया है। वर्तमान में विद्यमान पहाड़ियां प्रतिरोधी शैल समूहों से बनी हैं जो जलोढ़ मैदानों से घिरी हुई हैं। धीरे–धीरे शुष्क दशाएं अधिक तीव्र होने से दक्षिणी–पश्चिमी हवाओं ने कटाव कर जलोढ़ मैदानों व पहाड़ी ढालों के विपरीत बालू का जमाव कर दिया है। शुष्क दशाओं और बालू की क्रियाओं में प्रारंभिक भू–आकृतियों के चिन्हों एवं जलीय क्षरण चक्र के कार्यों एवं निक्षेपों को मिटा दिया है। धीरे–धीरे धरातल बालुका टीलों से ढ़कता गया, जिसके परिणामस्वरूप, स्थलाकृति टेकरी स्वरूप में दिखने लगी हैं। लूनी बेसिन, अरावली पदस्थल तथा लूनी नदी के बीच का उपजाऊ क्षेत्र आवृत्त करता है। जल धरातल के समीप है जहां नलकूप से सिंचाई संभव है परन्तु आगामी पश्चिमवर्ती क्षेत्र मे दोमट के स्थान पर बेकार बालू (थार) मिलने लगती है और धीरे धीरे जल स्तर निचली सतह में डूब जाता है। बीकानेर में पानी 110 से 125 मीटर की गहराई पर प्राप्त होता है तथा सामान्यतया खारी पानी है।

(ii) **अन्तःस्थलीय प्रवाह का मैदान–शेखावाटी क्षेत्र ;Plains of Interior Drainage-Shekhawati Tract) :** लूनी बेसिन के उत्तर में राजस्थान की सीमा तक अर्द्ध शुष्क संक्रमणशील मैदान हैं तथा अन्तःस्थलीय प्रवाह मैदान क्षेत्र कहलाता है। पूर्वी सीमा 500 मिलीलीटर वर्षा रेखा से बनी है अरावली लगातार श्रेणी नहीं हे परन्तु विभिन्न स्थानों पर टूटी हुई प्रतीत होती हैं। यह मैदान इस क्षेत्र की विशिष्ट बालू प्रणालियों से भरी हुई है और भू–दृश्य अनेक भिन्न गर्तों से भरा हुआ है तथा पश्चिमी भाग में वर्षा 250 मिलीमीटर से 500 मिलीमीटर के बीच हैं। भारी बौछारों के परिणामस्वरूप कभी कभी वर्षा जल बालू पहाड़ियों के मध्य भूमि के नीचे समा जाता है। जोधपुर काठी के चारों ओर अनेक छोटे–छोटे वेसिन पाए जाते हैं। तापक्रम अधिक होने से बाढ़ के खारे पानी वाष्पीकरण इस गर्तों में अनेक स्थानों पर नमक और सोडा के जमाओं के रूप में बदल जाता है। इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण नमक की झीलें डेगाना और डीडवाना है इस कारण समीपवर्ती क्षेत्र भी काफी प्रभावित हुआ है।

(iii) **घग्घर के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र** : यह क्षेत्र उत्तर के मरुस्थली क्षेत्र में गंगानगर व हनुमानगढ़ में मुख्यतया केन्द्रित है और प्राचीनकाल में हिमालय से निकलने वाली सरस्वती नदी के नाम से जाना जाता है। यह शुष्क घाटी हनुमानगढ़, सूरतगढ़ और अनूपगढ़ होती हुई पाकिस्तान के भीतर प्रवेश करती है। सरस्वती नदी की प्रमुख सहयोगी दृषवती की शुष्क घाटी नोहर–मादरा के भीतर से प्रकट होती है। लगभग सम्पूर्ण शुष्क घाटी में नहर निर्माण से यह क्षेत्र काफी उपजाऊ हो गया है। यहां प्रमुख नहर प्रणालियां

गंगानहर, भाखरा नहर पश्चिमी यमुना नहर और इन्दिरागांधी नहर है परन्तु इस क्षेत्र में जल–रिसाव की गंभीर समस्यां उत्पन्न हो गई है। प्रमुख समस्या सूरतगढ़ और अनूपगढ़ में सर्वाधिक है। छोटे बालु का टीले व रेतीले टीबे इस क्षेत्र में अनेक स्थानों पर बने हैं।

अपवाह तंत्र : मरु क्षेत्र में अपवाह प्रणाली उसके भूगर्भिक इतिहास, अरावली पर्वतों की उपस्थिति एवं जल विभाजकों की स्थिति से बहुत अधिक प्रभावित हुआ है। वृहद भारतीय जल विभाजक अपवाह को एक ओर बंगाल की खाड़ी तथा दूसरी और अरब सागर में विभाजित कर देता है अरावली पहाड़ियों का पश्चिमी भाग लघु सीमाओं व उनकी सहायक नदियों के द्वारा अरब सागर तक बहाया जाता हे। इस क्षेत्र में लूनी नदी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी अपवाद प्रणाली वर्षा मौसम तक केंन्द्रित है तथा मोसमी नालों द्वारा मिलकर बनी है जो केवल वर्षा ऋतु में अपवाह करते हैं लूनी बेसिन की वेमेल सरिताओं का जल मरुस्थल में ही लुप्त हो जाता है।

इस प्रदेश में लूनी एक मात्र महत्वपूर्ण नदी है जिसे मरु भाग की जीवनरेखा कहा जाता है। यह नदी अजमेर के अनासागर से निकलकर दक्षिण पश्चिम की ओर लगभग 32 किलोमीटर की दूरी तक अरावली श्रेणी के पश्चिम में जोधपुर, बाड़मेर व जालौर जिले से होकर बढ़ती हैं उद्गत स्थान पर तालोद रोड में इस नदी का लगभग 32 वर्ग किलोमीटर का मुर्रम ओर लेटेराइट से निर्मित एक छोटा अपवाह क्षेत्र है। पुष्कर घाटी से एक छोटी सहायक नदी से मिलने के बाद नदी का बेसिन चौड़ा हो जाता हैं अजमेर की समीप यह नदी अरावली ढालों पर बहती है और 10 किलोमीटर के बाद दक्षिण–पश्चिम की ओर बहती है तथा कुल 34866.40 वर्ग किलोमीटर का कुल अपवाह क्षेत्र सृजित करती है जो राजस्थान के कुल अपवाह तंत्र का मात्र 10.3 प्रतिशत है। इसमें से सागी का अपवाह क्षेत्र 3327.46 वर्गकिलोमीटर, जवांई अपवाह क्षेत्र 8866.88 वर्ग किलोमीटर और शुक्री व ब्रांडी का अपवाद क्षेत्र 22672.06 वर्ग किलोमीटर हैं लूनी नदी पूर्णतया वर्षा पोषित होने के कारण इसमें पानी केवल वर्षा ऋतु में ही बहता है तथा अनेक स्थानों पर बढ़ी हुई बालू के कारण मार्ग अवरुद्ध होने से पानी भूमि में समा जाता है। इस नदी का बहाव बालू के जमावों को काटने के योग्य नहीं हे।

अरावली पर्वत श्रेणी के पश्चिमी ढालों से अनेक लघु पर्वतीय नदियां यथा लालरी, घुट्टिया, बान्दी, शुक्री, जवांई, जोजरी, सगाई आदि बाएं किनारे पर जुड़ती हैं तथा किनारों पर बालू जमा करती है। लूनी नदी का जल बालोतरा तक मीठा है परन्तु आगे बढ़ने पर इसमें खारेपन की मात्रा बढ़ती हुई कच्छ के रन में अत्यधिक खारी हो जाती है । जोधपुर जिलें में लूनी नदी तलछटी को गहरा करने की अपेक्षा चौड़ाई में अधिक बढ़ जाती है और अत्यधिक वर्षा होने पर प्रायः बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है क्योंकि नदी को तल काटने का अवसर नहीं मिलता। वर्षा ऋतु में अपनी घाटी में बहने के स्थान पर लूनी नदी समीपवर्ती क्षेत्र में उमड़ जाती है और कभी कभी रेल्वे लाइन को भी तोड़ देती है जिसके समानान्तर यह वास्तव में लूनी रेल्वे स्टेशन से गोले में बहती हैं मरुक्षेत्र की प्रमुख नदियों, खारी व मीठी झीलों का विवरण सारिणी में दर्शाया गया हे।

सारिणी सं. 3 : मरुक्षेत्र की नदियां मीठे व खारी पानी की झीलें

क्र.सं.	जिला	नदी	मीठे पानी की झील	खारे पानी की झील
1.	बाड़मेर	लूनी, सूकडी,	–	पचपदरा (बालोतरा)
2.	बीकानेर	–	गजनेर, अनूपसागर, सूर सागर, कोलायत	लूनकरणसर
3.	चुरु	–	–	–
4.	गंगानगर	घग्घर	–	–
5.	हनुमानगढ़	घग्घर	–	–
6.	जालौर	लूनी, बांडी, जवाई व सूकड़ी	–	–
7.	जैसलमेर	काकनेय, लाठी, चांधण, धउआ व धोगड़ी	गढ़सीसर, अमर सागर बुंजरी झील	–
8.	झुंझनू	कांत ली	–	–
9.	जोधपुर	लूनी, मीण्डा, जोजरी	पिचिपाक बांध, बीसलपुर, बालसमन्द, प्रतापसागर, उम्मेद सागर, कायलाना तरवत सागर	बाप, रिण क्षेत्र (फलौदी)
10.	नागौर	लूनी	सरदार समन्द, हेमावास, जवांई, वांकली	कुचामन, डीडवाना सांभर
11.	पाली	लीवाडी, बांडी, सूकडी, जंवाई	–	–
12.	सीकर	कांतली, मंथा, पावटा, कांवत	–	–

स्त्रोत – राजस्थान का भूगोल, विज्ञान प्रकाशन जोधपुर

जलवायु : किसी क्षेत्र की जलवायु एक महत्वपूर्व भौगोलिक तत्व है जो आबादी के वितरण, लोगों के क्रिया कलापों व मानव–भूमि के संबंधों को प्रभावित करता है। जलवायु के अध्ययन में बहुत से संगठक सम्मिलित होते हैं जो मुख्यतया तापमान, वायु में आर्द्रता, वर्षा, वायुक्षेत्र, सूर्य की रोशनी आदि महत्वपूर्ण कारकों के रूप में अपना प्रभाव दर्शाते हैं। जलवायु को निश्चित करने वाले महत्वपूर्ण कारक अक्षांश, जल से दूरी या निकटता, पर्वतीय अवरोध, समुद्रतल से ऊंचाई, प्रचलित पवन, चक्रवाती तुफानों की व्यापकता और महाद्वीपीयता आदि है। विभिन्न कारकों में अक्षांश वर्ष में दिन की अवधि गणितीय नियंत्रित करक है जो सूर्य के चमकने की अवधि व तापक्रम की विभिन्नताओं को भी प्रभावित करता है

राजस्थान राज्य 23ह3' उ. से 30.12 उत्तरी अक्षांश और 69ह30 पू. से 78ह17 पूर्वी देशान्तर तक फैला है मरु क्षेत्र के 61 प्रतिशत भाग में स्थित हाने के कारण अधिकांश भाग समाहित करता है। दक्षिणी भाग कच्छ की खाड़ी से 222 किलोमीटर और अरब सागर से लगभग 400 किलोमीटर दूरी पर स्थित हैं धरातल की ऊंचाई अरावली के कुछ भागों में 214 मीटर से 1375 मीटर तक है जबकि अधिकांश भाग 370 मीटर से ऊंचा है अक्षांशीय स्थिति सौर्विक विकिरण की राशि ओर उष्ण कटिबंध में चलने वाली हवाओं की दिशा को निश्चित करती है। उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम तक फैली अरावली पर्वत श्रृंखलाएं भू आकृति का प्रमुख स्वरूप हैं ताकि मरु प्रदेश की शुष्क व अर्धशुष्क अवस्था का एक प्रमुख कारक भी सामान्य रूप से अरावली का पश्चिमी भाग मरुस्थलीय एवं अर्द्ध–मरुस्थलीय विषमताओं एवं उच्च वायु–वेग तथा निम्न सापेक्षिक आर्द्रता सहित निरन्तर पड़ने वाले सूखे के रूप में परिलक्षित होते हैं। शीतकाल अत्यन्त ठण्डा रहता है और बहुत से स्थानों पर तापमान जमनांक बिन्दु से नीचे गिर जाता है तथा पाला पड़ना एक सामान्य प्रक्रिया है। ग्रीष्म ऋतु में तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है और झुलसाने वाली गर्मी पड़ती हे। यह क्षेत्र देश का सबसे अधिक गर्म प्रदेश हे। विभिन्न जिलों में वर्षा व तापमान में काफी मिलता है जो सारिणी सं. 4 में दर्शाई गई है।

सारिणी सं. 4 : मरुक्षेत्र का तापमान व वर्षा

क्र. सं.	जिला	तापमान डिगरी सेल्सियस				वर्षा से.मी.		
		अधिकतम		न्यूनतम				
		1992	1997	1992	1997	सामान्य	1997	2002
1.	बाड़मेर	47	49	8	7	26.57	22.60	28.62
2.	बीकानेर	48	48	3	2	24.30	29.70	25.00
3.	चुरु	48	50	1	0	35.47	38.70	34.27
4.	गंगानगर	48	49	2	1	22.64	26.10	24.30
5.	हनुमानगढ़	48	47	5	3	27.35	39.70	34.39
6.	जालौर	48	47	3	5	37.00	34.17	36.17
7.	जैसलमेर	48	48	5	5	18.55	19.00	21.11
8.	झुंझनू	46	46	3	1	40.51	54.50	44.77
9.	जोधपुर	45	45	4	5	31.37	52.11	34.97
10.	नागौर	48	47	2	0	31.17	91.40	30.89
11.	पाली	46	45	2	2	42.44	63.34	54.27
12.	सीकर	47	44	1	3	44.03	97.20	41.84

स्त्रोत – स्टेटिस्टिकता एब्स्ट्रेक्ट राजस्थान 2002

ग्रीष्म ऋतु मार्च से जून तक रहती हे ।सूर्य के उत्तरायण होने के कारण तापक्रम क्रमश दक्षिण, उत्तर उत्तर–पश्चिम व पश्चिमी भाग में बढ़ता हे। संपूर्ण क्षेत्र में तापक्रम की वृद्धि प्रायः एक समान होती है परन्तु स्थानीय भू–भौतिकी कारणों से थोड़ा अन्तर रहता है। तापक्रम बढ़ने से गर्म भूमि पर वायु–मण्डलीय दबाव गिर जाता है यह वायुदाब 997 से 1000 मलीवर तक रहता है। अप्रेल माह में हवाएं पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है जो गर्म थार मरुस्थल को पार करके आने के कारण शुष्क और गर्म होती है मरु क्षेत्र में मुख्यतया बीकानेर, जोधपुर (फलौदी), जेसलमेर, बाड़मेर व चुरु में अधिकतम तापमान 45 से 50 डिगरी सेन्टीग्रेट तक पहुंच जाता हे तापमान बढ़ने से मरु क्षेत्र में केक्टाई जैसे पौधों को छोड़कर अन्य हरी या सजीव वनस्पति प्रायः समाप्त हो जाती है। वातावरण के शुष्क होने, स्वच्छ आकाश व रेतीले टीलों से सूर्यास्त के बाद पृथ्वी से गर्मी का तीव्र विकिरण होता है और दिन की गर्मी शीघ्र ही समाप्त होने से वातावरण आनन्ददायक हो जाता है दिन के समय ऊंचा तापक्रम मौसम को अत्यन्त असहनीय बना देता है जिससे कभी कभी धूलभरी आंधियां चलने व बरसात आने से तापमान गिर जाता है। रेतीले तूफानों की अवधि गंगानगर में 70 दिन, बीकानेर में 20 दिन व जोधपुर में 10 दिन होती है और दक्षिण पूर्व की और घटती जाती है।

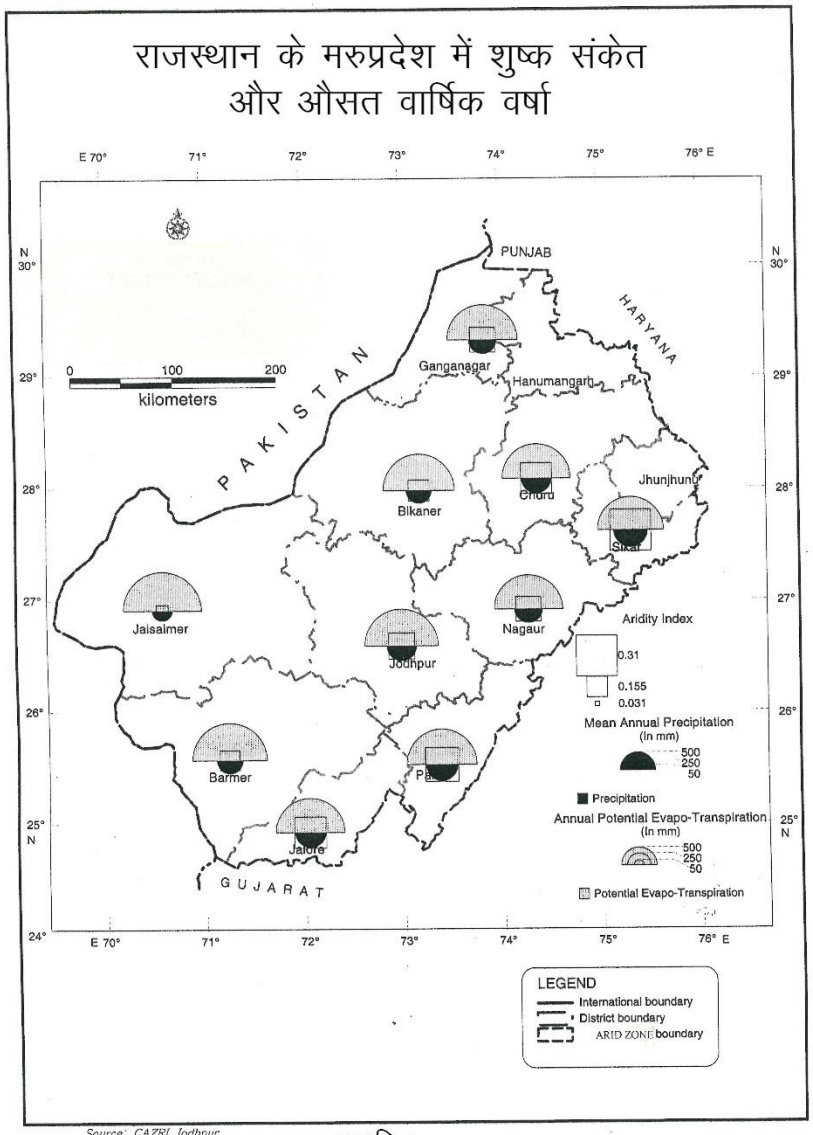

मानचित्र

तीव्र तापक्रम, वायुदबाव व वायुदिशाओं के परिवर्तन से हिन्द महासागर में उठने वाला मानसून बंगाल की खाड़ी व अरब सागर से आगे बढ़ता है। राजस्थान में दोनों धाराओं का मानसूत्र प्राप्त होता है परन्तु आरोहित संघनन से भारी वर्षा नहीं होती है मरु प्रदेश में मानसून धारा के आते हुए भी वर्षा अत्यन्त कम होती है। इस क्षेत्र में वर्षा की कमी के प्रमुख कारण है – ;पद्ध दक्षिण–पूर्व से आने वाली वायु धारा गंगा के मैदान से गुजरते हुए अपनी आर्द्रता प्रायः समाप्त कर देती है। ;पपद्ध दक्षिण–पश्चिम से आने वाली धाराएं गर्म सागर पार करने के बाद एक अत्यन्त गर्म भाग में प्रवेश करती है यहां सापेक्ष आर्द्रता 90 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक गिर जाती है। ;पपपद्ध वर्षा के लिए वायुधारा 920 मीटर तक उठना आवश्यक है, परन्तु ऊपरी गर्म वायुधारा अधिकांश आर्द्रता सोख लेती है और आकाश मेघ रहित हो जाता है। ;पअद्ध स्वच्छ मेघ रहित वायु एवं सूर्य की झुलसाने वाली किरणें मरुस्थल में ऐसी शुष्कता बना देती है जिससे वर्षा असंभव हो जाती है। ;अद्ध अरावली पर्वत श्रेणी इस ओर मानसून आगमन में बाधक बन जाती हैं। मरु क्षेत्र में औसत वर्षा 31.78 सेमी है। वर्षा की सीमा शुष्क और अर्द्ध–आर्द्र दशाएं निश्चित करती हैं।

शीतकाल अक्टूबर से फरवरी के बीच होता है इसमें से अक्टूबर–दिसम्बर की अवधि को लोटने मानसून की स्थिति माना गया है तथा जनवरी–फरवरी शीत ऋतु बताई गई है। लौटते हुए मानसून की तीव्रता मरु क्षेत्र में बहुत कम होती है परन्तु यह वर्षा शुष्क विधि से रबी खेती के लिए जीवन दायिनी होती है मरुक्षेत्र में सामान्य वर्षा से वास्तविक वर्षा का विचलन 40 से 400 प्रतिशत तक होता है परन्तु कभी कभी मौसम दोनों स्थितियों के पार कर देता है। कम वर्षा से अकाल की स्थिति बन जाती है क्योंकि फसल जलने लगती है और विकास अवरुद्ध हो जाता है औसत से अधिक वर्षा होने पर पैदावार में काफी वृद्धि होती है। शीत ऋतु में तापमान 4 डिगरी सेल्सियस से नीचे गिरने पर पाले की संभावना बढ़ जाती है जो खेती के लिए अत्यन्त हानिकारक होती है तथा प्रभावित क्षेत्र की फसल नष्ट हो जाती है।

मरु क्षेत्र में औसत अर्द्रता 55 प्रतिशत से अधिक रहती है परन्तु बाड़मेर, बीकानेर नागौर, जोधपुर व चुरु के कुछ क्षेत्रों में आर्द्रता 55 प्रतिशत से कम भी हो जाती है। शीत ऋतु में वायु में आर्द्रता 55 से 60 प्रतिशत रहती है परन्तु ग्रीष्मकाल में प्रातःकाल यह 55 से 60 प्रतिशत एवं अपरान्ह में 10 से 30 प्रतिशत रहती है जोधपुर में आर्द्रता न्यूनतम है तथा यह क्षेत्र अन्य जिलों की तुलना में अधिक शुष्क है। मानसून की समाप्ति के बाद सापेक्षिक आर्द्रता क्रमशः घटने लगती है।

आंधिया चलना इस क्षेत्र की सामान्य प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप टीले एक स्थान से दूसरी जगह स्थानान्तरित होते रहते हैं। पहाड़ी क्षेत्र में इसका प्रभाव कम होता है परन्तु पहाड़ों के ढालू ऊपरी छार पर टीबों का निर्माण दृष्टि गोचर होता हैं। मरु क्षेत्र में आंधियों की तीव्रता अधिक होती है और कभी कभी 120 किलोमीटर की वायुगति से बहुत नुकसान होता हैं इससे जैसलमेर व बाड़मेर में सड़क व रेलमार्ग अवरुद्ध होना सामान्य प्रक्रिया है। इन जिलों में आंधियां प्रायः जून माह में अधिक सक्रिय रहती है। एक वर्ष में प्रभावी आंधियों के दिनो संख्या प्रायः जैसलमेर में 16 दिन, बीकानेर में 18 दिन, गंगानगर में 27 दिन, जोधपुर में 9 दिन और बाड़मेर में 13 दिन है।

दिसम्बर से मार्च तक हवाएं उत्तर–पश्चिम दिशा की ओर केन्द्रित होती है जबकि मई से सितंबर तक हवाओं का रूख पश्चिम से पूर्व की ओर होता है । वायु वेग पश्चिमी शुष्क और अर्द्ध शुष्क भाग में अधिक रहता है यहां वनस्पति का अभाव, ढीला धरातल व प्राकृतिक अवरोधों की कमी के कारण वायु स्वच्छन्द रूप से चलती है। गर्मी के दिनों में वायुगति 125 किलोमीटर प्रतिघंटा तक बढ़ जाती है मानसून अवधि में हवाओं का रूख पूर्व की ओर होता है जो वर्षा के लिए अनुकूलता निर्मित करता है। अक्टूबर–नवम्बर के दौरान वायुवेग अत्यन्त्र कम होता है।

चक्रवातों के प्रभाव से कई बार ओला वृष्टि भी होती है। ओला वृष्टि की सघनता चक्रवात के वेग पर निर्भर करती है। मई जून की अवधि में ओलावृष्टि का प्रभाव मनुष्य, पशु, आवास व वनस्पति पर होता है जो इसकी तीव्रता व सघनता पर निर्भर करता है रबी व खरीफ की खड़ी फसल पर ओलावृष्टि होने से आर्थिक हानि अत्यधिक होती है। ओलावृष्टि की आवृत्ति बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर व नागौर में तीन वर्षों की अवधि में एक बार तथा गंगा नगर में चार वर्ष में एक बार है।

किसी स्थान की जलवायु वहां की स्थानीय वायु मण्डलीय दशाओं को प्रभावित करने वाले मौसम की तत्वों के विभिन्न संयोगों का औसत होता है। इसमें जलवायु के तत्वों को आधार बनाया जाता है जलवायु प्रदेशें के निर्धारण में विभिन्न विद्वानों में विभिन्न तत्वों के साथ वनस्पति को भी सम्मिलित किया है और इसे जलवायु का एक महत्वपूर्ण कारक माना है। जलवायु क्षेत्रों के वर्गीकरण में भू–वैज्ञानिकों के तापमान, वनस्पति, आर्द्रता, संभावित वाष्पन वाष्पोत्सर्जन की मात्रा, आदि को एकता अथवा संयुक्त रूप से आधार बनाया हे। इनमे से महत्वपूर्ण विवरण निम्न प्रकार है :–

ब्लादीमीर कोपेन का जलवायु वर्गीकरण : जर्मन विद्वान ब्लादोमीर कोपेन ने जलवायु वर्गीकरण में तापमान, वर्षा तथा वनस्पति को संबद्ध किया है। कोपेन के अनुसार वनस्पति का विकास वर्षा की प्रभावशीलता ;मिमिबजपअमदमे व ि्त्तपबपचपजंजपवदद्ध पर निर्भर है जिसमें वर्षा की वास्तविक मात्रा जो वनस्पति के लिए सुलभ हो। वर्षा की प्रभावशीलता निर्धारित होती है। इस आधार पर कोपेन ने विश्व जलवायु को ।ए ठए ब्ए क और म् अक्षरों का प्रयोग करते हुए पांच समूहों में विभक्त किया तथा वर्षा के मौसमी वितरण एवं वार्षिक तापमान के आधार पर कई उप–भागों के लिए विभिन्न संकेतकों का प्रयोग किया है इसके अन्तर्गत मरु क्षेत्र के जैसलमेर, पश्चिमी बाड़मेर, बीकानेर, गंगानगर व जोधपुर जिले ठॅ जलवायु प्रदेश में, जालौर, जोधपुर, पूर्वी, बाड़मेर, नागौर, चुरु सीकर, झुंझनू पूर्वी गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले ठौ जलवायु प्रदेश में आते है।

थार्नथ्वेध्वेट का वर्गीकरण : थार्नथ्वेध्वेट के जलवायु वर्गीकरण में वर्षन प्रभावित ;च्तपबपचंजपवद मिमिबजपअमदमेद्ध तथा तापमान प्रभावित ;ज्मउचमतंजनतम मिमिबजपअमदमेद्ध सूचकों को आधार बनाया गया है इसके अनुसार वनस्पति जलवायु की सूचक होती है तथा वह वर्षा की मात्रा, तापमान तथा वाष्पीकरण से प्रभावति होती है इसमें संभावित वाष्पन वाष्पो सर्जन ;च्वजमदजपंस म्अंचवजतंदेचपतंजपवदद्ध की मात्रा व आर्द्रता सूचकांक का सम्मिश्रण किया है इस वर्गीकरण के अनुसार जैसलमेंर, बाड़मेर, बीकानेर व जोधपुर को म्।श्क में तथा जालौर, पूर्वी जोधपुर, पाली, नागौर, सीकर, झुंझनू क।श्रू में, गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु व पूर्वी बीकानेर क्ठश्रू में वर्गीकृत किए गए हैं।

ट्वार्था का वर्गीकरण : ट्वार्था ने कोबेन के जलवायु वर्गीकरण में संशोधन कर आनुमाणिक ;म्उचपतपबंसद्ध तथा जननिक ;ळमदमजपबद्ध को सम्मिलित किया है जिसके अनुसार मरू प्रदेश के गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु, झुंझनू, सीकर, पूर्वी बीकानेर, नागौर जोधपुर, पाली, पूर्वी बाड़मेर को ठैः जलवायु प्रदेश में स्थापित किया गया है।

उपरोक्त सभी विश्लेषणों के मध्यनजर मरुक्षेत्र को शुष्क जलवायु क्षेत्र में श्रेणीबद्ध करना सर्वथा उपयुक्त है।

जलवायु के आर्थिक व सामाजिक प्रभाव : भौगोलिक वातावरण के समस्त कारकों में से जलवायु का प्रभाव मानव जीवन की समस्त गतिविधियों पर सर्वाधिक पड़ता है। भोजन का प्रकार व मात्रा, अधिवासों के प्रकार व निर्माण सामग्री, पहनावा, आर्थिक गतिविधियां, कृषि व संबद्ध कार्य, मानव स्वास्थ्य एवं कार्यक्षमता जलवायु से सर्वाधिक प्रभावित होते है। मरुक्षेत्र में कृषि व पशुपालन मुख्य व्यवसाय है जिसका इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मे 40 प्रतिशत योगदान है और 70 प्रतिशत जनसंख्या का जीविकोपार्जन साधन है जलवायु का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव निम्न प्रकार पड़ता है :–

(i) मानव में कठिन और असाध्य वातावरण को भी अपने अनुरूप बना लिया है इस क्षेत्र में वर्षा जल व भूमिगत जल ही कृषि व जीवनयापन का प्रमुख आधार है। परिस्थितयों के अनुरूप यहां के निवासियों ने शुष्क खेती, ओस द्वारा पोषित खेती और सीमित भूजल का उपयोग करके खाद्यान्न, तिलहन, दालें, मसाले, कपास आदि के उत्पादन में महारथ हासिल किया है जो इस क्षेत्र के लिए एक अजूबा है। विश्व के अन्य मरुस्थलीय क्षेत्रों में संसाधनों का ऐसा दोहन एक उदाहरण माना गया हैं।

(ii) वर्षाऋतु में आर्द्रता की अधिकता से फसलें व वनस्पति तेजी से बढ़ती हैं। जिससे पर्याप्त चारा उपलब्ध हो जाता है जो पशुपालन में सहायक है। अकाल की स्थिति में सरकार अन्य क्षेत्रों से चारा जुटाकर पशुधन की रक्षा में प्रभावी योगदान देती है जिससे निवासियों को आर्थिक व सामाजिक संबल प्रायः होता है।

(iii) मरुक्षेत्र में आठ महीने शुष्क व्यतीत होते हैं। खरीफ की फसलें वर्षा के प्रभाव से उत्पन्न हो जाती है परन्तु रबी फसलें उपलब्ध भूजल की मात्रा पर ही निर्भर रहती हे। यहां के पशुपालकों ने अपने भेड़ व बकरी आदि की चराई के लिए समीपवर्ती प्रदेशों को चुन लिया है और इसके मार्ग की निर्धारित का लिए है। पशुपालक वर्ग 500 से 1000 पशुओं को निर्धारित मार्ग से भ्रमण करते हुए अपना जीविकोपार्जन करते हैं।

(iv) कृषि व पशुपालन के माध्यम से जीविकोपार्जन कर यहां के निवासी अपने लिए क्रय शक्ति स्रजित कर लेते है जिससे बच्चों की शिक्षा, सामाजिक व धार्मिक कार्य करते हुए अपनी संस्कृति को संजोए हुए है। यहां के लोगों का पारम्परिक पहनावा उनकी संस्कृति का प्रतीक है।

(v) सरकार के विभिन्न विभाग व संगठन विज्ञान व प्राद्योगिकी तथा अनुसंधान द्वारा मरुक्षेत्र के लिए उपयोगी फसलों, चारा व वनस्पति विकसित कर यहां के निवासियों के पलायन को प्रभावी रूप से रोकने में मदद करते हैं। अत्यधिक गर्मी व उच्च तापक्रम के उपरान्त भी व्यक्ति अपने को यहां की जलवायु और पारिस्थितिकी के अनुरुप ढ़ाले हुए है जो अत्यन्त दुष्कर कार्य है और इसलिए सराहनीय है।

(vi) मरुप्रदेश के निवासियों ने स्थानीय जलवायु के आधार पर अपने फसल चक्र विकसित किए हैं जिन्हें यथा संभव दोहन करते हैं।

मृदा–स्वरूप व प्रकार : मृदा जैव मण्डलीय स्थल भाग का महत्वपूर्ण तत्व है जिसमें कई ठोस, तरल व गैसीय पदार्थों का एक मिश्रण है। यहा भू–पर्वटी ;ंतजी बतनेजद्ध के सबसे ऊपरी भाग में पाई जाती है। यह सजीव और निर्जीव पदार्थों से युक्त होती है। वस्तुतः धरातलीय पदार्थों के अपक्षय, जलवायु वनस्पति और असंख्य भूमिगत जीवों के बीच होने वाले परस्पर क्रियाकलापों दो का अन्तिम परिणाम है। इन भौतिक, रासायनिक तथा जैविक प्रक्रियाओं के एक लम्बे समय तक कार्यरत रहने से परस्पर मृदा परतों का निर्माण होता हे। मृदा निर्माण में पांच कारक सहायक होते हैं यथा ;पद्ध आधारी चट्टान ;पपद्ध स्थानीय जलवायु ;पपपद्ध जैविक पदार्थ ;पअद्ध स्थलाकृति और ;अद्ध मृदा के विकास की अवधि। इनमें से जलवायु और जैविक क्रियाएं क्रियाशील कारक है तथा शेष निष्क्रिय कारक माने गए हैं। मृदा की मूल विशेषताएं, जिसमें उसका रासायनिक संगठन भी सम्मिलित है, उनके नीचे की आधारी चट्टानों से प्राप्त होती हैं। मृदा का परिवहन बहते हुए जलवायु व अन्य शक्तियों द्वारा निर्मित होता है। मृदा एक स्थान पर एक ही स्थिति में भी बनी रह सकती है। मृदा का रूपान्तरण जलवायु एवं जैविक कारकों के क्रियाकलापों द्वारा होता हैं मृदा निर्माण के उपरोक्त कारकों के इष्टतम संयोजन के परिणामस्वरूप अधिक उर्वरता युक्त गहरे मृदा आवरण का निर्माण होता हैं मरुस्थली प्रदेश में मोटे कणों वाली मिट्टी सम्पन्न कृषि को आधार बनाने में समर्थ नहीं हैं मिट्टी में नाइट्रोजन, आक्सीजन, सिलिकॉन, एल्यूमिनियम, लोहा आदि प्रधान तत्व हैं तथा पोषक तत्वों में नाइट्रोजन, कैल्शियम, फारस्फोरस, सल्फर, मैग्नीशियन, मैगनीज, आयोडिन, तांबा जस्ता आदि है।

स्थानीय पारिस्थितिकी तत्वों में मिट्टी वनस्पति की पोषक है और वनस्पति जीव जन्तुओं सहित मानव की पोषक है। मिट्टी के विभिन्न प्रकार विभिन्न जातियों एवं किस्मों के स्थानीय पेड़–पौधों व जीव जन्तुओं के लिए आवास उपलब्ध कराते हैं। जैव मण्डल के उर्जा एवं खनिज पदार्थों के गमन, संचरण मार्ग के लिए मिट्टी सबसे बड़ा माध्यम है। मिट्टी के विभिन्न संस्वर अर्थात ऊपरी मिद्दी, पृष्ठ मिट्टी और अवमृदा मिलाकर मृदा परिच्छेदी ;वपस च्तवपिसमद्ध का निर्माण करते हैं। परिच्छेदिका के विभिन्न संस्तर ;ेवतप्रवदेद्ध के रंग, गठन, केलिशियम कार्बोनेट की मात्रा में अन्तर होता है। मरु क्षेत्र के शुष्क मैदान में बलुई, भूरी बलुई, भूरी दोमट मिट्टी, अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में जलोढ़ मिट्टी तथा घग्घर के मैदान में बाढ़वृत मैदानी मिट्टी पाई जाती है। रंग एवं गठन के आधार पर मरुक्षेत्र की मिट्टियों को निम्नलिखित प्रकारों से विभक्त किया गया है–

(i) टिब्बेदार पीली–भूरी बलुइ मिट्टी – इस प्रकार की मिट्टी में 90 प्रतिशत बालू और 5 से 7 प्रतिशत मटियार और गाद की मात्रा होती हे। ये मिट्टियां बालु का स्तूपों वाले क्षेत्रों में अधिक मिलती है। इनका वितरण नोदर, मादरा (हनुमानगढ़), सूरतगढ़ (गंगानगर), चिढ़ावा (झुंझनू), डूंगरगढ़ (चुरु), बाड़मेर के पश्चिमी भाग, फलौदी, बाप, शेरगढ़, ओसियां, बिलाडा (जोधपुर) रामगढ़, फतेहगढ़, सम (जैसलमेर), नावां, कुचामन, डीडवाना (नागौर), सांचौर, भीनमाल (जालौर), बीकानेर के पश्चिमी भाग और सीकर जिले के पूर्वी भाग में अधिक है। इस मृदा में ह्यूमस आदि सूक्ष्म मात्री पोषक तत्वों में मैगनीज व ताबें की मात्रा कम है। इनकी जलधारा व क्षमता कम होती है। इन मृदाओं का वायु द्वारा अपरदन तथा परिवहन अधिक होता है।

(ii) भूरी बलुई मिट्टी – इस प्रकार की मृदा में 85 से 90 प्रतिशत तक बालू, 6 से 9 प्रतिशत तक मटियार और गाद की मात्रा होती है। ये मिट्टीयां बाड़मेर, जालौर, नागौर, जोधपुर, सीकर, चुरु और झुंझनू जिलों में मिलती हैं। इसमें जीवाश्म की मात्रा कम होती है तथा चूने का अंश भी प्रायः अनुपस्थित रहता हैं। सिंचित क्षेत्रों में नाइट्रोजन व फास्फोरस युक्त उर्वरकों का उपयोग आवश्यक होता है।

(iii) भूरी दोमट मिट्टी–इस प्रकार की मिट्टी में 8 से 10 प्रतिशत मटियार तथा 8 से 12 प्रतिशत तक गाद होती है। ऐसी मिट्टी परवतसर, मेड़ता (नागौर) तथा जोधपुर जिले की लूनी बेसिन सहित कुछ अन्य क्षेत्रों में पाई जाती है। इसमें जीवाश्म की मात्रा कम होती है। सिंचित क्षेत्रों में उर्वरकों का उपयोग करके इससे पैदावार ली जाती है।

(iv) धूसर भूरी दोमट मटियार मृदा–

इसमें 20 प्रतिशत तक मटियार एवं 13 प्रतिशत तक गाद की मात्रा होती है। यह मृदा बिलाडा, जोधपुर तहसील (जोधपुर) नावां, परवतसर (नागौर), अहोर (जालौर) सिवाना (बाड़मेर) तथा पाली जिले में मिलती है। इसकी जलधारण क्षमता अधिक होती है।

(v) भूरी मटियार दोमट मिट्टी : इस प्रकार की मृदा में 18 प्रतिशत तक मटियार की मात्रा तथा 22 प्रतिशत तक गाद की मात्रा होती है। यह मृदा घग्घर के बाढ़ग्रस्त मैदानों में पाई जाती है तथा हनुमानगढ़ जिले, गंगानगर की सूरतगढ़, अनूपगढ़, पदमपुर, रायसिंह नगर तथा बीकानेर जिले के उत्तर पश्चिमी भाग में पाई जाती है। इसकी जलधारण करने की क्षमता अधिक है। घग्घर के बाढ़ग्रस्त मैदानों में यह मृदा काफी उपजाऊ है। नहरी क्षेत्रों में इस मृदा में अधिकांश फसलें उगाई जाती हैं।

(vi) हल्की भूरी बलुई दोमट मृदा : इस मृदा की बनावट 16 प्रतिशत तक मटियार तथा 14 से 18 प्रतिशत तक गाद के सम्मिश्रणयुक्त है। इस मृदा की उपलब्धता चुरु के राजगढ़ व सुजानगढ़, सीकर जिले के नीम का थाना, श्रीमाधोपुर, दांतारामगढ़, झुंझनू जिले की खेतड़ी व उदयपुरवाटी, तहसीलों, नागौर जिले की नावां, परवतसर में है। इसमें जीवाश्म की मात्रा कम होती है तथा जस्ता व तांबा तत्वों की भी कमी होती है।

जल : पृथ्वी पर जीवन यापन के लिए वायु के पश्चात् दूसरा महत्वपूर्ण तत्व जल है। जल की उपलब्धता के विभिन्न स्त्रोत हैं। परन्तु मरु क्षेत्र में कोई बारहमासी नदी प्रवाह क्षेत्र नहीं होने से समस्त आवश्यकताओं के लिए वर्षा व भूजल स्त्रोतों पर निर्भरता एक कटु सत्य है। राजस्थान के उत्तरी पश्चिमी भाग में प्राचीन काल में सरस्वती नदी के प्रवाह क्षेत्र में एक समृद्ध संस्कृति का होना एक ऐतिहासिक सत्य है परन्तु आज यह क्षेत्र थार के मरुस्थल के नाम से जाना जाता है मरु क्षेत्र में गंगभाखरा, व इन्दिरागांधी नहर प्रणाली एक उज्जवल भविष्य का संकेत देती है। जल संसाधन की उपलब्धता की दृष्टि से राजस्थान में पूरे देश का एक प्रतिशत भाग आता है। परन्तु मरुक्षेत्र में यह प्रायः नगण्य ही रहता है जनसंख्या की बेकाबू वृद्धि दर, शहरीकरण का बढ़ता स्वरूप तथा पेयजल और सिंचाई की आवश्यकताओं ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया हैं। मरुक्षेत्र में वर्षा की कमी से न तो सतही जल की पर्याप्त व्यवस्था होना संभव है तथा भूमिगत जल स्त्रोतों के अत्यधिक दोहन में जल उपलब्धता की बहुत बड़ी समस्या बन गई हे जो निरन्तर विकराल रूप ले रही है।

विगत 55 वर्षों मे पेयजल और सिंचाई क्षमता स्रजन में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। मरु क्षेत्र के सभी नगरों व कस्बों में पेयजल के मानदण्ड 100 लीटर प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन की गति से उपलब्धता बनाई गई है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में भी पेयजल मानदण्ड 40 लीटर प्रतिव्यक्ति की दर से उपलब्ध कराया जाता है। वर्ष 2002 के अन्त में ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल स्त्रोतवार विवरण सारिणी सं. 5 में अंकित है

सारिणी सं. 5 : ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रोतवार पेयजल व्यवस्था वर्ष 2002

क्र.सं.	जिला	कुल गांव	स्त्रोतवार गांवो की संख्या					
			नल	हैण्ड पेय	क्षेत्रीय	परम्परागत	डिग्गी व अन्य	योग
1.	बाड़मेर	1941	243	37	1291	13	8	1592
2.	बीकानेर	778	155	—	335	13	54	557
3.	चुरु	979	206	—	639	77	—	922
4.	गंगानगर	3014	71	514	1985	—	111	2681
5.	हनुमानगढ़	1905	207	462	858	—	81	1608
6.	जालौर	706	59	—	606	—	—	665
7.	जैसलमेर	637	24	83	384	2	23	516
8.	झुंझनू	859	621	63	140	—	—	824
9.	जोधपुर	1063	322	12	511	14	—	859
10	नागौर	1500	497	55	687	134	—	1373
11.	पाली	949	196	236	372	100	—	904
12.	सीकर	992	100	244	65	522	—	931
		15323	2701	1706	7873	875	277	13432

स्त्रोत– स्टेटिस्टिकल एक्स्ट्रेक्ट राजस्थान

सतही जल संसाधन : राजस्थान राज्य में आन्तरिक एवं बाहरी साधनों से उपयोग योग्य कुल सतही जल संसाधन 29.28 मिलियन एकड़ फीट है 15.86 मिलियन एकड़ फीट आन्तरिक संसाधनों से तथा 13.42 मिलियन बाहरी साधनों से है इसमें से मरुक्षेत्र के सतही जल संसाधन 11.21 मिलियम एकड़ फीट है जो बाहरी साधनों से प्राप्त है। इससे पेयजल व सिंचाई के लिए गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर व बाड़मेर में सिंचाई तथा चुरु, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, हनुमानगढ़ के 1107 गांवों में पेयजल की व्यवस्था भी की गई है।

भूजल संसाधन : राजस्थान में 10.18 मिलियम एकड़ फीट भूमिगत जल संसाधन है जो प्रत्येक वर्ष वर्षा के जल से पुनः चार्ज होता है और सिंचाई के लिए निकासी से घटता जाता है। एक औसत अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष एक मीटर जलस्तर घट जाता है और राज्य के आधे विकास खण्ड डार्क जोन श्रेणी में आ गए हैं जहां जलस्तर बहुत खतरनाक स्थिति तक गिर गया है। मरु क्षेत्र में विभिन्न स्त्रोंतो से सिंचाई का स्तर वर्ष 2001–02 सारिणी सं. 6 में अंकित है।

सारिणी सं. 6 : विभिन्न क्षेत्रों से सिचाई 2001–02 (हेक्टेयर)

क्र.सं.	जिला	शुद्ध कृषि	सिंचाई

		क्षेत्र	नहर	टांके	कुए व ट्यूब वैल	अन्य स्त्रोत	योग
1.	बाड़मेर	1649224	–	–	96055	151	96206
2.	बीकानेर	1477979	123770	–	37079	–	160849
3.	चुरु	1151220	–	–	43739	–	43739
4.	गंगानगर	698293	523146	–	933	–	524079
5.	हनुमानगढ़	778027	311447	–	4024	2	315473
6.	जालौर	648625	5510	–	207475	–	212985
7.	जैसलमेर	485475	41407	–	12035	1	53443
8.	झुंझनू	433249	24	–	198918	–	198942
9.	जोधपुर	1265944	–	–	133678	–	133678
10	नागौर	1237480	–	1139	232988	173	234300
11.	पाली	576227	–	34608	112564	43	147215
12.	सीकर	518399	–	–	212512	–	212512
	योग मरुक्षेत्र	10920142	1005304	35747	1292000	370	2333421
	राजस्थान	16765084	1451783	104747	3816348	46897	5419769
	राजस्थान से :	65.14	69.25	34.13	33.85	0.79	43.05

स्त्रोत – एटेटिस्टिकल एक्स्ट्रेक्ट, राजस्थान, 2002

उपरोक्त सारिणी के विश्लेषण से यह तथ्य सामाने आता है कि मरुक्षेत्र में राजस्थान का 65.14 कृषि क्षेत्र है जिसमें राजस्थान के कुल नहरी सिंचाइ क्षेत्र का 69.25 प्रतिशत क्षेत्र आता है, टांके 34.13 प्रतिशत क्षेत्र मे है तथा कुल राजस्थान के सिंचित क्षेत्र का 43. 05 क्षेत्र मरुक्षेत्र में हैं मरुक्षेत्र के कुल कृषि क्षेत्र का 21.37 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र है। इसमे से 9.21 प्रतिशत नहरों से, 0.33 प्रतिशत टांकों से, 11.83 प्रतिशत कुओं व ट्यूब बैल से सिंचित होता है। राजस्थान में भूजल संसाधन क्षमता और दोहन के कारण भूजल की स्थिति 1.1.1995 का विवरण सारिणी सं. 7 में दर्शायी गई है।

सारिणी सं. 7 : मरुक्षेत्र के भूजल संसाधन क्षमता 1.1.1995

क्र. सं.	जिला	भौगोलिक क्षेत्र (वर्ग किमी)	सिंचाई हेतु भूजल (मि.क्यू.मी.) प्रतिवर्ष	सकल ड्राफ्ट (मि.क्यू.मी.)	शुद्ध ड्राफ्ट	भविष्य के लिए उपलब्ध भूजल मि. क्यू. मी.)	भूमि जल विकास की अवस्था (प्रतिशत में)
1.	बाड़मेर	28387	271.19	117.44	82.21	188.98	30.29
2.	बीकानेर	27244	124.74	10.85	13.19	111.54	10.57
3.	चुरु	16830	213.46	20.97	14.58	198.78	6.87
4.	गंगानगर	20634	278.17	118.07	82.65	195.04	29.71
5.	हनुमानगढ़						
6.	जालौर	10640	520.80	307.15	245.00	305.79	41.29
7.	जैसलमेर	38401	121.72	7.04	4.93	116.79	4.04
8.	झुंझनू	5929	302.92	175.04	122.53	180.39	40.45
9.	जोधपुर	22850	434.12	192.81	134.97	299.15	31.69
10	नागौर	17718	557.31	175.40	122.78	434.53	22.05
11.	पाली	12387	571.61	272.93	191.05	380.56	33.42
12.	सीकर	7732	466.93	216.81	151.77	315.17	32.51
	योग	208751	3862.97	1614.51	1165. 66	2726.72	29.41

नोटः मि. क्यू. मी. त्र मिलियन क्यूबिक मीटर

स्त्रोत : भूजल विभाग, राजस्थान

वर्ष 1.1.1995 की भू–जल की स्थिति और उसके दोहन की मात्रा का वर्ष 2001–02 का तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट है कि विगत वर्षों में भूजल के दोहन की स्थिति में अत्यधिक वृद्धि हुई है। वर्तमान में 12.42 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में भूजल से सिंचाई की जाती है जिससे भूजल दोहन की स्थिति अधिकांश जिलों में अत्यधिक खतरनाक स्थिति में पहुंच गई है और अधिकांश क्षेत्र डार्क जोन में बदल गए हैं। प्रतिवर्ष पानी की बरसात से आगम और निकास के बीच अन्तर जाने से भूजल स्तर प्रतिवर्ष औसतन एक मीटर की गति से नीचे जा रहा है। यह स्थिति आगामी वर्षो मं और गंभीर होने की आशंका है। नहरी क्षेत्रों द्वारा सिंचाई वाले क्षेत्रों को छोड़कर

जिन क्षेत्रों में पूर्णतया भूमिगत स्त्रोत से ही सिंचाई की जाती है वहां भूजल की स्थिति ओवर एक्सप्लाइटेशन श्रेणी में आ गई है। यह स्थिति भविष्य में कृषि कार्य के लिए बहुत घातक सिद्ध हो सकती है।

वन व वनस्पति : भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है और मरुप्रदेश राज्य के 61 प्रतिशत भू भाग में फैला हुआ है। राजस्थान में 9.49 प्रतिशत क्षेत्र वनों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया है। मरु क्षेत्र में घोषित वन क्षेत्र का विवरण सारिणी सं. 8 में दर्शाया गया है

सारिणी सं. 8 : मरुक्षेत्र में वनों का वर्गीकरण (31.3.1998) (वर्ग कि.मी.)

क्र. सं.	जिला	भौगोलिक क्षेत्र	आरक्षित वन क्षेत्र	संरक्षित वन क्षेत्र	अ–वर्गीकृत वन क्षेत्र	कुल वन क्षेत्र	भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत
1.	बाड़मेर	28387	–	558.83	33.45	592.28	2.09
2.	बीकानेर	27244	–	167.13	910.51	1077.64	3.96
3.	चुरु	16830	7.22	31.78	41.18	80.18	0.48
4.	गंगानगर	10932	–	50.65	582.79	633.44	5.79
5.	हनुमानगढ़	9702	–	113.24	127.99	241.23	2.49
6.	जालौर	10640	204.68	292.57	48.43	545.68	5.13
7.	जैसलमेर	38401	–	101.54	486.63	588.17	1.53
8.	झुंझनू	5928	6.02	392.56	6.73	405.31	6.83
9.	जोधपुर	22850	–	180.47	157.56	338.03	1.48
10	नागौर	17718	0.80	205.77	29.36	235.93	1.33
11.	पाली	12387	808.31	124.91	10.60	943.82	7.62
12.	सीकर	7732	9.92	629.38	–	639.30	8.27
	योग	208751	1036.95	2848.83	2435.23	6321.01	3.03

स्त्रोत – स्टेटिस्टिकल एक्स्ट्रेक्ट, राजस्थान

मरुक्षेत्र में वनों का फैलाव मात्र 6321.01 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है जो भौगोलिक क्षेत्र का 3.03 प्रतिशत है। कुल वन क्षेत्र का 16.40 प्रतिशत आरक्षित वन हैं, 45.07 क्षेत्र संरक्षित वन क्षेत्र के अन्तर्गत वर्गीकृत है तथा 38.53 प्रतिशत क्षेत्र अ–वर्गीकृत वन क्षेत्र है। जिलेवार वन क्षेत्र की दृष्टि से चुरु में सबसे कम वन क्षेत्र है तथा सीकर में भौगोलिक क्षेत्र का 8.27 प्रतिशत वन हैं। जलवायु और वर्षा की कमी के कारण इस क्षेत्र में सघन वनों का प्रायः अभाव है। भीषण गर्मी के अनुसार अधिकांश वनस्पति नष्ट हो जाती है। राष्ट्रीय वन नीति के कारण 33 प्रतिशत क्षेत्र वनों से आच्छादित होना चाहिए।

वनस्पति को प्रभावित करने वाले कारक : मरु क्षेत्र में वनस्पति के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण का अभाव है। प्राकृतिक वनस्पति व वनों के विकास को प्रभावति करने वाले कारको में ;पद्ध उभार व मिट्टी आदि भौतिक कारण, ;पपद्ध जलवायु संबंधी कारक तथा ;पपपद्ध जैविक कारक प्रमुख हैं।

;पद्ध भौतिक कारक : मरु क्षेत्र मं पवनोद हवा से उढ़ने वाले टीलों का विस्तृत फैलाव हैं। बालू के नीचे ठोस संरचना काफी गहराई पर है तथा धरातल समतल नहीं है। अनेक निम्न शैलामय प्रक्षेपणों की उपस्थिति से एकरूपता नहीं रही पाती है। इस क्षेत्र में बड़े पेड़ों के स्थान पर झाड़ियां अधिक उगती है जो बरसात के मौसम के बाद बहुत कम माना में जीवित रह पाती हैं।

;पपद्ध जलवायु करक – इस क्षेत्र में वर्षा की कमी और असमान वितरण है। वृक्षारोपण कार्यक्रम व निजी प्रयासों से लगाए गए पेड़ों की जीवन दर बहुत कम है क्योंकि पानी की उपलब्धता प्रायः नहीं के बराबर हे। बालू में नमी की कम उपस्थिति व जडों के लिए आवश्यक ठोस भूमि के अभाव में पेड़ों का अस्तित्व रख पाना प्रायः संभव नहीं हो पाता है। पानी के अभाव में पेड़ पौधों को आगामी वरसात के मौसम तक जीवित रख पाना अत्यन्त कठिन कार्य है। इस क्षेत्र में टेकोमेल्ला अण्डलाटा, एकेसिया सेनीगल, प्रोसेपिल जुलीफलोरा आदि पाये जाते है जिनमें शुष्कता प्रतिरोध की विलक्षण शक्ति होती हे। वे पेड़ पौधे चट्टानी भागों में भी सफलतापूर्वक उगाए जाते हैं।

;पपपद्ध जैविक कारकः जैविक कारक वनस्पति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं। भेड़, बकरी ऊट आदि चौपायों द्वारा मनमानी ढंग से चराई के कारण तथा पेड़ों की कटाई का वन विकास पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ता है। बढ़ती आबादी की पूर्ति के लिए प्रायः वन क्षेत्रों को नष्ट कर खेती प्रारंभ कर दी जाती है जिसका भी वन विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

वनों का वितरण : इस क्षेत्र में औसत वर्षा 250 मिलीमीटर है इस कारण यहां कटीली झाड़ियां व घास उग पाती हैं। इस क्षेत्र में उगने वाले वृक्षों व झाड़ियों की पत्तियां छोटी होती है जिससे पानी का वाष्पीकरण कम मात्रा में होता है। पेड़ों व झाड़ियों की जड़ें गहराई में जाकर इन्हें जीवित रख पाती है। यहां मुख्यतया बबूल, धाकडा, राहिड़ा, ढाक, बोरडी, नीम, गुडहल, खेजड़ा पीपल, शीशम, सरेस, केर, आकड़ा, फोगड़ा, लावा अरणा आदि वृक्ष व झाड़िया पाए जाते है। इस क्षेत्र में बहुत से बिरले पेड़ पौधे भी उगते है जो अपनी जीवनरक्षा हेतु संघर्ष करते हे इनमें से प्रमुख है– डेजरटोमस (मोटो–जल–भंवरा, एक मेहन्दी कुल का पेड़), अरिस्टीडा रायलीयाना घास, आइयो मीपा कैरीका प्र. सौमीनी–ग्लेवरा, एबुटी लोन वाइडेन्टेटम प्र. मेजर, ए. फ्रूटीकोसम प्र. काश्मीकारपा, एलाश्मीकारपस मोनीलीफर प्र. विनौसा, एनोजिसस सरीसिया, प्र. नुमुलेरीय, एन्टीवेरीज ग्लेन्डुलोसा प्र. सीसलिया आदि प्रमुख हैं।

बोटेनिकल सर्वे आफ इंडिया ने औषधीय पौधों की ओर ध्यान दिया है क्योंकि इनका आर्थिक महत्व है और इनमें भारतीय चिकित्सा पद्धति से उपचार की विलक्षण शक्ति हैं । मरुप्रदेश में उगने वाले ओषधीय पादप, पदूषण रहित होते है और इनकी मांग दिनोदिन बढ. रही है।

वन्य जीव : मरुक्षेत्र में विविध प्रकार के वन्य जीव निवास करते हैं। स्तनपोषी जीवों में मरुस्थलीय चुहे, बिल्ली, लोमड़ी, सुनहरा नेवला, झाडू चुहा, चिंकारा, नीलगाय, खरगोश, काला हिरण, शाही, सियार, भेड़िया, लंगूर व चिमदागड़ प्रमुखतया हैं। सृवी जीवों में बालू मद्वली, बालू छिपकली, बालू अजगर, बालू सर्प, चन्दनगोद, गिरगिट, पाटा, नाग, केत, सांडा आदि पाए जाते है। पक्षियों में प्रमुखतया गुडावण, छोटी भूरी फाख्ता, कंठीदार फाख्ता, खूसहिया (कोचर) सफेद मुंह बुलबुल, लाल पूंछ बुलबुल, सतभैया, लुटेरा, शकर खोरा, पतरिंगा, तीतर, सफेद गला मैना, चपक (नाइटजार), अकाविल, बतासी, सफेद गला मुनिया, सामान्य वट तीतर, बर्सिरी (अश्म करलू) तथा भारतीय क्षिप्रचला आदि हैं। इन क्षेत्रों में सुदूर से आने वाले पक्षी समय चक्र के अनुसार प्रवास काते है इनमें प्रमुखतया चाट्स, लार्कस, तिलोर, शाही मट तीतर, तिल्सर (रोजी पेस्टर) बतखे व बाज हैं।

वन्य प्राणी संरक्षण स्थल : राज्य वन्य जीव मण्डल के सुझावों पर कुछ क्षेत्रों को वन्य जीव संरक्षण स्थल बनाया गया है। इन स्थानों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है इस कारण बहुत से देशी विदेशी पर्यटक विशिष्ठ प्रकार के वन्य जीवों की जीवनशैली का अवलोकन करने आते हैं। मरुक्षेत्र में स्थित वन्य प्राणी संरक्षण स्थलों का विवरण निम्न प्रकार है–

;पद्ध ताल छापर : यह चुरु जिले में आठ वर्ग किलोमीटर में फैला एक छोटा अभयारण्य है जहां प्रमुख रूप से काला हिरण पाया जाता हे। संरक्षित क्षेत्र बनाकर काले हिरणो को सुरक्षा व संवर्धन की सुविधा प्रदान की गई है।

;पपद्ध गजनेर – यह अभयारण्य बीकानेर से 31 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में गजनेर महल के चारों ओर विस्तृत है जो एक झील के किनारे हरा भरा चट्टानी भू प्रदेश है। इस संरक्षित क्षेत्र में चिंकारा, बारहसिंगा, जंगली सुअर, मोर, कबूतर, झीला फीरोजा, मक्षिका मिक्षी, तोते आदि मुख्य हैं। शीत काल में यहां साइबेरियन सारस सहित बहुत से वन्यजीव प्रवास करते हैं।

;पपपद्ध माचिया डेजर्ट सफारी पार्क : जोधपुर से 5 किलोमीटर कायलाना झील के पास माचिया किला पर्वतीय क्षेत्र में डेजर्ट सफारी पार्क एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया गया है। इस उद्यान की पहाड़ी आंचल में 11 हजार मीटर दीवार बनाई गई है जहां चिंकारा काला हिरण, नील गाय, जंगली सुअर खुले रूप से विचरण करते हैं। माचिया डेजर्ट सफारी पार्क हैदराबाद पार्क के अनुसार बनाया गया है जहां जलकुण्डों व जलाशयों के तटों पर भेड़िया, तीतर, सियार, खरगोश आदि स्वच्छन्द रूप से विहार करते देखे जा सकते हैं।

;पअद्ध राष्ट्रीय मरु उद्यान : जैसलमेर व बाड़मेर जिलों में राष्ट्रीय मरु उद्यान की स्थापना की गई है इस उद्यान में मरुस्थलीय क्षेत्र की वनस्पति व वन्य जीवों को सुरक्षित करते हुए विकसित किया जाता है इसमें गोडावण को भी संरक्षित किया जाना प्रस्तावित है जो प्रजाति लुप्त होती जा रही है।

मरु प्रदेश के पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण

सकारात्मक पर्यटक वह व्यक्ति होता है जो 24 घंटे से अधिक समय अपने देश, प्रदेश से बाहर दूसरे लोगों के साथ व्यतीत करता है तथा छः माह से अधिक समय तक किसी देश या क्षेत्र में निवास नहीं करता हैं। उसका उद्देश्य वैधानिक अप्रवासी मनोरंजन, नैसर्गिक आनन्द, खेलकूद, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक यात्रा, व्यापार, कार्यालय कार्य, सम्मेलन अभियान, मिशन, फोटोग्राफी, शूटिंग, फिल्म शूटिंग, पारिवारिक कार्य आदि है। किसी विशेष उद्देश्य पूर्ति के लिए की गई यात्रा पर्यटन कहलाती हैं पर्यटन आनन्द, मनोरंजन नैसर्गिक आकर्षण, व्यापार, वाणिज्य, सम्मेलन, कार्यशाला, खेलकूद, शैक्षणिक भ्रमण, धार्मिक दृष्टिकोण, राजनैतिक एवं कूटनीतिक दृष्टिकोण आदि से कीगई यात्रा जिसमें व्यक्ति या समूह ने परिवहन, होटल, रेस्तरां, वीजा, पासपोर्ट, यात्रा का पंजीकरण आदि कराकर उसका उपयोग किया है, वह यात्रा पर्यटन में सम्मिलित की जाती है। पर्यटन को प्रवास की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जाता हैः–

(i) देशीध्स्वदेशी पर्यटन ;पपद्ध विदेशी पर्यटन

देशी पर्यटन से तात्पर्य स्वयं के जिले, राज्य एवं देश में किया गया भ्रमण देशी पर्यटन की श्रेणी के अन्तर्गत आता हैं। इसके अन्तर्गत व्यक्ति या समूह हर वर्ष होने वाले मेले, त्यौहार, धार्मिक कार्यक्रमों, यज्ञों, हवनों, पशुमेलों, धार्मिक यात्राओं में आवागमन करते हैं। इसमें भाग लेने वाले पर्यटक किसी स्थान विशेष की यात्रा करते है और कभी–कभी समीपवर्ती दर्शक स्थल को भी अपनी यात्रा में सम्मिलित कर लेते हैं। ऐसी यात्राएं प्राय थोड़ी अवधि के लिए होती हैं। इन यात्राओं का उद्देश्य निर्धारित कार्य की पूर्ति के साथ मनोरंजन भी होता है।

विदेशी पर्यटन वैधानिक वीसा व पासपोर्ट के आधार पर किया जाता हे ओर विशेषकर पर्यटक के निवास व पर्यटन केन्द्र वाले देशों के आपसी संबंधों पर निर्भर करता हैं ये यात्राएं वायुयान, रेलमार्ग, जहाज, सड़क मार्ग द्वारा हो सकती है और समूह में यात्राएं किसी विशेष उद्देश्य से की जाती हैं। विदेशी पर्यटक प्रायः छोटे समूहों में यात्राएं करना पसन्द करते है तथा उनके प्रवास काल के दौरान एक से अधिक स्थानों का भ्रमण करना पसन्द करते है जो अनके उद्देश्य से तालमेल रखते हैं। ऐसी यात्राएं प्रायः अधिक अवधि की होती है तथा अपने प्रमुख उद्देश्य के साथ साथ स्थान विशेष की रोचक जानकारियां भी एकत्रित करते हैं।

राजस्थान का मरुक्षेत्र देशी व विदेशी पर्यटकों का आकर्षण का केन्द्र रहा हैं इस भाग में आने वाले पर्यटक अपने उद्देश्य की पूर्ति के साथ साथ यहां की संस्कृति, सभ्यता, भौगोलिक विषमताओं से विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। मरु क्षेत्र के विशेष आकर्षण यहां के टीले, स्थानीय निवासियों का रहन सहन, संस्कृति, कला, वाध्य यंत्र, लोकगीत, लोक नृत्य पर्यटकों पर अपनी अमिट छाप

छोड़ती हैं और इन पर्यटकों से प्रेरणा लेकर अन्य लोग भी इस क्षेत्र के भ्रमण के प्रति अपनी रुचि बना लेते हैं। विदेशी राष्ट्राध्यक्ष, शासनाध्यक्ष, राजनैतिज्ञ व अन्य विशिष्ट व्यक्ति अपनी सीमित यात्रा में भी राजस्थान के मरु प्रदेश को जोड़ने का प्रयास करते हैं।

पर्यटन के दो महत्वपूर्ण पहलू है – पर्यटन की आवश्यकता और पर्यटन स्थल का चुनाव। पर्यटन की आवश्यकता में किसी विशेष कार्य होने की स्थिति में दोनों पहलू एक हो जाते हैं जैसे सम्मेलन, कार्यशाला, धार्मिक कार्य आदि ऐसे पक्ष है जहां पर्यटक के पास पर्यटन की आवश्यकता व चुनाव की कोई छूट नहीं होती है। ऐसे पर्यटन प्रायः आयोजकों द्वारा निर्धारित होते है और उनके भाग लेनेवाले व्यक्ति अपनी सामर्थ्य, समय व परिस्थितियों के आधार पर सम्मिलित होने या न होने का फैसला करते हैं। इच्छित या स्वयं नियोजित पर्यटन में पर्यटन के दोनों पहलू अपनी सापेक्ष भूमिका निभाते हैं और प्रायः ऐसे पर्यटन पूर्व नियोजित होते हैं।

पर्यटन की आवश्यकता आने आप में एक विशेष पक्ष है जो व्यक्ति या समूह को अपने प्रदेश, देश तथा कार्यस्थल से दूर करने की आवश्यकता दर्शाता हैं आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं, परेशानियों आदि से घिरा रहता है और कुछ समय के लिए अपनी परिस्थितियों में परिवर्तन चाहता है मनुष्य जितना अधिक कार्य करता है या अपने दायित्वों से जितना ज्यादा घिरा रहता है यह उतनी ही अधिक परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव करता है। ऐसा करके वह एक छोटी अवधि के लिए अपने दायित्वों को भुलाने का प्रयास करता है और पर्यटन से प्राप्त शक्ति व ताजगी से अपनी कार्यक्षमता में काफी वृद्धि कर लेता है और उसने पुनः अपने दायित्व के प्रति उत्साह का स्रजन होता है और सापेक्ष पग्रटन का अन्तर्निहित उद्देश्य होता हैं

पर्यटन स्थल का चुनाव व्यक्ति इस दृष्टि से करता है जिससे वह पूर्ण मनोरंजन प्राप्त करे और जिस उद्देश्य से वह पग्रटन करता है, वह उसमें कितना सफल होता है यह उसके सही स्थल के चुनाव पर निर्भर करता है। प्रायः पर्यटक स्थल का चुनाव अपने समीपवर्ती लोगों के विचार, मीडिया प्रचार आदि के आधार पर किया जाता है और इस कार्य में संलग्न एजेंसिया उसकी सारी व्यवस्थाएं भी कर देती है परन्तु पर्यटन के अनुभव उसके स्वयं के होते हैं। यदि व्यक्ति द्वारा चयनित पर्यटन स्थल उसकी आशाओं के अनुरुप होता है तो पर्यटक अपने उद्देश्य में सफल माना जाता है और अपने अच्छे अनुभवों से लोगों को पर्यटन हेतु प्रेरित करता है और यही चक्र पग्रटन व्यवसाय को बढ़ाता है यदि पर्यटक अपने वांछित उद्देश्य में सफल नहीं होता तो उसकी विपरीत अभ्युक्ति आगामी पर्यटन संभावनाओं के क्षीण करती है और किसी स्थान विशेष के पर्यटन स्थल के रूप में बढ़ने या स्थिर रहने की संभावनाओं को दर्शाता है।

पर्यटन का महत्व : आज विश्व के समस्त देश अधिकाधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रयत्नशील है और देश के विकास में पर्यटन की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका हो गई है। विकासशील व विकसित सभी देश अपने यहां अधिक से अधिक पर्यटकों के आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। पर्यटन आज एक महत्वपूर्ण उद्योग बन गया है। विश्व में पेट्रोलियम उपयोग, आटोमोबाइल के पश्चात् पर्यटन का स्थान माना जाता है जो पर्यटन व्यवसाय के महत्व को दर्शाता है। मरु प्रदेश में पर्यटन का विशेष महत्व है क्योंकि यहां के लोग मेहमान के स्वागत के लिए सदैव तत्पर रहने के लिए विख्यात हैं। ष्अतिथि देवो भवःष ष्पधारो म्हारे देशष ष्रंगीला राजस्थानष ष्सुरंगा राजस्थानष इस क्षेत्र के प्रतिरूप बन गए हैं। पर्यटकों के आकर्षण केन्द्र यहां की भौगोलिक परिस्थितियां, रीति रिवाज, पहनावा, संस्कृति, सामाजिक और धार्मिक उत्सव हैं। पर्यटन से आमोद प्रमोद, मनोरंजन, भ्रमण एवं उद्देश्य पूर्ति के साथ पर्यटन क्षेत्रों के लिए विदेशी मुद्र अर्जन का साधन, सहयोग व सद्भाव का आधार, रोजगार प्रदान करने वाला उद्योग, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा सामाजिक प्रणाली का आदान प्रदान का प्रमुख आधार है।

पर्यटन की विभिन्न विधाओं की दृष्टि से पृथक पृथक भूमिकाएं है। पर्यटन एक सतत् प्रवाही प्रक्रिया है जिसमें पारस्परिक, भौतिक व मानसिक परिलाभों का आदान प्रदान होता है। विकासशील देशों के लिए पर्यटन एक महत्वपूर्ण संबल है और बहुत से विकासशील देशों में आजीविका का प्रमुख आधार बन गया है। प्रत्येक देश पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विदेशों में प्रचार प्रसार और आने वाले पर्यटकों को यथा संभव अधिकाधिक सुविधाएं प्रदान करने का भरसक प्रयास करता है। पर्यटन का महत्व अर्थव्यवस्था को सुधारने, सुदृढ़ करने, उत्तरोत्तर वद्धि करने में अत्यन्त सहयोगी पाया गया है।

पर्यटन से यातायात, होटल, रेस्टोरेन्ट, सेवाओं आदि के रूप में उपभोक्ता बनकर एक आकर्षक धनराशि प्रदान करता है। आज पर्यटन से आर्थिक पहलुओं की दृष्टि से बहुत महत्व हो गया है। मरु प्रदेश में भी पर्यटन के प्रति लोगों में रुझान बढ़ा है क्योंकि इससे आकर्षक आय होती है। इससे रोजगार के नए अवसर सृजित होने लगे है जो मरुप्रदेश की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के लिए एक वरदान के रूप में उभरते है। पग्रटन से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से निम्न आर्थिक व सामाजिक लाभ हैः–

(i) विदेशी मुद्रा का अर्जन : प्रत्येक विदेशी पर्यटक अपने भ्रमण स्थानों पर सेवाओं, सुविधाओं व वस्तुओं के लिए विदेशी मुद्म व्यय करता है। भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों में से 33ः राजस्थान से आते है और लगभग 25 से 30 प्रतिशत मरु का भ्रमण करते हैं। वर्ष 2001 में राजस्थान आने वाले स्वदेशी व विदेशी पर्यटकों की संख्या क्रमशः 77.57 लाख व 6.08 लाख थी इनमें से मरूप्रदेश के 12.57 लाख स्वदेशी पग्रटक तथा 1.86 लाख विदेशी पर्यटकों की थी। वर्ष 2002 में से 83.00 लाख स्वदेशी व 4.28 लाख विदेशी पर्यटकों में से 12.30 लाख स्वदेशी तथा 1.02 लाख पग्रटकों ने मरुक्षेत्रों का भ्रमण किया जो क्रमशः 16.20 प्रतिशत स्वदेशी व 30.59 प्रतिशत विदेशी पग्रटकों के रूप में वर्ष 2001 में तथा 14.82 स्वदेशी तााि 23.83 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों के रूप में वर्ष 2002 में हुआ।

राजस्थान पर्यटन विकास निगम ने भारतीय रेल के सहयोग से शाही रेलगाड़ी चलाई है जो राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों को ले जाती है। यह रेलगाड़ी विदेशी पर्यटकों में बहुत लोकप्रिय है तथा इससे काफी विदेशी मुद्रा अर्जित होती है। राजस्थन को वर्ष 2001 में लगभग 1000 करोड़ रुपये की आय पर्यटन व्यवसाय से हुई है। एक विदेशी पग्रटक ओसतन भोजन व आवास पर प्रतिदिन 1000 रुपये व स्वदेशी पर्यटक 300–400 रुपये व्यय करता है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार सड़क, यातायात, विद्युत, पेयजल आदि सुविधाओं का सृजन एवं विस्तार करती है। व्यवसाय की दृष्टि से आने वाले पर्यटक निर्यात की संभावनाएं बढ़ाते है क्योंकि व्यक्तिशः समझौते व्यापार में लाभदायी व निरन्तरता बढ़ाते हैं।

(iii) रोजगार के अवसरों का सृजन : राज्य सरकार ने अथक प्रयासों को पश्चात् पर्यटन को ष्उद्योगष का दर्जा दे दिया है इससे औद्योगिक क्षेत्र में मिलनेवाले लाभ इस व्यवसाय को मिलने लगे हैं। इस क्षेत्र में विनियोजन लाभकारी होने से बहुत से होटल, रेस्टोरेन्ट, ट्यूरिस्ट हट आदि में विनियोजन बढ़ा है जिससे देशी विदेशी पर्यटकों को पर्याप्त आवास सुविधाएं जुटाने से रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं। इससे होटल मालिक गाईड, ड्राइवर, एजेन्ट, कर्मचारी, धोबी, नाई, रसोइया आदि को प्रत्यक्ष रोजगार मिला है। एक मोटे अनुमान के अनुसार आठ पर्यटकों से एक व्यक्ति को औसतन रोजगार प्राप्त होता है। इससे लोगों की आर्थिक क्रय शक्ति में बढ़ोतरी होती है और वस्तुओं की खरीद से कई अप्रत्यक्ष रोजगार भी सृजित होते हैं।

मरुक्षेत्र में ऊंट की सवारी काफी लोकप्रिय हुई है जिससे ऊंअ पालन लाभकारी कार्य हो गया है। बहुत से विदेशी व स्वदेशी पर्यटक ऊंट की सवारी का आनन्द उठाते हैं जो उनके लिए एक नई और आकर्षक मनोरंजन है। मरुस्थल त्रिकोण के माध्यम से बहुत से पर्यटक जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर क्षेत्रों में लम्बी ऊंट यात्रा भी करते हैं। इसके अतिरिक्त सीकर, चुरु, झुंझनू में भी ऐसा त्रिकोण पर्याप्त रोजगार के अवसर जुटा रहा है।

(iii) सार्वजनिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर का संरक्षण : पर्यटन के माध्यम से पर्यटक का मानसिक, शारीरिक आध्यात्मिक विकास होता है पग्रटक मेजबान देश की संस्कृति, कला, परम्पराएं, रीतिरिवाज आदि को प्रत्यक्षतः जानने व समझने के अवसर प्राप्त करते हैं। शादी व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विदेशी पर्यटक बहुत रुचि लेते है क्योंकि ऐसा समारोह उनके लिए बहुत मनोरंजक व रुचिकर होता है। इससे देशों की संस्कृति व कला समृद्ध होती है। राजस्थानी वेशभूषा, परिधान वाद्ययंत्र आदि खरीदकर उन्हे पहनने व उपयोग का तरीका भी सीखते हैं। मेंहदी व लाख की चूड़ियां विदेशी व देशी पर्यटकों में बहुत लोकप्रिय है और शादी समारोह में सम्मिलित होकर इन चीजों को स्वयं भी अपनाते हैं।

पर्यटन से हमारे सांस्कृतिक वैभव, कलात्मक धरोहर, नेसर्गिक दृश्यों के रखरखाव को भी बल मिलता है। पर्यटक महलों, दुर्गों, किलों, हवेलियों की बहुत रुचिपूर्वक देखते और समझने का प्रयास करते है। जैसलमेर की पटवों की हवेली, शेखावटी के फतेहपुर, पिलानी, वग्गड़ की भव्य इमारतों में कलात्मक वस्तुओं को बहुत बारीकी के समझते, परखते हैं। इसी प्रकार झुंझुनू की महलसर की हवेली, लक्ष्मण गढ़ जिला सीकर की हवेलियों में चित्रकारी, सरदार शहर में दुग्गड़ की हवेलियां, रतनगढ़, विसाऊ, रामगढ़ चुरु की हवेलियां, नवलगढ़ में मोरों की हवेलियां, पोद्दार, सेकसरिया, भगत, मानसिंह काद्व छावछरियां आदि हवेलियों की चित्रकारी, मीनाकारी व स्वर्णकला अत्यन्त आकर्षक व पर्यटकों में खसी लोक प्रिय है। हवेलियों के झरोखे, वस्तुकला, स्थापत्यकला, भवननिर्माण कला चित्रकारी बेजोड़ है।

प्राचीन हवेलियों के रखरखाव व मरम्मत काफी मंहगी होती है। समृद्ध व्यक्ति अपनी प्राचीन धरोहर की साजसज्जा करते रहते है परन्तु अधिकांश हवेलियां व अन्य सांस्कृतिक धरोहरें जीर्ण शीर्ण अवस्था में हैं। हेरिटेज होटल व अन्य सांस्कृतिक धरोहरें जीर्णशीर्ण अवस्था में हैं। हेरिटेज होटल प्रणाली के अन्तर्गत प्राचीन महल, दुर्ग आदि बड़ी कम्पनियों के द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने में बहुत कारगर सिद्ध हुई है। जोधपुर का उम्मेद पैलेस इसका ज्वलन्त उदाहरण है। परवतसर, नागौर, मरुमेला में सम्मिलित होने के लिए विदेशी पर्यटक बहुत आकर्षण दिखाते है और अधिक संख्या में भाग लेते हैं।

मरुक्षेत्र में पर्यटन के लिए एक स्वस्थ वातावरण है जो पर्यटकों को यहां आने के लिए आकर्षित करता है। यहां की कलात्मक वस्तुएं विदेशों में बहुत लोकप्रिय हैं। बाड़मेर में लकड़ी पर चित्रकारी एक आकर्षक व्यवसाय के रूप में विकसित हुआ है। मरुक्षेत्र के खनिज आधारित वस्तुएं विदेशों में काफी लोकप्रिय है और विदेशी मुद्रा अर्जन में काफी योगदान दे रही हैं।

पर्यटक स्थलों का वर्गीकरण : पर्यटक स्थलों के वर्गीकरण के बहुत से आधार हो सकते है जो पर्यटन के उद्देश्य व पर्यटन स्थलों की महत्त को दृष्टिगत रखकर वर्गीकृत किए जा सकते हैं। पर्यटन का उद्देश्य मनोरंजन, खोज, अनुसंधान, संस्कृति, कला, साहित्य आदि हो सकते है जिनके परिपेक्ष्य में पर्यटक व्यक्ति या समूह स्थान विशेष का भ्रमण करते हैं। इन स्थलों की जानकारी विभिन्न स्त्रोतों से मिल जाती हे अतः पर्यटक किसी स्थान विशेष या कई स्थानों का भ्रमण कार्यक्रम बनाने से पूर्व यह सुनिश्चित करना आवश्यक समझता है कि उसके वांछित उद्देश्यों की पूर्ति चयनित स्थल के पर्यटन से हो सकेगी या नहीं। यदि पर्यटक की उद्देश्य प्राप्ति शत–प्रतिशत या उसके आंकलन से कहीं अधिक उपयोगी रहती है तो पर्यटन स्थल की विशेष उद्देश्य पूर्ति की महत्ता बढ़ जाती है और यही पर्यटन विकास का आधार बनता है।

पर्यटन स्थल के महत्व की दृष्टि किया गया वर्गीकरण पर्यटन स्थल की ख्याति का द्योतक है। ऐसा ख्यातिनाम पर्यटन स्थलों के बारे में ही संभव हो सकता हैं इसके अतिरिक्त बहुत से पर्यटक स्थलों के संबंध में प्रचार–प्रसार बहुत बढ़ा चढ़ाकर किया जाता है परन्तु संबंधित स्थल पर पहुंचकर ही पर्यटक को सही स्थिति का आभास होता है। इस दृष्टि से पर्यटन स्थल वाले क्षेत्रों पर आवास व अन्य सुविधाओं का महत्व भी उतना ही होता है जितना कि संबंधित पर्यटन स्थल का। पर्यटक एक लम्बीदूरी तय करने के बाद जब पर्यटक स्थल वाले स्थान पर पहुंचता है तो उसे सेवाएं व सुविधाएं उसकी इच्छा के अनुरूप मिलती है अथवा नहीं। पर्यटक अपनी यात्राओं के दौरान आरामदायक सुविधाएं चाहता है और उनके लिए निर्धारित धनराशि भी देने के लिए तैयार होता है परन्तु इसके पश्चात् भी यदि उसे वांछित सुविधाएं नहीं मिलती तो पर्यटन का उत्साह फीका पड़ जाता है। उसे पर्यटन स्थल में उतनी रुचि नहीं रहती जो परिकल्पना करके यात्रा कार्यक्रम बनाया था। इस प्रकार पर्यटन स्थल सुविधायुक्त होने नितान्त आवश्यक हैं।

इसके अतिरिक्त पर्यटक एक आय का स्त्रोत होता है इसलिए व्यक्ति उससे मनमाना धन वसूलने का प्रयास करते हैं। पर्यटन स्थल के समीप भीख मांगने वाले लोग देश व प्रदेश की छवि धूमिल करते हैं। पर्यटकों से लूट खसोट, चोरी, बलात्कार आदि ऐसे कृत्य हैं जिनसे देश की छवि पर्यटकों की दृष्टि में खराब होती है। पूरे भारत देश के बारे में विदेशों में यह भ्रांति है कि यहां का पानी पीने योग्य नहीं है अतः पर्यटक अपने उपयोग में मिनरल वाटर काम में लाते हैं यदि यह पानी भी निर्धारित मानदण्डों का नहीं होता है

तो पर्यटक स्थल के साथ देश व प्रदेश के प्रशासन की छवि धूमिल होती है। इसलिए पर्यटन स्थलों पर सभी सेवाएं व सुविधाएं सही मूल्य पर मिलनी आवश्यक हैं। पग्रटन स्थल की रोचक छवि से पर्यटकों पर उस स्थान के प्रति अच्छी सोच विकसित होती है और पर्यटन व्यवसाय काफी पनपता है।

कई महत्वपूर्ण कारणों का पर्यटन व्यवसाय पर विपरित प्रभाव पड़ता है। यदि पर्यटन सील वाले देश में कोई ाायानक बीमारी का प्रकोप हो गया है तो पर्यटक उस देश में आना रोक देते हैं। युद्ध, आन्तरिक विद्रोह, अराजकता आदि स्थितियां पर्यटन व्यवसाय में स्थाई या अस्थाई व्यवधान उपस्थित कर देती हैं। भौगोलिक आपदा भी पर्यटन व्यवसाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। सुनामी के प्रकोप से समुद्रतटीय क्षेत्रों में पर्यटन व्यवसाय को जबरदस्त झटका लगा था। भूकम्प, अकाल, बाढ़ आदि ऐसे ही मौलिक कारण है जिन का पर्यटन के व्यवसाय से सीधा संबंध है ओर इसको प्रभावित करता है।

इन सभी स्थितियों को दृष्टिगत रखकर पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण करना सार सम्मत होगा। अतः पर्यटन कार्य को उनके उद्देश्यों के परिपेक्ष्य में वर्गीकरण किया जाना उपयुक्त प्रतीत होता है। पर्यटकों का मनोविज्ञान भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक पर्यटक अपने देश, प्रदेश व निवास की सुख सुविधाएं छोड़कर एक अनजान प्रदेश की ओर प्रस्थान इस आशय से करता है कि इससे उसकी उद्देश्य की प्राप्ति होगी और वास्तविक आंकलन पर्यटन स्थल को भ्रमण के पश्चात् व्यक्ति या समूह द्वारा किया जाता है। यह आंकलन भौगोलिक होता है और इसके प्रचार प्रसार के बारे में उसकी छवि निर्माण में सहायक होता है।

पर्यटक समय की सीमा में बंधा हुआ, आर्थिक वितान से बुना हुआ तथा प्रशासनिक एवं पारिवारिक विवशताओं से घिरा हुआ उपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए पर्यटन पर आता हे। उसके सामने कम से कम समय में अधिक से अधिक देखने की लालसा रहती है। इसके लिए उसे आवास, भोजन,स्थानीय यातायात, पर्यटक गाइड सुविधाएं तथा अन्य सेवाएं व सुविधाएं उचित दर पर मिलना आवश्यक है। पर्यटक अपना कार्यक्रम उपरोक्त सभी पक्षों को विचार करने के पश्चात् ही बनाता है। समूहों ` लिए आयोजित पैकेज टूर एक निर्धारित समय सीमा में पूरे किए जाते है परन्तु इनकी सीमा यह रहती है कि व्यक्ति अपनी इच्छानुसार समय व्यतीत नहीं कर पाता । परन्तु पैकेज टूर सस्ता एवं समयबद्ध होता है और इसमें सभी निर्धारित स्थलों पर पर्यटकों को ले जाया जाता हे। व्यक्तिगत पग्रटन में लचीलापन रहता है और पर्यटक स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार स्थान व समय सीमा में परिवर्तन करने के लिए स्वतंत्र होता है।

राजस्थान आने वाले पर्यटक अधिक से अधिक समय राजस्थान के पर्यटन स्थलों को दें इस दृष्टि से राजस्थान को 10 पर्यटक मण्डलों में बांटा गया है इनमें से मरु क्षेत्र के दो पर्यटक मण्डल पूर्ण तथा दो आंशिक रूप से हे। पर्यटक मण्डलों का गठन इस प्रकार किया गया है कि पर्यटक सम्बन्धित मण्डल में भ्रमण करते हुए वे सभी आकर्षक पर्यटन स्थल देखे जो रुचिकर हैं। मरुक्षेत्र के पर्यटक मण्डल ;ज्वनतपेज बपतबनपजद्ध हैं। – ;पद्ध शेखावटी सर्किट – सीकर, झुंझनू व चुरु जिले, ;पपद्ध मरु सर्किट क्षेत्र– बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर ;पपपद्ध जालोर पाली, सिरोण ;पअद्ध येरवाड़ा क्षेत्र – अजमेर, पुष्कर, मेड़ता, नागौर। इनमें से तृतीय में जालौर और पाली तथा चतुर्थ सर्किट में मेडता व नागौर मरु क्षेत्र के भाग हैं।

ऐतिहासिक पर्यटन स्थल : ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों में से सभी भौतिक स्थल यथा दुर्ग किले, महल आदि आते हैं जिनकी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि है। मरु क्षेत्र में बहुत से राजे राजवाड़े थे अतः उनके द्वारा निर्मित भौतिक स्थल ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की श्रेणी में आते हैं। जिन क्षेत्रों में लड़ाइयां लड़ी गई और जिनका पुरातत्व महत्व अभी अस्तित्व में हैं वे स्थल भी दर्शनीय स्थल माने जाते हैं। प्रत्येक राज्य का प्राचीन इतिहास इन धरोहरों की पृष्ठ भूमि है और इनको देखने वाला प्रत्येक पर्यटक अधिक से अधिक रोचक जानकारी प्राप्त करने का इच्छुक होता है। यह कार्य पर्यटन गाइड निभाते है और उन स्थलों के बारे में दर्शकों की रुचि के अनुसार जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

ऐतिहासिक महत्व के किलों में जोधपुर का मेहरानगढ़ किला, जालौर, नागौर, जैसलमेर, शेरगढ़, बीकानेर के किले प्रमुख हैं। स्वतंत्रता के पूर्व राजाओं द्वारा स्थापित नगरों का अपना इतिहास है। अपने राज्य की रक्षा के लिए प्रत्येक राज्य दुर्ग निर्माण करता था जो राज्य के विस्तार और सुरक्षा की आवश्यकता की दृष्टि से बनाए जाते थे। मरु क्षेत्र के प्रत्येक जिले में एक या कई राज्य थे जिनके पृथक दुर्ग थे। समय परिवर्तन के साथ इनका अस्तित्व युद्धों के माध्यम से होता रहा और आवश्यकतानुसार नवीन राजधानियां बनी। कुछ राज्य समय के अनुसार दूसरे राज्यों में विलय होते रहे। मरुक्षेत्र के जिलों में स्थित दुर्गों का विवरण और उनकी पर्यटन दृष्टि से महत्ता का विवरण निम्न प्रकार है–

(1) बाड़मेर : बाड़मेर 25ह्45श उत्तरी अक्षांश तथा 71ह्23श पूर्वी देशान्तर पर स्थित हे और इसका प्राचीन इतिहास है इसे रावत भीमा जी द्वारा बसाया गया था जो चट्टानी पहाड़ी पर स्थित है तथा प्राचीन किले के खण्डहर अवशेष हैं। वर्तमान शहर बाड़मेर के उत्तर–पश्चिम में एक विशाल दुर्ग के अवशेष है जिसकी लम्बी प्राचीर इसके विशाल दुर्ग होने का परिचय देती हैं। 1295 ई. महाराज कुल श्री सामन्त संहदेव के वृहद्मेरु पर राज्य करने के प्रमाण हैं। प्राचीन दुर्ग के अवशेष पर्यटन की दृष्टि से इसके इतिहास और मान्यता के परिचायक हैं।

बाड़मेर जिले का सिवाना कस्बा छप्पन–का–पहाड़ नामक पहाड़ी पर स्थित हे यह कस्बा 954 ई. में वीर नारायन परमार द्वारा बसाया गया था जो कुम्थाना नाम से विख्यात था। 1308 ई. में इसे अलाऊद्दीन खिलजी ने जीतकर छः वर्ष तक अपने अधीन रखा था। यह स्थान अपने ऐतिहासिक किले के लिए विख्यात हे जिस पर विभिन्न राजाओं का आधिपत्य रहा। आज यह एक पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है और देशी विदेशी पर्यटक इसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होते हैं।

(2) बीकानेर : बीकानेर की स्थापना वर्ष 1488 ई. में राव बीका द्वारा की गई और उन्ही के नाम पर इसका नाम पड़ा। यह राज्य आजादी तक एक ही राजवंश के अधीन रहा। प्राचीन धरोहर में से बीका–की–टेकरी नामक पुराना किला सुरक्षित है परन्तु इसकी चारदीवारी शहर की बसावट के कारण नष्ट हो गई है। बीकानेर के राजा गंगासिंह के समय में राज्य का विस्तार गंगानगर तक था

और आजादी के पूर्व गंगानहर, भाखड़ा नहर बनी तथा इंदिरागांधी नहर की रूपरेखा तैयार की गई। बीकानेर के तीसरे राजा राव लूनकरण द्वारा लूनकरणसर की स्थापना की गई जो पूर्व बीकानेर राज्य का एक भाग था।

(3) चुरु : चुरु की अवस्थिति 28ह 18श उत्तरी अक्षांश तथा 74ह58श पूर्वी देशान्तर पर है तथा यहां प्राचीन किला व ऐतिहासिक महत्व के अवशेष है। चुरु जिले के राजगढ़ कस्बे को बीकानेर के राजा महाराजा गंजसिंह द्वारा 1766 ई. में बसाया गया था और अपने पुत्र राजसिंह के नाम पर इसका नामकरण राजगढ़ किया था। रतनगढ़ कस्बे की स्थापना 1787–1828 के बीच बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह द्वारा की गई थी और 1828–51 में शासक महाराजा रतनसिंह ने इसकी स्थापना की थी तथा एक किला बनवाया था। चुरु जिले के सुजानगढ़ कस्बे में भी एक छोटा किला जीर्णशीर्ण अवस्था में है तारानगर कस्बे को कुछ शताब्दियों पूर्व राजा रानीपाल ने बसाया था और इसे रानी के नाम से भी जाना जाता है जहां एक पोल बना हुआ है।

(4) गंगानगर : गंगानगर शहर 29ह55श उत्तरी अक्षांश और 73ह52श पूर्वी देशान्तर पर स्थित ह। तथा यह बीकानेर राज्य का भाग रहा था। 1927 ई. में महाराजा गंगासिंह द्वारा गंगानगर के निर्माण के पूर्व यह स्थान रामनगर नाम का एक गांव था परन्तु तत्कालीन महाराजा ने इसका नाम बदलकर गंगानगर रखा था। गंगानगर का अनूपगढ़ कस्बा पूर्व में गुन्धेर के नाम से जाना जाता था और एक प्राचीन किला भाटी राजाओं के अधीन रहा। बाद में यहां राठौड़ राजवंश ने कब्जा कर लिया। इसका नाम बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह 1669–98 ई. के शासक के नाम पर पड़ा जिसने पुराने किले के स्थान पर नए किले का निर्माण वर्ष 1678 में कराया जो आज भी विद्यमान हे। सूरतगढ़ कस्बे की स्थापना 1805 में बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह के नाम पर हुई जिन्होने एक किले का निर्माण कराया था जो आज भी विद्यमान है।

(5) हनुमानगढ़ : यह कस्बा पूर्व में भारनेर के नाम से प्रसिद्व था तथा इसका प्राचीन इतिहास वैभवपूर्ण था परन्तु कई लड़ाइयों के दौरान यह काफी नष्ट हुआ। इसका किला भी वर्तमान में खण्डहर के रूप में अवस्थित है। इसका नाम हनुमानगढ़ बहुत बाद में पड़ा। भाखड़ा नहर के निर्माण के पश्चात् यह स्थान काफी उन्नति की ओर अग्रसर हुआ।

(6) जालौर : जालौर कस्बा 25ह21श उत्तरी अक्षांश व 72ह31श पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित हे और जवांई नदी के बाएं किनारे पर बसा हुआ है। प्राचीन व मध्य कालीन युग में यह स्थान जबालीपुरा के नाम से जाना जाता था आठवीं शताब्दी में यहां प्रतिहार राजा का शासन था। बाद में नादोल के शासक सोनीगरा चौहान की राजधानी बना। यहां का किला और महल समय समय पर दिल्ली के सुल्तान, गुजरात के सुल्तान, मारवाड़ के राठौड़, देहली के मुगल सम्राट के अधीन रहा और इसके बाद पुनः मारवाड़ के शासकों के अधीन आया। जालौर एक संस्कृति का केन्द्र रहा था और हिन्दू शासक कला और संस्कृति के महान उपासक थे। जालौर का प्रसिद्ध दुर्ग प्राचीन काल के परमार शासकों ने बनाया था और कस्बे की दक्षिणी पहाड़ी पर स्थित है।

जालौर जिले का जसवन्त पुरा कस्बा लोहियाना नाम से स्थापित था परन्तु जागीरदारों व उनके भील अनुयाइयों के विनाशधारी कृत्य से यह पूरी तरह धराशायी हो गया। बाद में 1883–84 में इसका पुनः निर्माण हुआ। जोधपुर के शासक ने इसे ग्रीष्म कालीन महल के रूप में बनवाया था क्योंकि यहां की जलवायु बहुत सुखद थी और यह मारवाड़ का आबू के नाम से जाना जाता था। यहां सोनगारा चौहान वंश के 19 वंशजो ने राज्य किया था।

सांचौर एक प्राचीन धरोहर है इसके प्राचीन नाम सत्यपुरा और सचौरा रहे हैं। मुस्लिम शासन में इसका नाम बदल कर महमूदपुरा हो गया था। यह गुजरात के सोलंकी वंश, जालौर के सोनगरा वंश, जालौर के पठान, मुगल सम्राट व मारवाड़ के राठौड़ शासकों के अधीन रहा। यह जैन और शैव संस्कृतियों का प्राचीन केन्द्र रहा है।

(7) जैसलमेर : जैसलमेर शहर 26ह55श उत्तरी अक्षांश और 70ह55श पूर्वी देशान्तर पर स्थित है तथा भाटी वंश के शासक राव जैसल द्वारा स्थापित किया गया था और उन्हीं के नाम पर इसका नामकरण किया गया। यह छोटी पर्वत श्रृंखला के दक्षिण में स्थित है तथा पत्थर की दीवारों से बना है जिसमें विभिन्न निकास रखे गए थे। यहां के किले के चार लगातार द्वार हैं। शासकों ने मुख्य प्रवेश द्वार धातु के छतरी आकार के रूप देकर पत्थर की चट्टान पर बनाया था। यह आज भी एक दर्शनीय स्थल है क्योंकि इसकी बनावट बेमिसाल है।

पोखरण कस्बें में भी एक पुराना किला बना हुआ है। इसके समीप रामदेवरा गांव है जो बाबा राम शाह पीर की समाधि स्थल होने से काफी विख्यात है यहां बाबा ने समाधि 1458 में ली थी परन्तु बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने 1931 में समाधि स्थल के समीप विशाल मन्दिर का निर्माण कराया था जो ऐतिहासिक महत्व की वस्तु बन गया है।

(8) झुंझनू : झुंझनू शहर अत्यन्त प्राचीन हे और एक धार्मिक स्थल के रूप में विख्यात है। यह शेखावाटी का मुख्य पर्यटन केन्द्र है जहां देशी विदेशी पर्यटक आते हैं। यह एक प्राचीन व्यावसायिक केन्द्र के रूप में विख्यात रहा है। यहां बहुत से महल, चित्रकारी आदि आकर्षण के केन्द्र हैं। लोहारगल एक प्राचीन गांव है और पाण्डवों के समय से महाभारत काव्य में वर्णित है जहां पांडव अज्ञातवास का समय बिताने के लिए रहे थे। नवलगढ़ कस्बे में प्राचीन दुर्ग आज भी विद्यमान है तथा व्यावसायिक केन्द्र होने से बहुत से महल, चित्रकारी आदि देखने पर्यटक आते हैं। जिले का पिलानी कस्बा शैक्षणिक केन्द्र के रूप में विख्यात है। उदयपुरवाटी एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है।

(9) जोधपुर : जोधपुर शहर 26ह18श उत्तरी अंक्षाश और 73ह01श पूर्वी देशान्तर पर स्थित एक प्राचीन राज्य था जिसकी स्थापना 1459 में एक राव जोधा के द्वारा की गई और जोधपुर नाम पड़ा। आज भी पुराने शहर के चारों ओर परकोटा बना हुआ हे जिसके कई निकासद्वार बना लिए गए हैं। यहां का किला पहाड़ी की तलहटी में बना है जिसमें म्यूजियम, शाही महल, सुन्दर कटाई युक्त पैनल, उभरी आकृतियां। शहर का बाहरी दृश्य किले की लड़ाई की पूरी तैयारी की दृष्टि से बना प्रतीत होता है। मण्डोर कस्बा जोधपुर के बाहरी भाग में स्थित है जो राठौड़ देश की राजधानी रहा है।

ओसियां एक प्राचीन शहर है तथा मध्यकालीन युग में यह अध्यात्म का केन्द्र रहा था। ओसवाल उपजाति के लोग इसे अपनी जलस्थली भी मानते हैं। यहां एक प्राचीन किला स्थित है जिसके इतिहास का यथेष्ठ प्रमाण नहीं मिलता है। यह एक मुख्य नमक उत्पादक क्षेत्र भी है।

(10) नागौर : नागौर शहर 27ह्म12श उत्तरी अक्षांश तथा 73ह्म44′ पूवी देशान्तर पर स्थित हैं। यहां का किला अब जीर्ण शीर्ण अवस्था में है तथा पुराने शहर की चारदीवारी में सुविधानुसार विकास द्वारों का निर्माण किया गया है। लघु उद्योग क्षेत्र में काम काफी बड़े पैमाने पर होता है। नागौर का डीडवाना कस्बा पूर्व में ब्रदवानक नाम से विख्यात था तथा इस पर चौहान वंश, मुगल सम्राटों, राठौड़ व कछवाहा वंश के शासकों ने राज्य किया। कुछ समय डीडवाना झुंझनू के नवाब के अधीन रहा तथा बाद में जोधपुर के राठौड़ वंश के राजा के अधीन हो गया। दौलतपुरा में तांबे की प्लेट खुदाई में मिलने से इस क्षेत्र के 896 ई. में अस्तित्व का प्रमाण मिलता हे। डीडवाना की चार दीवारी अब विनाश के कगार पर है।

जिले का लाडनूं कस्बां 10वीं शताब्दी में अतित्व में था तथा यहां स्थित किला विक्रम संवत 100 में निर्मित होने का प्रभाण है मेड़ता सिटी की स्थापना जोधपुर के राव जोधा के चौथे पुत्र पूवा द्वारा 15वीं शताब्दी में की गई तथा राव माधों ने माल कोट नाम का किला बनवाया जो अब खण्डर के रूप में स्थित है परवतसर कस्बे के बारे में चौहान वंश के साम्राज्य के अधीन होने के प्रमाण मिलते हैं।

(11) पाली : पाली शहर का अस्तित्व प्राचीन काल में होने के प्रमाण हैं। मध्यकाल में यहां चीन व मध्यपूर्व व्यापार होता था। पाली शहर वांड़ी नदी के किनारे स्थित 25ह्म47श उत्तरी अक्षांश तथा 73ह्म20श पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह सूती ऊनी, रेशमी कपड़े की रंगाई का प्रमुख केन्द्र है यहां के पानी में एक विशेषता है जिससे रंगाई पक्की और आकर्षक होने से विख्यात है। यहां 11वीं शताब्दी के मन्दिर अभी भी ठीक अवस्था में हैं। पाली का वेसूरी कस्बा अरावली पर्वत श्रृंखला के बीच सूकड़ी नदी पर स्थित हैं। यहां का किला जीर्णशीर्ण अवस्था में है तथा पूरा क्षेत्र पहाड़ी है। 90 वर्ष पूर्व यहां शेर जीते व भालू जंगलों में रहते थे परन्तु अब उनकी कोई प्रजाति नहीं बची है। पाली के सोजत सिटी में एक किला तथा एक जल संग्रह केन्द्र है।

(12) सीकर : सीकर शहर 27ह्म37श उत्तरी अक्षांश तथा 75ह्म08श पूर्वी देशान्तर पर स्थित है तथा 1687 में स्थापित हुआ था तथा जयपुर राज्य के आधीन रहा है। यहां एक किला आज भी सुरक्षित है तथा शहर का विशाल परकोटा इसकी भव्यता को दर्शाता है जिलें का दांतारामगढ़ यहा कस्बा दांता और रामगढ़ दो गांवों को मिलाकर बना है तथा एक छोटे किले के अवशेष रामगढ़ में स्थित हैं। सीकर जिले का फतेहपुर कस्बा एक महत्वपूर्ण पर्यटक केन्द्र है। मध्यकाल में यह कस्बा कायम खां के नवाब वंशजों के अधीन रहा तथा किला जीर्णशीर्ण अवस्था में है। यहां की भव्य इमारतें आकर्षण का केन्द्र है तथा एक व्यापारिक केन्द्र भी हैं। खण्डेला कस्बें को खण्डेलवाल ब्राह्मण व वैश्य की जन्मस्थली के रूप में माना जाता है। इसके खण्डेल राज्य होने के भी प्रमाण हैं तथा यह पहाड़ियों से घिरा हुआ है। जिले का लक्ष्मण गढ़ कस्बा बड़ी चट्टान पर बसा है तथा आकर्षक व भव्यता लिए हुए है।

जिले के नीम का थाना कस्बे में खुदाई में पूर्व ऐतिहासिक काल के औजार मिले हैं जो इसके प्राचीन अस्तित्व के प्रतीक हैं इसके पास गणेश्वर में गर्म पानी का एक स्त्रोत है। रामगढ़ सेढान एक व्यापारिक केन्द्र है तथा देश के बड़े व्यापारियों की उद्‌गम स्थली है। सकराई गांव एक पर्यटक स्थल है जो सीकर से 51 किलोमीटर दूरी पर स्थित हैं।

इस प्रकार राजस्थान के मरुप्रदेश का इतिहास प्राचीन व मध्यकाल में काफी गौरवशाली रहा है जहां बहुत से छोटे छोटे राज्य थे। प्राचीन काल में सरस्वती नदी के बहाव के दौरान यह प्रदेश काफी उपजाऊ व सम्पन्न क्षेत्र रहा था।

मरुप्रदेश के धार्मिक पर्यटन स्थल : मरु क्षेत्र धार्मिक दृष्टि से काफी सम्पन्न क्षेत्र रहा है यहां के राजा महाराजाओं ने तथा व्यापारी वर्ग ने बहुत से धार्मिक स्थलों का निर्माण कराया। प्राचीन काल में जब मरुप्रदेश में यातायात का साधन ऊंट था आवागमन और यात्राएं बहुत कम होती थी परन्तु धार्मिक मान्यताओं के कारण लोग काफी दूर–दूर क्षेत्रों में यात्राएं करते थे। धार्मिक स्थलों की प्रसिद्धि के कारण पर्यटक दूर–दूर से आते थे। उनके ठहरने के लिए धर्मशलाएं बनाई गई थी तथा मार्ग में पानी के लिए कुण्ड बने हुए थे जिससे यात्रा सुरक्षित हो। लोग अपनी आस्था के अनुरूप आराध्यदेव को मानते थे तथा अपने कार्य पूर्ण होने पर धार्मिक स्थलों की यात्राएं करते थे। आज धार्मिक पर्यटकों में उस धर्म या सम्प्रदाय के लोग अपने इच्छित धार्मिक स्थलों की यात्रा करते है तथा विदेशी पर्यटकों में अनिवासी भारतीय अपनी धार्मिक मान्यताओं के कारण इन क्षेत्रों की यात्रा करते है तथा विदेशी पर्यटक इसे उत्सुकता से इन्हें देखते हैं कि लोगों की श्रद्धा और विश्वास लोगों की धार्मिक स्थलों की ओर खींचता है। धार्मिक स्थलों की स्थापत्य शैली विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है और वे इनकी बारीक कटाई, चित्रकारी आदि से अत्यन्त प्रभावित होते हैं।

स्थापत्य कला के अनुसार विभिन्न देवी देवताओं के लिए स्थापित धार्मिक स्थलों की विशेष शैली होती है और प्रायः एक देवता या देवी के मन्दिर एक ही शैली के बनाए जाते हैं। इनमें भीतरी साजसज्जा के साथ साथ बाहरी कलात्मक आकृतियां विदेशी पर्यटकों को बहुत आकर्षित करती हैं। खासतौर पर विदेशी पर्यटक विभिन्न प्रकार के पत्थरों की कलात्मक कटाई और जोड़ने के तरीके प्रभावित होते है क्योंकि सीमेण्ट के अविष्कार के पूर्व भी यहां भवन निर्माण की बेजोड़ प्रक्रिया थी जो लम्बे समय तक निर्मित स्थलों को सुरक्षित रखती थी। जिलेवार धार्मिक पर्यटक स्थलों का विवरण निम्न प्रकार है–

(1) बाड़मेर : बाड़मेर शहर में स्थित बालरिख अर्थात् सूर्य मन्दिर अति प्राचीन काल का है जिसमें लकड़ी की मूर्ति आज भी सुरक्षित है। यहां की पहाड़ी के पत्थर भवन निर्माण व छत बनाने के लिए उपयुक्त है इस कारण प्राचीन मन्दिरों में स्थानीय पत्थर का प्रयोग अधिक किया गया है। बाड़मेर से 3 किलोमीटर दक्षिण में तीन जैन मन्दिर बने हुए हैं जिनमें से बड़े पासाद का एक खम्बा अत्यन्त लम्बा है तथा 1295 ई. में बनाए जाने का प्रलेख है जिस पर वहदमेरु के महाराज कुल श्री सामन्त सिंहदेव द्वारा निर्माण कराये जाने का प्रमाण होता है। बाड़मेर का सिवाना कस्बा 954 ई.वी में स्थापित था यहां पुष्करणा ब्राह्मण के चार सन्तों के समाधि स्थल है जो इस समाज का सम्माननीय धार्मिक स्थल हैं।

(2) बीकानेर : बीकानेर शहर में स्थित लक्ष्मीनारायण मन्दिर, भाण्डासर मन्दिर, नागमीची जी का मन्दिर आदि प्रसिद्ध हैं जिसमें देशी पर्यटक बहुत संख्या में आते हैं। बीकानेर के समीप देशलोक में करणीमाता का मन्दिर है जो दैवी शक्तियों तथा विचरण करते चूहों के लिए प्रसिद्ध है। विदेशी पर्यटक इस मन्दिर में इस कौतूहल के साथ आते हैं कि मन्दिर परिसर में बड़ी संख्या में विशाल चूहों की उपस्थिति से यहां कोई बीमारी नहीं फैलती और दर्शक चूहों बीच मन्दिर के दर्शन करते हैं।

बीकानेर जिले का कोलायत कस्बा अपने विशाल तालाब के लिए प्रसिद्ध है जो हिन्दुओं के पवित्र धार्मिक तीर्थ स्थल के रूप में माना जाता है। यहां नेपाल आदि सुदूर क्षेत्र से पर्यटक आते हैं। इस पवित्र सरोवर के समीप कपिल मुनि का मन्दिर है जो भारतीय दर्शन में सांख्य शास्त्र के प्रवेता थे। यहां प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला 13 से अंग्रहण कृष्णा प्रथमा तक विशाल मेला लगता है जहां लाखों की संख्या में श्रद्धायु पर्यटक आते हैं।

(3) चुरु : चुरु शहर में कुछ प्राचीन मन्दिर अपनी मान्यता तथा धार्मिक आस्था के प्रतीक है। यहां लोक संस्कृति प्रतिष्ठान नामक अनुसंधान संस्था प्राचीन पाण्डुलिपियों के लिए प्रसिद्ध हैं। चुरु जिले के रामगढ़ कस्बे में कई धर्मशालाएं व विश्राम स्थल निर्मित किए गए हैं जो धार्मिक पर्यटकों को रास्ते में पड़ाव के रूप में प्रसिद्ध है। सरदार शहर में कई प्राचीन मन्दिर आज भी विद्यमान हैं जहां पर्यटक आस्थापूर्वक दर्शनों के लिए आते हैं। चुरु जिले में स्थित सालासर स्थित हनुमान जी का मन्दिर श्रृद्धालुओं में परम आस्था और विश्वास का प्रतीक है तथा यहां देशी व विदेशी पर्यटक मेलों में भाग लेने तथा अपनी मनौती पूरी होने पर भव्य आयोजन भी करते हैं।

(4) गंगानगर : गंगानगर जिले के कई प्राचीन मन्दिर स्थित है। सिंचाई के साधन बढ़ने से यहां अधिक संख्या में सिख सम्प्रदाय के लोग बसने के कारण विगत 50 वर्षों में कई गुरुद्वारा बने है जहां श्रद्धालु आस्थापूर्वक दर्शन करते हैं।

(5) हनुमानगढ़ : हनुमानगढ़ जिले में कई मन्दिर निर्मित है जो यहां के निवासियों के आस्था के केन्द्र हैं। पर्यटक दृष्टि से इन जिले में कोई प्रसिद्ध मन्दिर नहीं हैं जहां पर्यटकों का आना जाना रहता हो।

(6) जालौर : जालौर शहर सुवर्णगिरी के नाम से प्राचीन काल में जाना जाता था तथा यहां कई प्राचीन मंदिर आज भी अपनी भव्यता व दर्शकों की श्रद्धा के प्रतीक है। जालौर प्राचीन संस्कृति का केन्द्र रहा है जहां हिन्दू राजाओं ने कला व संस्कृति के विद्वानों के प्रश्रय दिया थां यहारं शिव के उपासक व जैन धर्म के प्रसिद्ध मुनि आचार्यो की पीइ रहीं है जहां लोग श्रद्धापूर्वक आते हैं। आठवीं शताब्दी में उद्योतन सूरी ने यहां कुवलयमाला काव्य की रचना की तथा 1455 ई. में पद्यमनाभ ने कान्हादास प्रबंध का सृजन किया।

जसवन्तपुरा कस्बे में चट्टानों को काटकर गुफा में एक चामुण्डादेवी का प्रसिद्ध मन्दिर है जहां सोनगरा चौहान वंश के 19 पीढ़ियों से देवी के उपासक रहे हैं। आज देशी पर्यटक विभिन्न भागों से यहां अपनी आस्था के अनुसार दर्शन करने आते हैं। सांचौर कस्बा शैव उपासकों व जेन संप्रदाय के लोगों का केन्द्र रहा है प्राचीन काल में यह सत्यपुरा के नाम से विख्यात था। यहां जेन संप्रदाय की एक पीठ है जहां धार्मिक गुरु धर्म के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य करते है क्योंकि यहां दुर्लभ साहित्य की पांडुलिपियां सुरक्षित रखी हैं।

(7) जैसलमेर : जैसलमेर शहर में हिन्दू व जैन धर्म के कई प्राचीन मन्दिर स्थित है जहां पर्यटक बड़ी संख्या में प्रतिवर्ष आते है। यहां प्राचीन धर्मग्रंथों की पांडुलिपिया रखी है जिसे भण्डार कहते हैं। इन दुर्लभ ग्रंथों को पढ़ने, अनुसंधान करने के लिए धार्मिक व्यक्ति यहां आते हैं। यहां बहुत सी धर्मशाला स्थित है जहां पर्यटक नाममात्र की दानराशि देकर निवास करते हैं। पोकरण कस्बे में कुछ मंदिर व मस्जिद प्राचीन धरोहर के रूप में आज भी विद्यमान है जहां पर्यटक धार्मिक आस्था से आते हैं। जैसलमेर का रामदेवरा ग्राम धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है। प्रसिद्ध धर्मगुरू बाबा रामदेव जी ने यहां निवास किया तथा 1458 ई. में उनकी समाधि बनाई गई। यहां हिन्दू और मुस्लिम धर्म के लोग निरन्तर धार्मिक भक्ति से प्रभावित होकर आते है और अपनी मनोकामना पूरी करते हैं। यहां धार्मिक पर्यटक प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में आते हैं।

(8) झुंझुनू : यह शहर शेखावाटी क्षेत्र का प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल है यहां प्रतिवर्ष देशी व विदेशी पर्यटक आते हैं। यहां का बिहारी मन्दिर, कमरुद्दीन शाह की दरगाह लक्ष्मीनाथ मन्दिर प्रसिद्व यहां के मन्दिर अपनी भव्य बनावट शैली के लिए प्रसिद्ध हैं और विदेशी पर्यटक इस दृष्टि से देखने में रुचि दिखाते हैं। जिले में लोहारगल नामका छोटा कस्बा है जो महाभारत काव्य में वर्णित होने से आज भी धार्मिक आस्था का केन्द्र है। यहां पाण्डवों ने वनवास के दौरान अज्ञातवास किया था क्योंकि इसकी पहुंच काफी दुर्गम है। यहां वर्ष में दो बार मेला भरता है और देशी विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। यह क्षेत्र पहाड़ियों से घिरा है और जलस्त्रोतों के लिए विख्यात है।

झुंझुनू का मुकन्दगढ़ नामक कस्बा व्यवसाइयों की जन्मस्थली है यहां के लोग देश विदेश में व्यापार में संलग्न हैं और अपने शहर में आस्था स्वरूप कई मन्दिर बनवाएं इनमें शिव मन्दिर, गोपीनाथ मन्दिर आदि पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र है क्योंकि मन्दिरों में कलात्मक पत्थरों को संजोया गया है। नवलगढ़ कस्बा शेखावाटी क्षेत्र का प्रमुख धार्मिक पर्यटक स्थल है यहां मन्दिरों में वास्तुशिल्प अद्वितीय है। पिलानी कस्बा विरला व्यापार समूह के सेठों की जन्मस्थली है जिन्होंने यहां के अतिरिक्त देश में विभिन्न स्थानों पर लक्ष्मीनारायण मन्दिर का निर्माण कराया जिनकी वास्तुकला एक जैसी है।

उदयपुरवाटी झुंझुनू का एक प्रमुख कस्बा है जो पर्यटन केन्द्र के रूप में विख्यात है। यहां जोगीदास शाह की छत्री पर लोग दूर दूर क्षेत्रों से आते हैं। इस क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक स्थल लोहारगल और किरोड़ीजी है। सिकराय माता के मन्दिर जाने वाले यात्रियों के लिए धर्मशालाओं में पर्याप्त व्यवस्था की जाती है।

;9द्ध जोधपुर

मारवाड़ क्षेत्र का यह प्रमुख शहर है और 1459 ई. में राव जोधा द्वारा बसाया गया था जिन्होंने नगर स्थापना की वास्तुविधि के अनुरूप कई मन्दिर भी बनवाए जो आज भी देशी पर्यटकों के धार्मिक लोकप्रियता के केन्द्र हैं। प्राचीन मन्दिरों की भव्यता उनके वास्तुशिल्प व बाहरी दीवारों पर पत्थरों की कलात्मक कटाई दर्शकों को मोह लेती हैं विशेषकर विदेशी पर्यटक इस कला को आश्चर्य मानते हैं। शहर धार्मिक समभाव का प्रतीक है क्योंकि इसमें प्राचीन हिन्दू और जैन मन्दिर हैं, मस्जिद व गिरिजाघर हैं जो उनके

अनुयायियों में पर्यटक केन्द्र हैं। एक किदवन्ती के अनुसार जोधपुर के प्राचीन भाग के प्राचीन काल से जोड़ते हैं और मण्डोर को रावण की पत्नी मन्दोदरी के जन्म निवास स्थल के रूप में मानते हैं इस दृष्टि से यह भाग एक विख्यात पर्यटक स्थल है।

ओसियां शहर को प्राचीन काल में ब्राह्मणों के धर्मस्थल के रूप में मानते हैं मध्यकाल में जैन सम्प्रदाय के वैभव काल के रूप में तथा प्राचीन मन्दिरों के विशाल परिसर स्थलों के रूप में आज भी पर्यटक का केन्द्र मानते हैं और यहां जैन धर्म के पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं। यहां ओसवाल सम्प्रदाय के लोगों की जन्म स्थली के रूप में माना जाता है अतः इस धर्म के लोग बड़ी संख्या के यहां अपने धार्मिक कार्यों से आते हैं। फलौदी के जैन मन्दिर धार्मिक आस्था के प्रतीक है और जैन धर्म के अनुयायी यहां लम्बे समय तक प्रवास करते हैं।

;10द्ध नागौर : नागौर मुस्लिम शासकों के शासन के कारण उनके मस्जिद, दरगाह व अन्य धार्मिक स्थल मुस्लिम धर्म के पर्यटकों के बीच काफी विख्यात हैं। यहां कई प्राचीन मन्दिर हिन्दू धर्म के लोगों में विख्यात है और पर्यटक काफी संख्या में वर्ष भर आते रहते हैं। डीडवाना शहर में प्राचीन कछवाह, राठौड़, चौहान व मुगल सम्राटों के काल के मन्दिर व मस्जिद इस धर्म के अनुयायियों के आस्था के केन्द्र है और धार्मिक अनुयायी अपने धर्मस्थलों पर पर्यटक के रूप में आते हैं। जायल कस्बे में शाह समन्द दीवान की प्राचीन दरगाह एक आकर्षक स्थल है और मुस्लिम समाज के लोग यहां वर्ष भर आते रहते हैं। यहां से कुछ दूर रोल गांव में मोहम्मद साहब की मस्जिद एक प्रमुख मुस्लिम धर्म स्थल हैं। मंगलोद गांव में दधीमती माता का मन्दिर हिन्दू अनुयायियों का धार्मिक पर्यटक स्थल है।

लाडनूं कस्बे के प्राचीन मन्दिर 10 वीं शताब्दी मे बनवाए गए थे और आज भी सुरक्षित है। धार्मिक पर्यटक यहां बड़ी संख्या में आते हैं। व्यापारी वर्ग के लोग जो राज्य से बाहर तथा विदेशों में रहते हैं अपने धार्मिक कार्यो के लिए यहां पर्यटक के रूप में आते हैं। यहां के पार्श्वनाथ श्वेताम्बर मन्दिर व शान्तिनाथा स्वेताम्बर मन्दिर जैन धर्म के अनुयायियों के प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटक केन्द्र हैं। जैन विश्व भारती की जैन धर्म के अनुसंधान केन्द्र के रूप में मान्यता है जहां इनके धर्मावलम्बी धार्मिक अध्ययन के लिए आते हैं।

मेड़ता सिटी में कई प्राचीन मन्दिर व मस्जिद सम्बन्धित धार्मिक अनुयायियों के पर्यटक केन्द्र हैं। यहां की जामा मस्जिद मुस्लिम धर्मावलबिंयों का पर्यटक केन्द्र है जहां बड़ी संख्या में धार्मिक पर्यटक आते हैं। चारभुजा मन्दिर बहुत प्राचीन है तथा आज भी सही स्थिति है जहां बहुत से धार्मिक पर्यटक वर्षभर आते हैं और अपनी धार्मिक क्रियाएं करते है। नागौर के परवतसर कस्बे में अगस्त–सितंबर माह में तेजाजी का मेला भरता है जहां दूर से पर्यटक आते हैं यहां पशुओं की बड़ी मात्रा में खरीद–बिक्री होती है तथा व्यापारिक कार्य भी संपन्न होते हैं।

(11) पाली : पाली शहर के 11 वीं शताब्दी के मन्दिर पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं। यहां प्राचीन काल में संस्कृत की अपभ्रंश भाषा पाली या प्रावृत बोली जाती थी। पाली के देसूरी कस्बे में प्राचीन मन्दिर व मस्जिद धार्मिक पर्यटक क्षेत्र के रूप में विख्यात है। पाली जिले का नांदोल गांव चौहान राजाओं की शाकम्भरी राज्य की राजधानी रहीं है। रानी में पार्श्वनाथ का प्राचीन जैन मन्दिर अपने कलात्मक स्वरूप के लिए पर्यटकों में विख्यात है। यहां पौष कृष्णा दशमी को वार्षिक मेले में लाखों की संख्या में पर्यटक आते है। देसूरी से सात किलोमीटर दूर नरताई गांव के प्राचीन मन्दिर पुरातात्विक विशिष्टता व सुन्दरता के प्रतीक है जहां दूर दूर के पर्यटक दर्शनों लिए आते हैं यहा क्षेत्र जैन संप्रदाय के पांच प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है इसलिए काफी विख्यात है। देशी विदेशी जैन संप्रदाय के लोग यहां अपनी धार्मिक भावना व श्रद्धा स्वरूप दर्शनों के लिए आते हैं। सादड़ी कस्बे में प्रसिद्ध हिन्दू और जैन मन्दिर स्थित है जो अति प्राचीनकाल के बने होने के लिए विख्यात है अतः धार्मिक पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। बाबा खुदाबक्ष की दरगाह अपने धार्मिक अनुयायियों का पवित्र धार्मिक केन्द्र है। सोजत सिटी को अति प्राचीन क्षेत्र के रूप में जाना जाता है यहां का ऐतिहासिक काल धार्मिक वैभव का प्रतीक माना गया है। पुराने मन्दिर व धीर मस्तान की दरगाह अपने धर्मावलम्बियों का पर्यटक धार्मिक स्थल है।

(12) सीकर : सीकर जिले के छोटे बड़े बहुत से धार्मिक स्थल है जिनका अपना अतीत है और धार्मिक आस्था के प्रतीक है। सीकर शहर के निकट हर्ष पहाड़ी अरावली श्रृंखला की सर्वोच्च चोटी हैं। इस पहाड़ पर स्थित एक शिव मन्दिर आठवीं सदी में बनाया गया था यहां अब जीप से जाना संभव है तथा पुरातत्व विभाग में प्राचीन धरोहर मानकर संरक्षण में ले लिया है। फतेहपुर शेखावटी कस्बा अपने प्राचीन मन्दिरों, मस्जिद व दरगाह के लिए प्रसिद्ध है।

लक्ष्मणगढ़ प्राचीन हिन्दू मन्दिरों व मस्जिदों के लिए प्रसिद्ध है । यहां का हनुमान मन्दिर दूर दूर के पर्यटकों से सदैव भरा रहता है। नीम का थाना के निकट गणेश्वर गांव का प्राचीन इतिहास मिला है जिससे इसकी पूर्व ऐतिहासिक काल में उपस्थित रहने के प्रमाण है यहां गर्म पानी के स्त्रोत को देखने के लिए विदेशी पर्यटक आते हैं तथा प्रतिवर्ष मेला भी भरता है। सीकर से 40 किलोमीटर दूर जीणमाता का मन्दिर एक पहाड़ी पर स्थित है यहां साल भर धार्मिक पर्यटक दूर–दूर से अपने धार्मिक कार्यों व आस्था के कारण आते हैं।

मरु क्षेत्र में बहुत से धार्मिक स्थल होना यहां के लोगों की धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं मरुस्थलीय क्षेत्र में अकाल का प्राकृतिक प्रकोप काफी विख्यात है और अपने देवी देवताओं की प्रसन्न करके लोग अपने धार्मिक विश्वास को सुदृढ़ करके आपदाओं से संघर्ष करते हैं। यहां के मूल निवासी देश के विभिन्न भागों में बसे है और विदेशों में बहुत संख्या में व्यापार में लगे हैं। अपने धार्मिक कार्यों की पूर्ति के लिए पर्यटक के रूप में अपनी सुविधानुसार आते रहते हैं। बहुत से मन्दिरों में लोग बड़े बड़े समूह में आज भी पैदल जाते है जो उनकी धार्मिक भावना को उजागर करता है।

पर्यटन महत्व के भित्ति चित्र : मरु क्षेत्र के भवनों में भित्ति चित्र बनाने की परम्परा बहुत प्राचीन है। सीमेन्ट के आविष्कार के पहले चूने से पत्थरों की चिनाई की जाती थी और चूने में कुछ स्थानीय पदार्थों का मिश्रण करके पत्थरों को जोड़ने में प्रयोग किया जाता था जिससे मिश्रण का लेप पत्थरों को मजबूती से पकड़ करता था और प्राचीन भवनों के लम्बे समय तक सुरक्षित रहने का यह एक प्रमुख कारण था। भवन की दीवारों, छत और फर्श पर लेप के प्रथक मिश्रण तैयार किए जाते थे और मिश्रण तैयार करने की

प्रक्रिया बहुत जटिल एवं समय लेती थी। प्राचीन भवनों का निर्माण आज की तुलना में बहुत अधिक समय लेता था परन्तु कार्य टिकाऊ और कलात्मक होता था। प्राचीन काल के भवन आज की तुलना में काफी अधिक विशाल होते थे और धरातल से काफी अधिक ऊंचाई तक आधार लिया जाता था। भवन निर्माण प्रायः राजपरिवार व धनाढ्यों द्वारा ही कराया जाता था और यह उनकी प्रतिष्ठा से जुड़ा होने के कारण वास्तु शिल्प व कलात्मक स्वरूप लिए हुए होता था।

दीवारों और छत पर लेप के विभिन्न प्रकार थे। एक तरीके में भवन के अन्दर कमरों का फर्श विशेष प्रकार के मिश्रण से तैयार होता था जिसमें चिकनाहट संगमरमर के पत्थर जैसी होती थी। फर्श से सटी दीवारें आधी ऊंचाई तक भिन्न प्रकार के कलात्मक लेप से तैयार की जाती थी जिसकी चिकनाहट भी संगमरमर के पत्थर जैसी होती थी। ऐसी चिकनाहट युक्त दीवारों पर चित्रकारी की जाती थी। दूसरे प्रकार में फर्श व दीवारों के अलावा भीतरी छत पर एक विशेष प्रकार का लेप लगाया जाता था जो कांच के समान चमकदार व प्रतिबिम्बित होता था। भित्ति चित्रों में प्रयुक्त होने वाले पदार्थ चूने के साथ विभिन्न अनुपातों में मिश्रित किए जाते थे जिससे इनकी चमक चिर स्थायी होती थी। चित्रकारी वाली दीवारों या छतों की भीतरी भाग में प्रयुक्त होने वाले रंग वनस्पति से तैयार किए जाते थे और उनकी चमक लम्बे समय तक धूमिल नहीं होती थी।

भित्तिचित्र निर्माण प्रक्रिया मरुप्रदेश की विशेषता है तथा इनमें प्रयुक्त होने वाले पदार्थ स्थानीय उपलब्धता को दृष्टिगत रखते हुए मिश्रित किए जाते थे। प्रत्येक मिश्रण की घुटाई काफी समय तक एक सुनिश्चित प्रक्रिया के अनुसार की जाती थी और तैयार लेप की गुणवत्ता की जांच परख करने के पश्चात भी इसका उपयोग किया जाता था। आज के समय में सीमेन्ट व अन्य भवन सामग्री प्रायः तैयार स्वरूप में मिलती है जिसके कारण किसी विशाल भवन का निर्माण भी एक या दो वर्षों में पूरा हो जाता है परन्तु प्राचीन भवनों की बनावट को देखकर यह ज्ञात होता है कि जब सीमेन्ट व बजरी, कटाई युक्त पत्थर व ईंटे तैयार रूप में नवीं मिलती थी तब इनको स्थानीय कारीगरों द्वारा उपयुक्त आकार में कटाई के पश्चात् ही प्रयोग में लाया जाता था। देशी व विदेशी पर्यटक वास्तव में मरु क्षेत्र में आकर यहां के भवन निर्माण की प्रक्रिया और इतने वर्षों के पश्चात् भी चित्रकारी व कारीगरी की चमक देखकर अचंभित रह जाते हैं।

मरु क्षेत्र में प्राचीन भित्ति चित्रों में से शेष बचे भवनों में से राजाओं के दुर्ग में स्थित शयन कक्ष, अतिथि कक्ष, धनाढ्य व सम्पन्न व्यक्तियों के द्वारा उपयोग के लिए बनाए गए प्रासादों, प्राचीन मन्दिरों, छतरियों व शिकार या भ्रमण के दौरान ठहरने के लिए बनाए गए भवनों, धर्मशालाओं में अभी भी पूर्णतः या आंशिक रूप से सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त भित्ति चित्रों की श्रेणी में आकार चित्र जैसे भित्ति, देवरा, पथवारी आदि भी पर्यटन क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखते है क्योंकि इन भिन्ति चित्रों की पृष्ठभूमि में इनके निर्माण का विशेष उद्देश्य होना है। अन्य श्रेणी के भित्ति चित्रों में आमूर्त, सांकेतिक, ज्यामितीय, सांझी व मांडना आदि आते हैं। जो विभिन्न कारणों से तैयार किए जाते थे।

भित्ति चित्रों का कथानक भी एक महत्वपूर्ण पहलू है जिसे दृष्टिगत रखकर भित्ति चित्रों का निर्माण किया गया था। किलों में स्थित राजप्रासादों में निर्मित भित्ति चित्र मुख्यतया भवन निर्माण के काल के राजा की मानसिकता को आधार मानकर बनाए जाते प्रतीत होते हैं। कुछ राजप्रसादों में निर्मित भित्तिचित्र देवी देवताओं को आधार मानकर बनाए जाते थे। शिकार के शौकीन व पारंगत राजाओं के महलों के भित्तिचित्रों में पशुओं के भयानक या शिकार करते हुए दृश्य बनाए गए हैं। मुगल कालीन सभ्यता में निर्मित राजप्रासादों या राजा के शयन कक्ष के भीतर निर्मित चित्र सुन्दरी महिलाओं, रतिक्रिया, सम्मोहन या इसी पृष्ठभूमि के कथानक मानकर तैयार किए गए हैं।

बीकानेर के जूनागढ़ किले में बाहरी भाग जितना सुन्दर है भीतरी भाग उतना ही भव्य व आकर्षक है। जनानी ड्यौढी से लेकर त्रिपोलिया तक पांच मंजिल महलों की लम्बी श्रृंखला नयनाभिराम लगती है। यहां प्रमुख महलों में फूल महल, चन्द्रमहल, राजमन्दिर, लता निवास, सरदार निवास, कर्णमहल, रंगमहल, सुनहरी बुर्ज, मोतीमहल आदि प्रमुख है। इनकी सजावट व अलंकरण में हिन्दू और मुस्लिम शैलियों का सुन्दर समन्वय हुआ है। इन महलों की भीतर कई जगह कांच की पच्चीकरी और सुनहरी कलम का सुन्दर काम हुआ है। गजमहल व फूलमहल शीशे की बारीक कटाई और फूलपत्तियों के सजीव चित्रांकन के लिए प्रसिद्ध है। वही गंगानिवास में लाल रंग के पत्थरों पर कोराई का काम देखते ही बनता है। राजमहल के प्रांगण में प्राचीन दुर्लभ वस्तुओं, देवी प्रतिभाओं, शास्त्रास्त्रों, विविध प्रकार के पात्रों तथा फारसी व संस्कृत में लिखे गए शब्द उकेरे हैं।

शेखावाटी क्षेत्र के बहुत से भवन अपने अलंकरणों व भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध है। सीकर का गोपीनाथ मन्दिर, रघुनाथ मंदिर, मदनमोहन मंदिर के भित्तिचित्र बहुत आकर्षक व सुरम्य है। नीली सोमानी एवं वियानी हवेलियां के आकर्षक भित्ति अलंकरण पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। फतेहपुर पर्यटन का सबसे प्रसिद्ध स्थल है जिसे फतेहखान नामक कायमखानी व्यक्ति में विकसित किया। यहां देवरा, सिंघानिया, गोइनका व सरावगी हवेलियों की वास्तुकला व भित्तिचित्रों ने शेखावाटी शैली का निर्माण किया है। लक्ष्मणगढ़ की हवेलियां जयपुर शैली पर आधारित हैं जिनमें गनेरीवाला की हवेली, चोखानी हवेली, मिर्जामल खला की हवेली, केडिया की हवेली, राठी हवेलियां अपने भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

शेखावाटी के दूसरे जिले झुंझनू मे महलों व हवेलियों के चिन्ताकर्षक स्वरूप पर्यटकों को इनको बारीकी से देखने के लिए प्रेरित करते हैं। यहां की टीबरेवाल हवेली, मोदी हवेली, खेतड़ी महल, बिहारी जी का मन्दिर आदि अपने जीवन्त भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध है। बादलगढ़ खेतड़ी का बागौर का किला, सुखमहल अपने सजीव भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। बग्गड़ व चिड़ावा की हवेलियां, विसाई में ठाकरो, सिगिरका, खेमका व खेडिया की हवेलियां अपने आकर्षक भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। महन्सर में मानकरा हवेली, रघुनाथ जी का मन्दिर, पोद्दार छतरी तथा मंडावा की चोखानी, लडिया स सर्राफ हवेलियां भित्ति चित्रकला के लिए प्रसिद्ध हैं।

चुरु जिले का अधिकांश भाग शेखावाटी में सम्मिलित है जहां की प्रमुख हवेलियों में मालजी कोठारी का कमरा, वाडिया की हवेली पन्ना लाल की हवेली, टकनेट छतरी, सेठाणी का जोहड़ा अपने आकर्षक भित्ति चित्रों से दर्शकों को मोहित कर देता है।

शेखावाटी क्षेत्र में राजाओं के अतिरिक्त व्यापारिक घराने आकर्षक वास्तुकला की हवेलियां बनाते थे जो उनके वैभव को प्रदर्शित करती थी। राज परिवार व्यापारिक घरानों की संरक्षण प्रदान करते थे तथा व्यापार विस्तार के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करते थे।

जोधपुर जिले का ओसिवां कस्बा अपने देवालयों व मन्दिरों की स्थापात्यकला के लिए प्रसिद्ध है जिनका निर्माण आठवीं से वारहवीं शताब्दी के बीच के समय का है। यहा का सबसे प्राचीन मन्दिर परमार राजा अप्पल द्वारा बनाया गया था जो उनकी कुल देवी चामुण्डा या सचिया माता के नाम से प्रसिद्ध है। पीले पत्थर से बना यह मन्दिर तोरण द्वार, खूबसूरत नक्काशी, खम्भों पर रंगील कांच के टुकड़े तथा छत पर फूल, पत्ते, हंस, मोर, नृत्यकरती अप्सराओं व किन्नरों के भित्ति चित्रों से सुसज्जित है। ओसियां में ध्वस्त मन्दिरों की भरमार है। सभी मन्दिरों के बाहरी व भीतरी हिस्सों में महीन नक्काशी है जिसमें देवी–देवताओं का चित्रण व महाभारत, कृष्णलीला व दूसरी पौराणिक घटनाएं चित्रित हैं। इसके अतिरिक्त इनमें सामान्य जनजीवन की भी झलकियां हैं। जैन मन्दिरों में महावीर, आदिनाथ, पार्श्वनाथ तीर्थकरों के जन्म, विवाह, धर्मप्रचार, तपस्यारत चित्र उत्कीर्ण है। इनमें प्रमुख रूप से उल्लेखनीय महावीर की माता त्रिशला का स्वप्न, महावीर का जन्म, उनका अभिषेक, नेमीनाथ की बारात और मातृपट्टा अथवा माताओं की गोद में विभिन्न तीर्थकंर चित्रित हैं। अन्य आकर्षक भित्ति चित्रों में जैन भक्त यक्षों का गोमुख त्रिभुवन, तुंबारु, विघा देवियां–सरस्वती, महाकाली, चित्रेशादी, निर्वाणी, राजकुमार महावीर आभूषणों से मंडित चित्र, गोवर्धन खम्भे पर सूर्य, विष्णु, बलराम व गणेश प्रतिमाए उत्कीर्ण हैं।

आकारद भित्ति चित्र : आकारद भिन्ति चित्रण की जन सामान्य की यह कला बहुत पुरानी है और आलनियां व शैलाश्रयों के रेखांकन काफी प्राचीन हैं। इसे लोककला का प्रतीक भी माना जाता है । होली, दीवाली जैसे त्यौहारों पर घरों के फर्श व दीवारों पर लिपाई की जाती है तथा फर्श व दीवारो पर खडिया मिट्टी से चित्रण किए जाते हैं। इसमें मोर माण्डना, बिल्लियों का जोड़ा, हाथी, घोड़ा, बैल, सिंह, चिड़िया, मुर्गा परिहारिन, घुड़सवार आदि के दीवारों व चबूतरों पर चित्रण आज भी किए जाते हैं। शादी विवाह के अवसरों पर मुख्य द्वार की दीवारों पर हाथी, घोड़े, ऊंट, शेर, घडीदार, चंवर धारिणी, परिहारिन व घर के अन्दर गणेश जी, रिद्धि –सिद्धि, लक्ष्मी, स्वास्तिक, कलश, फूल पत्ती के अलंकरण शुभ माने जाते हैं। इन चित्रों में खुलाई काले रंग से तथा भराई प्राथमिक सूचक रंगों से की जाती है।

गांवों में पथवारी के निर्माण का आम रिवाज है। पथवारी पथ की रक्षक है। प्राचीनकाल में यातायात के साधन सुचारु न होने से पथवारी को पथ प्रदर्शक मानना मरुस्थल में भटकने से रोकने का भी प्रतीक था। तीर्थ यात्रा के समय पथवारी की पूजा की जाती थी तथा असमर्थता के कारण कई बार मृत व्यक्ति के फूल पथवारी पर चढाने की परम्परा की थी। पांच फुट लम्बे और तीन फुट चौड़े घेरे के चारो और चित्र बने रहते हैं। एक और काला–गोरा भैरुंजी तथा दूसरी ओर कावड़िया वीर श्रवणकुमार व तीसरी ओर गंगाधर व घट के दोनों ओर दो आंखे इन्हे संजीवता प्रदान करती हैं तथा इसका अन्तर्निहित भाव भटके यात्रियों का मार्गदर्शन कर पथ प्रदर्शन करना प्रतीकात्मक है। आज भी ये प्रतीकात्मक भित्ति चित्र प्राचीन परम्परा की अनुकृति हैं।

देवरा खुले चबूतरे पर बना एक त्रिकोणात्मक आकार का होता है जो कि अधिकतर सड़क के मोड़ पर सूर्य के प्रकाश में नहाता रहता है। छोटी जातियां जिनको प्राचीन काल में मन्दिर में प्रदेश विषिद्ध था, वे अपने देवरे स्वयं बना लेती थी। इसी कारण विभिन्न स्थानों पर रामदेवजी का, धोबियों का, रोलियों का, कुम्भकारों का, भैरुजीका, तेजाजी का देवरा आज भी बना हुआ देखने में आता है। कई देवरे चौकोर आयताकार पत्थर पर पन्नी चिपकाकर या आंखे चिपकाकर अथवा केवल सिन्दुरी रंग से रंगकर मूर्त आकार प्रदान किया जाता है। देवरे के पीछे की छोटी दीवार पर बीचों बीच छत के नीचे बैठे गणेश जी मूषक के साथ, शेर पर सवार दुर्गा जी, काला–गोरा भैरूं जी के साथ कुत्ता व तेजाजी के देवरे पर सांप बने रहते हैं जो अदभुत रहस्यात्मकता का वातावरण पैदा करते है। ये अर्मूत अर्द्ध–अमूर्त चित्र भक्त के लिए पूरी आस्था व पूरा अर्थ लिए हुए है तथा जन मानस की भावना को प्रतिबिम्बित करते हैं।

आपूर्त, सांकेतिक व ज्यामितीय अलंकरण : ये भित्ति चित्र सांझी पूजण की परम्परा के प्रतीक स्वरूप हैं। दशहरे के पूर्व नवरात्र में कुंवारी लड़कियां सफेदी से पुत्ती दीवारों पर पन्द्रह दिन तक गोवर के आकार उकेरती है व उसका पूजन करती है । यह फसल कटाई से भी संबंधित त्योहार है सांझी में गोबर से रेखाओं को उभारकर उसमें विभिन्न कांच के टुकड़े, मोती, चूड़ी, कौडी, पत्थर, पंख, कपड़ा, कागज, लाख के मोती, फूल पत्तियों का प्रयोग करके एक दमकती हुई रंगीन चित्ताकर्षक आकृति बनाती है जो एक मोजाइक सी प्रतीत होती है।

सांझी को माता पार्वती मानकर अच्छे वर की कामना के लिए किशोरियां पूजन करती हैं। पूजन व निर्माण की प्रक्रिया पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित होती हुई आज भी प्रचलित है। प्रथम दिन से दसवें दिन तक एक या दो प्रतीक ही प्रतिदिन बनाए जाते हैं किन्तु अन्तिम पांच दिन बहुत बड़े आकार की सांझी रचना की जाती हे। इसे संझया भी कहते हैं। स्थान परिवर्तन के अनुसार इनके स्वरूप में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। कई क्षेत्रों में पांच पछेटा, छबडी, फडा, कलश, मोर–मोरनी, सीढ़ी, हनुमान जी, थाल, दोना, फेणी, घेवर व जलेबी भी बनाई जाती है। आज के समय ये अलंकरण मात्र हैं परन्तु इनकी पृष्ठ–भूमि का ज्ञान नहीं है। कुछ आलेखकों में सरलता व अमूर्तता की ओर झुकाव प्रतिबिम्बित होता है ये आकार जड़ व गतिहीन है किन्तु भित्ति की विशेषताएं इनमें निहित होती हैं।

भित्ति चित्रों की श्रृंखला में माण्डनों का अपना महत्व है ये भित्तियों व दीवारों को अलंकृत करने के लिए बनाए जाते हैं घर की देहरी, चोखट, आंगन, चबूतरा, चौक, घड़ा रखने का परण्डा, पूजन स्थल पर ये माण्डने सुशोभित रहते हैं। यह आवश्यक नही कि मांडना अत्यधिक बड़ा और जटिल हो, कई बार बिन्दु व स्वास्तिक ही उद्देश्य की पूर्ति कर देते हैं। केवल गेहूं, चूना अथवा खड़िया से गोबर लिपी सतह पर विभिन्न प्रकार के अलंकरण सुसज्जित किए जाते हैं। विवाह के अवसर पर गणेश जी, लक्ष्मीजी के पैर, स्वास्तिक आदि शुभ प्रतीकों के साथ गलीचा, मोर–मोरनी, गमले, कलियां, बन्दनवार, बच्चं के जन्म पर गलीचा, फूल, स्वास्तिक, रक्षा बंधन पर श्रवण कुमार, गणगौर पर गुणों पर जोड़, घेवर, लहरिया आदि प्रमुखतः बनाए जाते हैं।

मरु क्षेत्र के मांडने सरल होते हुए भी अमूर्त व ज्यामितीय शैली का अद्‌भुत सम्मिश्रण लिए हुए होते हैं। वृत्त, वर्ग आकारों में बिन्दु, आड़ी तिरछी रेखाओं में भराई, समतल रंग भरना, घुंडी मुडी रेखाओं से अन्तिम आलांकारिक स्वरूप बनाए जाते हैं। कल्पना सम्मिश्रण द्वारा ये मोटिफ सभी प्रकृति के रूप हैं। स्थान की उपलब्धता के अनुसार इनका आकार किसी भी सीमा तक बढ़ाया गया दृष्टिगोचर होता है। मांडनों का मुख्य उद्देश्य अलंकरण होने के साथ ये स्त्री जीवन, उनके हृद्‌य में छुपी भावनाओं भय तथा आकांक्षाओं को दर्शाते हैं। पर्यटक इन माण्डनों व भित्ति चित्रों के कौतूहल से देखते हैं।

सदाबहार जोहड़े व तालाब : थार मरुस्थल के निवासी पानी का महत्व सदियों से पहचानते रहे हैं और वर्षा जल को एकत्रित करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करते रहे हैं। आज सरकारी तंत्र द्वारा वर्षा का पानी एकत्रित करने की जो योजनाएं बनाई जाती है मरुक्षेत्र के निवासी उनसे भली भांति परिचित हैं और सदियों से इनका महत्व पहचानते रहे हैं। यहां के प्रायः अधिकांश पक्के मकानों में जल संरक्षण हेतु टांके बने है जिनमें वर्षा का एकत्रित जल वर्षभर की पेयजल आपूर्ति करता है वर्षा के पूर्व खाली टांकों की अच्छी प्रकार सफाई की जाती है और वर्षा ऋतु में पानी को स्वच्छ रखने के लिए छतों की सफाई की जाती है। टांके के मुख्य आवक बिन्दु पर एक अवरोधक भी लगाया जाता है जिससे पानी में मिले रेत व अन्य अवशिष्ट बाहर रह जावे और एकत्रित जल को प्रदूषित न करें। इस प्रक्रिया द्वारा पेयजल की सुनिश्चित उपलब्धता बनाई जाती थी। आज शहरों व कस्बों में पाइप द्वारा पेयजल सुविधा होने से अब लोग इस प्रणाली का उपयोग नहीं समझते हैं और प्रायः अनुपयुक्त होने से बेकार होने लगे हैं।

प्राचीन दुर्गों में पानी एकत्र करने के लिए तालाब व बावड़ियां या जोदड़े बनाई जाती थी इनका निर्माण स्थानीय भौगोलिक स्थिति व भूमि के स्वरूप के आधार पर होता था। चट्टानी क्षेत्र होने पर तालाब चारों ओर से अवरोधित होने के साथ पेंदे में जल हिसाब रोकने की व्यवस्था से युक्त होते थे। दुर्गों में जलसंग्रहण की बहुत बड़ी व्यवसीा होती थी क्योंकि लड़ाई के दौरान बाहर से पानी लाना संभव नहीं होता था। इस दृष्टि से ये जलसंग्रहण केन्द्र सुव्यवस्थित व अलंकरण युक्त होते थे। प्राचीन दुर्गों की सीमा दीवारों के साथ वर्षा जल एकत्र करने हेतु बाहर बनी होती थी जिससे पूरा पानी जल संग्रहण केन्द्र में पहुंचता था और उसकी स्वच्छता बनाए रखने की समुचित व्यवस्था थी। मरुक्षेत्र के अधिकांश दुर्ग पहाड़ियों पर बने होने का प्रमुख कारण सुरक्षा के साथ पेयजल भी सुनिश्चित करना था।

मानव निर्मित जोहडें व तालाब भी मरु प्रदेश में काफी पाये जाते हैं। जोहडों में नहर का पानी एकत्रित किया जाता हे जो प्रायः गंगासागर व हनुमानगढ़ में है। तालाब व जोहडो के पेंदे में मोरम बिछाई जाती थी जिससे जल रिसाव कम हो। मरुक्षेत्र में जोहड व तालाब बहुत सीमित मात्रा में है परन्तु इन स्थलों पर पक्षी और वन्य पशु अपना बसेरा बनाते हैं। जोहड व तालाब केवल पानी एकत्रित करने के उद्देश्य से नहीं बनाए जाते परन्तु इनके माध्यम से क्षेत्र का जल स्तर बढ़ता है और भूमिगत कुओं में पानी की आवक में सुधार होता है।

पर्यटन की दृष्टि से प्राचीन बावडियां, जोहड व तालाब इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पर्यटक इन क्षेत्रों में जाकर जल संग्रहण के तरीके का आंकलन करता है तथा रेली से प्रदेशों में पानी की उपलब्धता से उनके समीपवर्ती क्षेत्रों में हरियाली, मानव जीवन, वन्य जीवन, पक्षी आदि को देखकर आश्वस्त होता है। प्राचीन काल में पेयजल व अन्य आवश्यकताओं के लिए पानी के एक मात्र स्त्रोतों पर जीवन के आश्रय और अस्तित्व पर विचार भी करता है। मरुप्रदेश में पानी जीवन का आधार है और इसकी उपलब्धता सुनिश्चित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

बीकानेर जिले में कोलायत का तालाब धार्मिक तीर्थ स्थल के रूप में विख्यात हे इसके समीप कपिल मुनि का आश्रम है। बीकानेर के जूनागढ़ किले में रामसर व रानीसर नामक दो कुए हैं जो पेयजल हेतु प्रयुक्त होते थे। इन कुओं और मरु प्रदेश में सामान्यतया कुओं की विशेषता उनकी बनावट है। कुए के ऊपर काफी ऊंचाई वाला चबूतरा निर्मित किया जाता है तथा सीडियां बनाई हुई होती है कुए के चारो ओर चबूतरे पर चार खम्बे निर्मित किए जाते थे जिनमें पानी खीचने के लिए गोल लोहे या लकड़ी का पहिया होता था जो पानी निकास में सहायक होता हे। कुए के चबूतरे की ऊंचाइ रखने से इसमें रेत, मिट्टी व धूल आदि से बचाव होता थां

बीकानेर की गजनेर झील के कारण इस क्षेत्र को वन विहार बनाया गया है यहां वन्य जन्तु व पक्षी विचरण करते देखे ज सकते हैं। बीकानेर की भांति चुरु का ताल छापर काले हिरण के लिए प्रसिद्ध है यहां पेयजल स्त्रोत पशुपक्षियों को स्थाई निवास प्रदान करते है। मरु क्षेत्र में जोहड़ व तालाब प्रत्येक गांव व कस्बे में निर्मित मिलते हैं परन्तु जिन गांवों का पर्यटक दृष्टि से महत्व था वहां इनकी व्यवस्था सुव्यवस्थित रूप से करने के लिए बावड़ियां बनाई जाती थीं इसके साथ मेलों का संबंध भी जुड़ा है। जहां लोग अधिक संख्या में एकत्र होते थे वहां पेयजल की व्यवस्था करना अवश्यक था। बाड़मेर में महिष मर्दिनी देवी के मन्दिर के मुख्य प्रांगण में एक विशाल जल संग्रहालय का निर्माण किया गया है इस टांके की लम्बाई 11.50 मीटर चौड़ाई 8.75 मीटर ओर गहराई 7.80 मीटर है जिसमें दर्शनाभिलाषी पर्यटकों क लिए वर्ष भर पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध रहता हे। इसमें वर्षा का जल मन्दिर की छतों या प्रांगण से किया जाता है।

इस दृष्टि से दो दृष्टिकोण प्रकाश में आए हैं। एक मत यह है कि प्राचीन काल से ही सभ्यता का विकास जलस्त्रोतों के समीप हुआ और जनसंख्या वृद्धि होने से मानव अन्य स्थानों पर भी बसने लगा जहां जल स्त्रोत विकसित किए गए। इस दृष्टि से बहुत से पग्रटक स्थल उन स्थानों पर बने है जहां जल की उपलब्धता थी परन्तु समय के साथ कुछ पर्यटक स्थल ऐसे भी बने जहां जल की व्यवस्था करना आवश्यक हो गया । इन दोनों ही स्थितियों में जल एकत्रित करना आवश्यक था। पूर्व काल में जब भूमिगत जल का दोहन बड़े पैमाने पर नहीं होता था वर्षा जल संग्रहण करने की परम्परा उन क्षेत्रों में अत्यधिक अनुभव की गई जहां प्रवाहित जल उपलब्ध नहीं था इसके लिए बावड़ियां जोहड या तालाब बनाए गए और उनमें से बहुतों के अवशेष आज भी विद्यमान है

मरुक्षेत्र की बावड़ियों की अपनी शैली व महत्ता है इनका निर्माण प्राचीन काल में इस प्रकार किया जाता था जिससे भूतल से इनकी अवरोधक दीवारें ऊंचाई पर रहें और रेत, मिट्टी, गन्दगी का प्रवेश कम से कम हो। अधिकांश बावड़ियों में भूतल से ऊपर से

सीढ़ियां बनी होती हे जो नीचाई की ओर जाती हैं । वर्षा काल में आवक के अनुसार इनमें जल भराव होना था और धीरे धीरे गरमियों तक जलस्तर काफी घट जाता था बावड़ियों की सीडियां प्रायः घुमावदार होती थी जिससे गिरने का खतरा कम रहे। मुख्य जलस्त्रोत के आसपास ऊंचाई पर सीडियों के घुमाव के स्थान पर कई कक्ष बने हुए होते थे जहां पर्यटक बैठकर गर्मी व थकान से राहत पा सकें। इस प्रकार बनी बावड़ियों में पर्याप्त ठंडक रहती थी और स्थानीय लोग या पर्यटक दोपहरी में यहां विश्राम भी कर लेते थे। इन बावड़ियों की वास्तुकला इस प्रकार की होती थी जिससे सूर्य की रोशनी या गर्मी के कारण जल वाष्पीकरण कम होता था।

विकास क्रम में ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में समुचित पेयजल व्यवस्था होने के कारण इन जल संग्रहण स्थलों की देखरेख व रखरखाव के प्रति लोगों का रुझान कम हो गया और इनकी बनावट में गिरावट आने लगीं आज प्रायः अधिकांश बावड़ियां जीर्णशीर्ण अवस्था में है परन्तु आज भी पर्यटक इनकी वास्तुकला देखकर अचंभित होते है जो आज भी आकर्षक का केन्द्र हैं।

मेले व त्यौहार : मरु क्षेत्र में मानव जीवन जितना दुष्कर है, यहां के लोग मेले व त्यौहार उतनी ही अधिक रुचि से मनाते हैं। यहां के मेले व त्यौहारों की अनूठी सांस्कृतिक परम्परा है। हर मेला व त्यौहार यहां के लोक जीवन की किसी किंवदन्ती या ऐतिहासिक कथानक से जुड़ा हुआ हैं यही कारण है कि इन मेलों के आयोजन में सम्पूर्ण लोक जीवन पूरी सक्रियता से जीवन्त हो उठता है और यहां के लोग अपनी भोगौलिक कठिनाइयों के भूलकर पूरे उत्साह से सम्मिलित होते हैं। मेलों में भाग लेने के लिए लोग अपनी पारम्पिरिक वेषभूषा में आते हैं जिसमें महिलाओं की पोषाक व श्रृंगार दर्शनीय होते हैं। मेलों के अपने गीत होते हैं और अपनी संस्कृति जिनके पीछे जलमानस की गहरी आस्था निहित है। इतने वर्षों के बीत जाने के पश्चात् भी लोक आस्था के ये स्थल अपनी पहचान बनाए हुए हैं और निरन्तर इनमें आगन्तुकों की संख्या बढ़ रही है। प्राचीन आस्थाओं और ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के मेलों का आयोजन स्थानीय समुदाय करता है। कानून व्यवस्था बनाए रखने की दृष्टि से सरकार अपनी ओर से भी व्यवस्था करती है। सड़कों आदि की व्यवस्था सरकार करती है। मरु क्षेत्र में मनाए जाने वाले मुख्य मेलों का विवरण प्रस्तुत है।

मरु क्षेत्र के मेले : मरु क्षरेत्र में मनाए जाने वाले मेले अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक है। धार्मिक पृष्ठभूम के मेलों में लोग बड़ी संख्या में भाग लेते है। इन मेलों की आयोजन अवधि विक्रम संवत की तिथियों पर आधारित होती हे और उसी अवधि में इनका आयोजन किया जाता है इन मेलों में लोग मन्दिरों में अपने आराध्यदेव से मनौती मांगते है और इसके पूरे होने पर मन में विचार किए गए आयोजन यहां आकर सम्पन्न करते हैं। यहां लोग विवाह की जात देने, बच्चों के मुण्डन कराने व अन्य मनौतियों के लिए आयोजन करते हैं जिनमें परम्परा के अनुसार अपने परिवार, संम्बन्धी, मित्रगण आदि को भी लाते हैं। यहां आयोजित होने वाले कुछ मेलों का विवरण निम्न प्रकार है–

(1) जीणमाता का मेला : जीण माता का मन्दिर सीकर जिले में रेवासा ग्राम से दक्षिण में गिरिमाला की उपत्यका में स्थित है यह मन्दिर केवल पूर्व दिशा में खुला है बाकी तीन दिशाओं में यह अरावली पर्वत श्रंखलाओं से घिरा हुआ हे। मन्दिर में अवस्थित माता की प्रतिमा अष्ठभुजी है और उसके सामने घृत और तेल के दो दीपक अखण्ड रूप से कई सो वर्षों से प्रज्वलित होते आए हैं जिसकी व्यवस्था पहले दिल्ली के चौहान राजाओं ने समारंभ की बाद में जयपुर के आमेर राजाओं ने यह जिम्मा उठाया तथा स्वतंत्रता के पश्चात् अब यह व्यवस्था मन्दिर प्रशासन वहन करता है मन्दिर का निर्माण विक्रम संवत 1521 में होने का उल्लेख मिलता है जब मोहिल के हठड़ द्वारा इसका निर्माण करवाया गया। देवालयों की छतों व दीवारों पर बौद्ध तांत्रिकों तथा वाममार्गियों की तप–तपस्या और साधना से सम्बंधित तथा अनेक निर्वसन पाषाण प्रतिमाएं बनी हुई हैं यहीं मन्दिर के पाषाण जनित मार्ग के समाप्त हो जाने पांच हजार बीघे का विशाल अरण्य प्रारंभ हो जाता है। यहां दो स्वच्छ झरने तथा जोगी तालाब नामक जल कुण्ड है। एक किवंदत्ती के अनुसार पाण्डवों ने अज्ञातवास का कुछ समय यहां बिताया था एक लोककथा के अनुसार इस स्थल पर दो भाई बहनों हर्ष व जीण द्वारा कठिन तपस्या करने पर देवी साक्षात प्रकट हुई और आज तक विद्यमान है।

इस स्थल पर सामान्य रूप से वर्ष भर पर्यटक आते रहते हैं। परन्तु चैत्र मास और आश्विन मास के नवरात्रों में मेला भरता है जिसमें शेखावाटी निवासी लोग दूरस्थ स्थानों से आते हैं। मेले के दौरान नौ दिनों में लाखों की संख्या में पर्यटक अपनी सुविधानुसार साधनों से यहां आते हैं।

(2) तेजाजी का मेला : नागौर जिले का परबतसर कस्बा इस क्षेत्र के लोक देवता तेजा जी के कारण प्रसिद्ध है जिसका मेला भाद्रपद कृष्णा दसवीं से शुक्ला एकादशी तक सोलह दिन आयोजित होता है स्थानीय लोग मेले में परम्परागत वेशभूषा में अपने आराध्यदेव तेजाजी के गीत गाते हुए आते है और श्रृद्धापूर्वक अपनी यात्रा पूरी करते हैं। यहां इन दिनों में पशु मेला भी भरता है नागौर गोवंश की नागौरी प्रजाति के लिए विख्यात है और इस मेलों में पशुओं की बड़ी मात्रा में खरीद फरोख्त होती है कृषि कार्य में पशुधन की महत्ता कम होने से अब इनकी बिक्री में कमी आ गई है परन्तु आज भी पशु उसी गति से मेले में लाये जाते हैं।

(3) करणीमाता का मेला : बीकानेर जिले के देशनोक कस्बे में स्थित करणीमाता के मन्दिर में वर्ष में दो बार चैत्र व आश्विन नवरात्र में मेला भरता है यह स्थल चूहों के मन्दिर के नाम से विख्यात है जहां दर्शकों की विशाल भीड़ की उपस्थिति में अनेक चूहे मन्दिर परिसर में बेरोकटोक घूमते रहते हैं। आश्चर्य की बात है कि इन चूहों से मन्दिर या गांव में कोई बीमारी नहीं फैलती है। यहां चूहे केवल मन्दिर परिसर में भी विचरण करते हैं। मेले के अतिरिक्त सामान्यतया यहां निरन्तर पर्यटकों का आवागमन बना रहता है क्योंकि यह स्थल राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है।

(4) सालासार का मेला : यह स्थल हनुमान जी के मन्दिर के लिए उत्तर भारत में प्रसिद्ध है और यहां पर्यटक लाखों की संख्या में आते हैं। हनुमान जयन्ती के दिन यहां विशाल मेले का आयोजन होता है तथा आस्था स्वरूप पर्यटक दूर दूर से पैदल चलकर अपनी मनौती मानने आते हैं। यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए धर्मशालाएं व विश्राम स्थल बने हैं तथा मनौती पूरी होने पर सामान्यतया श्रृद्धालू व सवामनी आयोजित करते है जिसमें अपने संबंधियों व रिश्तेदारों के साथ आकर प्रसाद गृहण कर भोजन करते हैं।

(5) बीकानेर का ऊंट मेला : बीकानेर में ऊटों की खरीद फरोख्त के लिए एक विशाल मेला पौष शुक्ल 14–15 को आयोजित किया जाता है। इस क्षेत्र में ऊंटों की संख्या बहुत ज्यादा होने से यहां ऊंओं में लोगों की बहुत रुचि है। पर्यटकों द्वारा ऊंट की सवारी करने से अच्छी आय होने के कारण ऊंट रखना व्यावसायिक दृष्टि से लाभप्रद रहाता है इसलिए इस मेले का बहुत महत्व है। यहां ऊंटों के विभिन्न कलापूर्ण कृत्य भी आयोजित किए जाते हैं जैसे ऊंट का नृत्य, फुटबाल का खेल आदि इन कृत्यों में प्रशिक्षित ऊंटों के दाम ज्यादा होते हैं।

(6) नागौर का पशुमेला : नागौर का यह पशु मेला माघ की सप्तमी से दशमी के बीच आयोजित होता है और बड़ी संख्या में पशुपालक भाग लेते हैं। पशुप्रधान प्रदेश होने के कारण इन मेलों का बहुत महत्व है। इस मेले को आकर्षक बनाने के लिए यहां विभिन्न प्रकार के आयोजन किए जाते है जिसमें देशी व विदेशी पर्यटक भी भाग लेते हैं।

(7) जैसलमेर का पशु मेला : यह मेला माघ की 13–15 तिथि को आयोजित किया जाता है जिसमें पर्यटक बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। यहां विदेशी पर्यटकों के ठहरने के लिए बड़ी संख्या में तम्बू लगाए जाते हैं। और रेतीले टीबों में ठहरने का पर्यटक आनन्द उठाते हैं। राजकीय प्रशासनिक व्यवस्था के अन्तर्गत आयोजित होने वाले इन मेले में विभिन्न प्रकार के समारोह आयोजित किए जाते है जिसमें स्थानीय लोग व विदेशी पर्यटक हिस्सा लेते है। इस मेले में यहां के वाद्य यंत्र, नृत्य कला, ऊंटो के खेल, पोशाक प्रदर्शन आदि के आयोजन समारोह को अत्यन्त मनोरंजक व आकर्षक बना देते हैं। विदेशी पर्यटक यहां के टीलों, रंगबिरंगी पोषाक, पगड़ियां देखकर बहुत प्रभावित होते हैं।

(8) रामदेवरा मेला पोकरण : पोकरण के रामदेवरा गांव में बाबा राम शाह पीर की समाधि पर प्रतिवर्ष भाद्रपद माह की 2–10 तिथि को आयोजित होने वाले मेले में हिन्दू व मुस्लिम भक्त बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। इस अवसर को राज्य प्रशासन साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक के रूप में आयोजित करता है। थार मरुस्थल के मध्य स्थित इस क्षेत्र में देशी विदेशी पर्यटक बहुत बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। राज्य के पर्यटक विभाग के द्वारा मेले को आकर्षक बनाने के लिए विविध आयोजन किए जाते हैं। बाबा रामदेव की समाधि 1458 ई. में बनाई गई थी उसी कारण यहां विशाल मेले का आयोजन होता है ओर समाधि स्थल पर भक्तजन अपनी आस्था प्रदर्शित करने व मनौती मांगने के लिए आते है। मनौती पूरी होने पर पुनः आभार व्यक्त करने के लिए आते हैं।

(9) कोलायत का मेला : यह स्थल बीकानेर जिले का पंचायत समिति मुख्यालय है जहां कार्तिक शुक्ल 4 से माघ कृष्णा 5 तक 16 दिन के मेले का आयोजन किया जाता है। वैसे यह स्थल कपिलमुनी के मन्दिर व पवित्र सरोवर के कारण प्रसिद्ध है और हिन्दुओं के पवित्र व आस्थामय स्थल के रूप में विख्यात है मन्दिर में दर्शन के पूर्व सरोवर में स्नान करना आस्था का प्रतीक है। पर्यटन विभाग द्वारा इस मेले में सम्मिलित होने व आयोजन को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रमों के कारण दिनोदिन इस की प्रसिद्धि बढ़ रहीं है तथा दर्शकों की आवक में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

मरुस्थल के त्यौहार : मरुस्थलीय प्रदेश में विभिन्न त्यौहार परम्परागत तरीके मनाए जाते हैं। जिनमे स्थानीय लोकगीत व वाद्ययंत्रों का भरपूर प्रयोग इन त्यौहारों को अत्यन्त आकर्षक बना देता है। जयपुर की भांति जोधपुर में गणगौर त्यौहार परम्परागत रूप से मनाया जाता है। राज्यवंश सत्ताधीन होने पर इस त्यौहार को राजकीय शान शौकत से मनाया जाता था जिसमें दर्शक बढ़चढ़कर भाग लेते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी पूर्व राज परिवार इस त्यौहार को उसी परम्परा से आयोजित करता है।

होली का त्यौहार प्रायः देश के अधिकांश भाग में मनाया जाता है परन्तु मरुक्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर इस त्यौहार की अनूठे रूप से मनाते हैं। बाड़मेर की पत्थर मार होली प्रसिद्ध है अब इसका स्वरूप गिर गया है फिर भी इलोजी की सवारी निकालने का रिवाज है। इलोजी की बारात में लोग रोते बिलखते हुए इसे मनोरंजक स्वरूप प्रदान करते हैं। शेखावाटी के सीकर, लक्ष्मणगढ़, नवलगढ़, मुकुन्दगढ़ व झुंझनू में होली से 15 दिन पूर्व गींदड नृत्य प्रारंभ हो जाता है इसमें लोग विविध पोशाकों में नगाड़े की धुन पर लकड़ियां बनाकर आकर्षक नृत्य करते हैं जो रात्रि में कई घंटों तक चलता हे। बीकानेर में गैर नृत्य व गीतों का आयोजन होली के अवसर पर किया जाता है रात्रि में चौराहों पर मंच बनाकर होली व फागुन के गीत गाते हैं।

मरुप्रदेश के उद्योग धंधे : मरु क्षेत्र उद्योग धंधों की दृष्टि से उपयुक्त क्षेत्र नहीं है क्योंकि यहां बिजली व पानी का प्रायः अभाव है परन्तु विशिष्ट परम्परागत उद्योग इस क्षेत्र की विशिष्टता के द्योतक हैं। उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार इस क्षेत्र के वृहद एवं मध्यम, लघु व हस्तकला उद्योग स्थापित हैं जिनके द्वारा रोजगार के अवसर जुटाए जाते है और मूल्य संवंर्धन प्रक्रिया से अर्थव्यवस्था में भी सहयोग प्रदान करते है। क्षेत्र के प्रमुख उद्योगों का विवरण निम्न प्रकार है–

वृहद एवं मध्यम श्रेणी के उद्योग : कृषि आधारित उद्योगों में से सूती वस्त्र उद्योग स्थापना के लिए कपास का उत्पादन इस क्षेत्र में अच्छा है जो अधिकांशतः गंगानगर व हनुमानगढ़ में होता है। निजी क्षेत्र में सूती वस्त्र की 2 मिलें गंगानगर तथा एक–एक मिल जोधपुर, पाली में स्थापित है। सहकारी क्षेत्र में हनुमानगढ़ व गंगानगर में मिले लगाई गई हैं। चीनी उद्योग गंगानगर में स्थापित है जहां चीनी के अतिरिक्त शराब का भी उत्पादन होता है।

सीमेन्ट उद्योग के अन्तर्गत पाली के रास गांव में वृहद श्रेणी का उद्योग वर्ष 1998 से कार्यरत है। गोटन नागौर व खारिया खंगार जोधपुर में सफेद सीमेन्ट के कारखाने मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत वर्ष 1984 व 1988 से कार्यरत है। लिग्नाइट आधारित ताप विधुत गृह बीकानेर जिले के पलाना, गुढा, बरसिंहसर, विथनोक व बाड़मेर के कपूरडी–जालिया में स्थापित किए जा रहे है। संगमरमर प्रोसेसिंग इकाइयां नागौर व पाली में लगी है। ग्रेनाइट प्रोसेसिंग क्षेत्र में जालौर का प्रमुख स्थान है तथा सीकर में भी एक इकाई स्थापित है।

फास्फेट खाद का कारखाना खेतड़ी जिला झुंझुनू में लगा हुआ हैं उर्वरक कारखाना गंगानगर में स्थापित है। फास्फेट संयत्र, सूरतगढ़, पाइराइट एवं फासफोराइट नीम का थाना जिला सीकर व खेतड़ी जिला झुंझुनू में कार्यरत हैं। गंधक का तेजाब बीकानेर व खेतड़ी में तैयार किया जाता है। गंगानगर में एक कीटनाशक इकाई कार्यरत हैं। बोन्टोनाइट प्रोसेसिंग कारखाना बाड़मेर में राजस्थान

खनिज विकास निगम द्वारा चलाया जा रहा है। सिरेमिक उद्योग इकाई बीकानेर व जोधपुर में स्थापित हैं। बीकानेर में उच्चकोटि के सेनेटरी पेपर बनाने का कारखाना तथा ग्लेज्ड टाइल्स का कारखाना उत्पादन कार्य में लगा हुआ है।

बीकानेर एशिया में ऊन की सबसे बड़ी मण्डी हैं ऊनी धागा बनाने की प्रमुख मिलें जोधपुर व बीकानेर में हैं सार्वजनिक क्षेत्र के नमक उद्योग डीडवाना, पचपदरा,, फलौदी, कुचामन, पोकरण व सुजानगढ़ में स्थित हैं। प्रमुख औद्योगिक बस्तियों में जोधपुर के वासनी–मरुधर, बोरनाडा, मण्डोर व मथानिया में तथा बीकानेर के खारा, बिछूपाल व करणी में स्थापित हैं।

लघु एवं कुटीर उद्योग : हाथकरघा उद्योग क्षेत्र में खेसला, धोती और टुकड़ी के लिए बालोतरा, फालना व सुमेरपुर, बंधेज की साड़ियों के लिए जोधपुर की प्रसिद्धि सर्वविदित हैं । पक्की रंगाई व छपाई का कार्य बाड़मेर, बालोतरा, जैसलमेर पाली में होता है जहां पर्दे, चद्दरें, दुपट्टे, रुमाल, स्कर्ट साफे रजाई, लूंगी व अन्य ड्रेस मेटेरियल का व्यापार देशव्यापी हैं इसमें बाड़मेर की अजरख प्रिंट व बालोतरा में पावरलूम सूती कपड़ों पर रंगाई व छपाई का कार्य अधिक होता है। खाद्या पदार्थों में बेकरी उद्योग जोधपुर में तथा दाल उद्योग गंगानगर व हनुमानगढ़ में प्रमुखता से संचालित हो रहे हैं।

चमड़ा उद्योग में भीनमाल व जोधपुर मोजड़ी व जूतियों के लिए नौरंगी जूतियों के लिए जोधपुर विश्व प्रसिद्ध हैं। प्लास्टर आफ पेरिस बनाने वाली लघु औद्योगिक इकाइयां अधिकतर बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर व नागौर में कार्यरत हैं। पत्थर की जालियों के लिए जैसलमेर जिला अग्रणी है। लोहे के औजारों का कार्य नागौर जिले में सर्वाधिक होता है तथा कृषिगत औजारों के लिए गंगानगर का गजसिंहपुर प्रसिद्ध है। जोधपुर जिले में बांस से टोकरिया, हल्की मेजे व कुर्सियां बनाने तथा लाख की चूड़िया व खिलौने बनाए जाते हैं। जोधपुर व बीकानेर के फर्नीचर उद्योग अपनी बारीकी व उत्कृष्ट डिजाइन के लिए प्रसिद्ध हैं।

हस्तकला उद्योग : हस्तकला क्षेत्र में छपाई के विविध प्रकार के बेल बूटों पर पक्की छपाई के लिए बालोतरा, बाड़मेर, पाली, जैसलमेर जग प्रसिद्ध है जो स्थानीय पानी के कारण उत्कृष्ट स्वरूप प्रदान करती है। शेखावाटी में विभिन्न रंग के कपड़ों पर आकर्षक डिजाइनों में काटकर कपड़े पर छपाई की जाती है जो पेचवर्ष के नाम से मशहूर हैं और इनमें चंदोबे, चादरें, बन्दनवार आदि प्रमुख हैं। वातिक का काम खण्डेला में तथा वस्त्रों पर कांच की कढ़ाई का काम बाड़मेर में अधिक होता है।

कागज जैसे पतले पत्थर पर मीना करने में बीकानेर के मीनाकार सिद्धहस्त हैं। बीकानेर में चांदी के डिब्बे, डिब्बियां, अफीमदानियां, सिगरेट केस कटोरदान, किवाड़ जोडिया आदि बहुत आकर्षक ढंग से बनाई जाती हैं। नागौर में कांसे व पीतल के धातु के कलात्मक बर्तनों का निर्माण बहुत बड़ी मात्रा में किया जाता है। बीकानेर व शेखावाटी में फर्नीचर इमारती लकड़ी पर आकर्षक कटाई व डिजाइनें बनाई जाती हैं जिनकी देश विदेश में बहुत मांग है। बाड़मेर में सागवान व अखरोट की लकड़ी के फर्नीचर पर कार्विंग की जाती है बाड़मेर से 14 किलोमीटर दूर उड़खा गांव बाड़मेरी फर्नीचर निर्माण में प्रसिद्ध है। फर्नीचर, दरवाजों और लकड़ी छतों पर आकर्षक कोरनी कार्य बीकानेर में बहुत आकर्षक रूप से किया जाता है। लकड़ी के कलात्मक दरवाजे, चौखट, खिड़कियां, आलमारी, कुर्सी, चारपाई, फोटोफ्रेम आदि का निर्माण रामगढ़ शेखावाटी में बहुतापन से किया जाता है। यहां का माल इंग्लैड, जर्मनी, जापान, फ्रांस, अमरीका, आस्ट्रेलिया, इटली, न्यूजीलेण्ड, कनाड़ा व खाड़ी देशों को निर्यात किया जाता है।

बीकानेर व शेखावाटी मकानों की छतों में फाल्स रूफिंग में लकड़ी की सुन्दर उत्कृष्ट चित्रकारी में चन्दरस का काम विख्यात हैं हांथी दांत का काम मेड़ता में बहुतायत से किया जाता है। जोधपुर में लकड़ी, हाथीदांत की पच्चीकारी व सीप का कार्य उत्कृष्ट डिजाइनों में किया जाता हैं विदेशों में हस्तकला की इन चीजों की मांग बढ़ने के कारण पुराने कारीगर गए युवाओं को जोड़कर प्रशिक्षित करके अपना कार्य सम्पादित करते हैं।

नागौर के बू–नरायता गांव में मिट्टी के खिलौने, गुलदस्ते, गमले तथा पशु पक्षियों की कलाकृतियों के काम बहुत आकर्षक ढंग से दस्तकारों द्वारा किए जाते हैं। मरु क्षेत्र में गलीचे व दरियों का कार्य बहुतायत से होने लगा है। बीकानेर की जेल में बने गलीचे दुनियां भर में प्रसिद्ध है और निर्यात किए जाते हैं। यह कार्य जोधपुर, जालौर, जैसलमेर, नागौर, बाड़मेर जिलों में भी किया जाता है। दरियों की आकर्षक डिजाइने जोधपुर, जालोर, बाड़मेर में अग्रणी हैं। गोल्डन पेन्टिग के लिए नागौर का मारोठ गांव तथा कुचामन प्रसिद्ध है।

बीकानेर में ऊंट की खाल पर स्वर्णिम नक्कासी ने उस्ता कला को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान की है। बीकानेर में मथैरण कला के साधक धार्मिक स्थलों एवं पौराणिक कथाओं पर आधारित विभिन्न देवी देवताओं के आकर्षक भित्ति चित्र, गणगौर, ईसर, तोरण, बागवाडी आदि का निर्माण सधे हुए हाथों से करके उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन करते हैं इनके रंगों में संजीवता होती है आलागीला कारीगरी का कार्य देशभर में बीकानेर के कारीगर ही करते है।

देशी व विदेशी पर्यटक व्यवसाय संबंधी यात्राओं में इन क्षेत्रों के उत्पादों के नमूने साथ ले जाते है या दाम चुकाकर भेजने के आदेश दे जाते हैं। इससे निर्यात के अधिकाधिक अवसर बढ़ते हैं। हमारे देश से निर्यात में हस्तकला दस्तकारी व कुटीर उद्योगों का बहुत बड़ा योगदान है।

पर्यटन विकास की संभावनाएं व सुझाव : भारत आने वाले कुल पर्यटकों में से तेतीस प्रतिशत राजस्थान आते है और राजस्थान आने वाले कुल पर्यटकों में से पन्द्रह प्रतिशत मरु प्रदेश में आते हैं इस प्रकार भारत आने वाले पर्यटकों में से पांच प्रतिशत मरु प्रदेश में आते हैं इस प्रतिशत में परिवर्तन या भारत आने वाले कुल पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने से मरु प्रदेश में पर्यटन का विस्तार हो सकता है जो एक सीधा गणितात्मक हल है परन्तु यह बात इतनी सरल भी नहीं है क्योंकि देश का हर प्रान्त अपने यहां अधिकाधिक पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास कर रहा है। इसी स्थिति का दूसरा पक्ष यह है कि सुनामी से प्रभावित समुद्रतटीय देशों में आने वाले पर्यटक तत्कालिक रूप से भारत में आने लगे हैं जिससे राजस्थान व मरुप्रदेश में भी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो रही है और अभी भी वृद्धि जारी रहने की संभावना है। परन्तु यह भी कटु सत्य है कि पर्यटक बहुत संवेदन शील होता है और पर्याप्त सुरक्षा व सुविधाओं के अभाव में वह स्थान परिवर्तन से संकोच नहीं करता और अन्य क्षेत्रों की ओर प्रेरित हो जाता है। अतः यह विशेष महत्व की

बात है कि पर्यटकों की संख्या में वृद्धि के साथ साथ सेवाओं, सुविधाओं व सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जावे तभी पर्यटकों की संख्या में स्थाई रूप से वृद्धि जारी रह सकती है। इस दृष्टि से निम्न सुझाव सार्थक सिद्ध हो सकते हैं

भविष्य के लिए पर्यटन नियोजन : पर्यटन क्षेत्र में संभावित वृद्धि के लिए एक समय बद्ध नीति बनाई जानी आवश्यक है। वैसे भारत सरकार व राज्य सरकार अपनी पर्यटन नीति जारी करती है और समय समय पर उसकी समीक्षा भी करती है परन्तु पर्यटन क्षेत्र में विकास के लिए एक व्यावसायिक सोच विकसित की जानी आवश्यक है जिसके अन्तर्गत पर्यटक स्थलों व संभावित पर्यटन स्थलों को चिन्हित कर कुछ स्थायी और तत्कालिक सुविधाओं व सेवाओं में वृद्धि की जाने के लिए समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जाना आवश्यक है। इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि पर्यटन स्थलों तक पहुंच के मार्ग अच्छें हो और सड़कों में होने वाली टूटफूट की नियमित मरम्मत की जानी सुनिश्चित की जावे। पर्यटन क्षेत्रों तक पहुंच के लिए बसें व टैक्सियां अच्छी हालत में और आरामदायक होनी चाहिए। पर्यटकों के स्तर के अनुसार बसें, जीपें व कारें समुचित मात्रा में उपलब्ध हो जिससे प्रत्येक स्तर का पर्यटक इन स्थलों पर बिना किसी परेशानी के कम से कम समय में पहुंच जावे और भ्रमण कर वापस अपने गन्तव्य की ओर प्रस्थान कर सके। पर्यटक स्थल पर ही निवास करने के इच्छुक पर्यटकों की संख्या के दृष्टिगत रखकर आवास व भोजन की यथेष्ट सुविधाएं सुनिश्चित की जानी आवश्यक है।

मरुप्रदेश में भ्रमण के इच्छुक पर्यटक सर्वप्रथम जयपुर या जोधपुर आते हैं। इन स्थलों को नोडल प्वाइंटस के रूप में विकसित किया जाना चाहिए इन स्थलों से पर्यटक पर्यटन स्थलों की ओर प्रस्थान करते हैं कुछ को अपने लक्ष्य व स्थल ज्ञात होते है और कुछ इस संबंध में समुचित जानकारी चाहते हैं। यहां अस्थाई रूप से रुकने वाले पर्यटकों को बहुत सी जानकारी करना आवश्यक होता है जिसके लिए सर्वप्रथम यह निर्धारित करना आवश्यक है कि इन स्थलों पर आये हुए या आने वाले पर्यटक किससे संपर्क करें अतः इस दृष्टि से निम्न मामलों के लिए सुनिश्चित व्यवस्थाएं करते समय निम्न बातों पर भी ध्यान में रखा जाना आवश्यक है :

(1) अन्य आवश्यक सुविधाओं की भांति देशभर में एक विशेष टेलीफोन नम्बर आवंटित किया जाना चाहिए जिससे पर्यटक वहां से पर्यटन स्थल की जानकारी प्राप्त कर सके। इस स्थल पर स्थित पर्यटन विशेषज्ञ को सभी पर्यटन स्थलों की दूरी, यातायात का साधन व रुकने की पूरी जानकारी होनी चाहिए जिससे पर्यटक पूर्णतया संतुष्ट हो जावे और सुविधानुसार वाहन से पर्यटन स्थल की यात्रा कर सके।

(2) जिन पर्यटकों को स्थानीय परिवेश की जानकारी न हो उनके रुचि के अनुसार पर्यटन स्थलों का चुनाव करने में सहायता करनी चाहिए और उन्हें वांछित सभी जानकारी उपलब्ध करा देनी चाहिए।

(3) ऐसी सुविधा होने से पर्यटक उन लोगों के चंगुल में आने से बच जायेगा जो पर्यटक की अनभिज्ञता का लाभ उठाकर अनुचित लाभ कमाना चाहते है या उन्हें किसी प्रकार की हानि पहुँचा सकते हैं।

(4) पर्यटन स्थलों तक पहुंच की सड़कें सही हालत में होनी चाहिए और यहां जाने के लिए वाहन पर्यटकों की रुचि व सुविधा को दृष्टिगत रखकर जुटानी चाहिए। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि यहां लगाए गए वाहन आरामदायक व आधुनिक सुविधाओं से युक्त हों।

(5) टैक्सी से जाने वाले पर्यटकों को सेवा मूल्य निर्धारित करने चाहिए जो उस स्थल पर आने जाने व रूकने की पूरी व्यवस्थाओं सहित संपूर्ण या प्रथक प्रथक निर्धारित हो जिससे वाहन चालक पर्यटक से अधिक राशि वसूल नहीं करे।

(6) पर्यटन स्थल पर रुकने के लिए उस स्थल या समीपवर्ती आवास स्थल की पूरी जानकारी भी यहीं से मिलनी चाहिए और आरक्षण की सुविधा भी कराने की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे पर्यटक यात्रा करने के पूर्व सभी बातों से आश्वस्त हो जावे।

(7) ऐसी सुविधाओं का पर्यटक के ऊपर अनुकूल प्रभाव पड़ता है और वे बहुत ही आश्वस्त महसूस करते हैं। यदि कही भी पर्यटक की कोई कठिनाई या असुरक्षा महसूस हो तो इसी नम्बर पर सूचित करने पर उसे तत्काल स्थानीय सेवा उपलब्ध कराकर पर्यटक को उसकी सुविधा व सुरक्षा के प्रति पूर्णतया आश्वस्त किया जा सकता है और इससे देश व प्रदेश की पर्यटकों के प्रति उत्तरदायित्व का बोध होता है।

उपरोक्त स्थितियों के अतिरिक्त पर्यटकों की संख्या व स्थलों पर पहुंच व रुकने की पूरी जानकारी समयबद्ध रूप से एकत्रित कर उसकी समीक्षा की जानी भी आवश्यक है जिससे जिन स्थलों पर पर्यटक अधिक संख्या में जाते हैं उन स्थलों पर समस्त सुविधाओं में वृद्धि करना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। पर्यटन व्यवसाय में सरकार एक पक्ष है वह सभी जानकारियां एकत्रित करने व प्रसारित करने से इस व्यवसाय से जुड़ी व्यापारिक व व्यावसायिक वर्ग स्वयं ऐसी सुविधाएं जुटाने के प्रयास करते हैं। व्यावसायिक वर्ग अपने स्वयं के तंत्र से भी ऐसी जानकारी एकत्रित करते है और विस्तार कार्य जारी रखते है परन्तु सरकारी तंत्र की अग्रणी भूमिका से विकास नियोजित व सुव्यवस्थित होता है और सभी आवश्यक पक्षों की व्यवस्था सुनिश्चित की जाती है। एक समन्वित दृष्टिकोण अपनाया जाकर सभी कार्य नियोजित ढंग से पूर्ण किए जाने आवश्यक होते हैं। जो सुविधाएं व्यावसायिक वर्ग जुटा सकता है उनके अतिरिक्त कार्यों के लिए भी उन्हें प्रेरित किया जाना चाहिए अन्यथा सरकार को शेष व्यवस्थाएं अपने स्तर पर भी करनी चाहिए। व्यावसायिक वर्ग का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना होता है जबकि सरकार का उद्देश्य उत्तरदायितव का निर्वहन करना भी होता है। इनके समन्वित स्वरूप से पर्यटक स्थल आकर्षक व मनोरंजक लगते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Acharya, R.	1980	Tourism and Cultural Heritage of India. Jaipur (RBSA Publications).

Adams, A.	1989	(reprint 1900). The Western Rajputana States. Jodhpur (Vintage Books).
Agarwal, A. and Narain S.	1994	"I Don't Need It but You can't Have it: Politics on the Commons". Pastoral Development Network Paper 36a. London: Overseas Development Institute.
Agoramoorthy, G. and Mohnot, S.M.	1986	Checklist of birds around Jodhpur: Tiger paper, 13(3): 4-8.
Alfred, J.R.B. and Agrawal, V.C.	1996	The Mammal Diversity of the Indian Desert. In Faunal Diversity in Thar Desert. Gaps in Research (Ed. by Ghosh, A.K., Q.H. Baqari and I. Prakash), Jodhpur, (Scientific Publishers).
Ali, S.	1975	On Some Birds of Indian Desert. In Environmental Analysis of the Thar Desert. (Ed. by R.K. Gupta and Prakash, I.). English Book Depot, Dehra Dun.
Anand, M.M.	1976	Tourism and Hotel Industry in India. Prentice-Hall of India, New Delhi
Anonymous	1988	Global Tourism Forecasts of the Year 2000 and Beyond: Executive Summary, Madrid, World Tourism Organisation.
Anonymous	1994	Resource Atlas of Rajasthan. Department of Science and Technology, Government of Rajasthan, Jaipur.
Anonymous	1997	Ninth FIve Year Plan: 1997-2000. Deptt. of Tourism, Govt. of India, New Delhi.
Ashworth, G.J. and Larkham, P.J.	1994	Building a New Heritage Tourism, Culture and Identity in the New Europe. London, (Toutledge).
Anand, M.M.	1977	Tourism and Hotel Industry in India, prentice Hall of India.
Basak, T.N.		International Tourism in Federal Republic of Germany, Geography Institute
Bhatia, A.K	1978	Tourism in India, History and Development, Sterling Publisher Pvt. Ltd., New Delhi.
Banerji, S.K (ed.)	1952	Bulletin of the National Institute of Sciences of India. Proceedings of Symposium on the Rajputana Desert. New Delh, National Institute of Sciences of India.
Bappenas	1991	Biodiversity Action Plan for Indonesia, National Development Planning Agency, BAPPENAS, Jakarta.
Batra K.L.	1990	Problems and Prospects of Tourism. Jaipur. (Printwell Publishers).
Berker, F.	1989	Common Property Resources: Ecology and Community Based Sustainable Resource Development, London: Belhaven Press.
Berker, F. Feeney, D., McCay, B.J. and Acheson, J.M.	1989	The benefitts of the commons. Nature.
Bhandari, M.M.	1990	Flora of the Indian Desert (2nd ed.). MPS Reros, Jodhpur.
Bhandari, M.M	1991	Evolution of Desert Vegetation in Thar (Eds. Dhir et.al.) Geol. Soc. India.
Bhandari, M.M.	1995	Biodiversity of the Indian Desert. In Taxonomy and Biodiversity (ed. by A.K. Pandey). Delhi (CBS Publishers).
Bhatia, A.K.	1978	Tourism in India. History and Development. New Delhi (Sterling Publishers Pvt. Ltd.).
Bhatia, A.K.	1982	Tourism Development Principles and Practices. (Sterling Publishers Pvt. Ltd.), New Delhi
Bilgrami, K.S.	1995	Concept and Conservation of Biodiversity, In CBC Publishers, Delhi.
Biswas, S. and Sanyal, D.P	1977	Fauna of Rajasthan, India, Part II: Reptilla, Rec. Zool. Surv. India.
Bist. Vijaya,	1993	Impact of Modern Tourism on Rajasthan Environment , (unpublished thesis, Department of Geography, University of Rajasthan).
Bithu, B.D.	1998	Pasture development as a sustainable alternative to intensive agricultural in Thar Desert: In Pasture & Pastoralism in desert. Ed. by S.M. Mohnot & Rollefson. Scientific Publishers, Jodhpur
Blandford, W.T.	1888-1891	The Fauna of British India. Including Ceylon and Burma. Mammalia. V. Taylor and Francis, London.
Bohra, H.C., Goya, S.P. Ghosh, P.K. and Prakash, I.	1992	Studies on ecology and ecophysiology of the antelopes in the Indian desert. Ann. Arid Zone.
Boniface, Priscilla	1995	Managing Quality Cultural Tourism London (Routledge).
Bulter, E.A.	1878	My last notes on the avifauna of Sind. Stray Feathers.
Borai, D.C., Hyma, B. & G. Wall	1978	Tourism and recreation in a developing area: The Case of Tamilnadu, India, India Geographical Studies, Research Bulletin, No. 11.
Chakravarti, P K	1998	"Changing Scenario of Recreation in Darjeeling-Sikkim Himalayas and Foot Hills", Geographical Review of India, Vol. 60, No.4, Dec. 1998.
Chouhan, T.S	1988	Integrated Area Development of Indian Desert. (Geo-Environ Academia), Jodhpur.
Chouhan, T.S.	1993	Rajasthan Atlas, (In Hindi), Vigyan Prakashan, Jodhpur
Chouhan, T.S.	1994	Geography of Rajasthan, Vol.. 1 and 2, Vigyan Prakashan, Jodhpur.
Chouhan, T.S.	1994	Natural and Human Resources of Rajasthan, Scientific Publisher, Jodhpur
Chib, Sukhdev Singh,		This Beautiful India-Rajasthan; Punjab University, Chandigarh High and Life Publishers, New Delhi
Cooper, C.P. & Boniface B.G.	1987	he Geography of Travel & Tourism; Heinemann Professinal Publishing Ltd., Oxford
Census of India	2001	Directorate of Census Operations Rajasthan.
Datt, Narayan and Mridula,	1991	Ecology and Tourism. (Universal Publishers Distributors), New Delhi
Dhir, R.P., Kar, A., Wadhawan, S.K., Rajguru, S.N., Mishra, V.N., Singhvi, A.K. and Sharma, S.B.	1991	Thar Desert in Rajasthan: Land, Man and Environment. (Eds. Singhvi, A.K. and Kar, A.). Bangalore (Geological Soc. of India).
Directorate of Tourism Rajasthan	1992	Directorate of Tourism Rajasthan Forty Years of Tourism
Director, Z.S.I. (ed.)	1991.	Animal Resources of India. Protozoa to Mammalia: State of the Art. Z.S.I. Calcutta.

Edington, J.M. & Edington, M.A.,	1986.	Ecology, Recreation and Tourism, Cambridge University Press,
Erskine, K.D.	(reprinted 1992)	19-08 a. Rajputana Gazetteers. The Western Rajputana States, Residency & Bikaner. Gurgaon (Vintage Books)
Erskine, K.D.	(reprinted 1992)	19 08 b. Rajputana Gazetteers. The Western Rajputana States, Residency & Bikaner. Gurgaon, (Vintage Books).
Ferguson, A.F.	1996	Detailed Report on the Area Development Plan for the Desert Triangle. Department of Tourism, Art and Culture, Govt. of Rajasthan. plus appendices 3.
Frame, Bob., Victor, J. and Joshi, Y	1993	Biodiversity Conservation Forests, Wetlands and Desert. New Delhi (Tata Energy Research Inst. and British Council).
Gehlot, Jagdish Singh	1981	Rajasthan; Rajasthan Sahitys Mandir, Sojati Gate, Jodhpur
Gadgil, M. and Vartak, V.D.	1976	The society of groves of Western Ghats in India. Economic Botany.
Ghosh, A.K. Baqri, Q.H. and Prakash, I.	1996	Faunal Diversity in the Thar Desert: Gaps in Research. (Scientific Publishers) Jodhpur
Government of Rajasthan, Jaipur	2002	Statistical Abstract Rajasthan, Directorate of Economic & Statistics,
Government of Rajasthan	1996	Rajasthan State Gazetteer- Volume Five, Places of Tourist Interest, Directorate of District Gazettess Jaipur, 1996.
Government of Rajasthan, Jaipur	1994	Resume Atlas of Rajasthan, Department of Science & Technology
Goriup, P.D. and Vardhan, H. (eds.)	1980	Bustrards in Decline. Tourism and Wildlife Society of India, Jaipur.
Gupta, P.D.	1977	Faunal Composition of Rajasthan. In the Natural Resources of Rajasthan (Ed. M.L. Roonwal), Vol. 1. Jodhpur University Press, Jodhpur.
Gupta, R.K. and Prakash, I.	1975	Environmental Analysis of Thar Desert. Dehra Dun, (English Book Depot).
Harrison, David,	1992	Tourism and the Less Developed Countries. (Belhaven Press), London
Hora, S.L.	1952	The Rajputana Desert: Its value in India's economy. Bull. Nat. Inst. of Sci., India.
Ilika, Chakravathy	1999	"Tourism and Regional Development: A Case Study of Maharashatra", Indian Journal of Regional Science, Vol. XXXI, No. 2, 1999.
Ishael. S. & Sinclair. T. (eds.)	1991	Rajasthan, A.P. Publications, H.K. Ltd. Singapore
Institute of Development Studies	2003	Rural Tourist of India- Social Economic Dimension, Institute of Development Studies, Jaipur.
I.T.D.C.	1975	Guide to Rajasthan, I.T.D.C., New Delhi
Jafari J.,	1974	The Socio-Economic Costs of Tourism to Developing Countries: Annals of Tourism Research,.
Jayashree, K. and Chitra, G.R.	1999	"Mariana Beach of Chennai, India: A Perception Study on Tourism Visualisation", The Indian Geographical Journal, Vol. 74, No. 2, Dec 1999.
Jain, Kailash Chand		Ancient Cities and Towns of Rajasthan: Motilal Banarsidas, Delhi Varanasi, Patna.
Kanodia, K.C. and Patil, B.D.	1982	Pasture Development In : Desert Resources and Technology (Ed. by A. Singh), (Scientific Publishers) Jodhpur
Khoshoo, T.N.	1994	India's biodiversity: Tasks ahead. Curr. Sci.
Kolarkar, A.S., Murthy, K.N.K. and Singh, N.	1983	Khadin - a method of harvesting water for agriculture in the Thar Desert. J. Aric. Env.
Kumar, Maneet.	1992	Tourism Today: An Indian Perspective. (Kanishka Publishing House), New Delhi
Kala, V.	1973	Rajasthan Pocket Diary; Vikas Kiran Publications, Jaipur
Khoshoo, T.N.	1984	Environment and Tourism; Environmental Concerns and Strategies
Kandari, O P, T.V. Singh	1980	Corbett National Park: Studying Impact of Tourism and Development Activities. Tourism Recreation Research, June.
Kaur, J.	1982	Using Himalaya Ethenic Attractions and Folk Traditions for Tourism: A Case of Garhwal, Tourism Recreation Research.
Kayastha, S L & S N Singh	1977	The Utilisation of Human Resources: A Spatial Analysis of Manufacturing Employment in Eastern U.P., The Naitonal Geographical Journal of India, Vol. 23.
Law, Chirstopher, M. (ed.).	1996	Tourism in Major Cities. Boston (International Thomson Business Press).
Laws, Eric	1995	Tourist Destination Management Issues, Analysis and Policies. London. (Routledge).
Lundberg, Donald, E	1972	The Tourist Business. Chicago. (Institutions Volume Feeding Management Magazine).
Majupuria, T.C (ed.)	1986	Wild Life Wealth of India. (Tecpress Services, L.P.) Bangkok
Malhotra, S.P.	1988	Man and the Desert. In Desert Ecology (Ed. by Prakash, I.). Jodhpur (Scientific Publishers).
Mathur, C.M.	1960	Forest types of Rajasthan, Indian Forester, Vol. 65
Mathur, N. and Dodson, R. (ed.)	1994	Tourism: Concepts and Researches. IJMT Publicatiojn, Jodhpur.
Mathur, N.	1995	Tourism the Next Decade. Jodhpur. IJMT Publication.
Mathur N. and Dodson, R. (ed.)	1992	An Approach to Tourism Management. IJMT Publication, Jodhpur,
Mathur, N. and Dodson, R.	1993	Tourism and Socio-economic System. Int. J. Manag. Tour.
Mc Intosh, G.	1990	Tourism: Principles, Practices and Philosophies. (John Wiley & Sons Inc.), New York
Mohnot, S.M. and Bhandari, M.M. (ed.)	1986	Environmental Degradation in Western Rajasthan. (Jodhpur University Press), Jodhpur
Monhot, S.M. and Jaitly, H.	1994	A Profile of Sandstone Mine Workers of Jodhpur and Dust Born Diseases. Published by GVVS. Raja Offset Printers, Jodhpur.
Mohnot, S.M. and Rajpurohit, L.S.	1990	The Old Water System of Jodhpur. (INTACH & SDS, Jodhpur
Murry, J.A.	1886	The Reptiles of Sind. The Education Society Press, Bombay.
Mathieson, Alister & Wall, Geoffrey,	1982	Tourism-Economic, Physical and Social Impacts, Longmann, London, New York

Mehla, Hanuman	1997	Industrial growth and potential of Shekhawati, (unpublished thesis, Department of Geography, University of Rajasthan).
Noy - Meir, I.	1973	Desert Ecosystems : Environment and Producers. Ann. Rev. Eco. Sys
Negi, J. Dr.	1980	Tourism Development and Resource Conservation: Metropolitan Book Co., New Delhi.
Nilima Jauhari	1991	Conference on Development Reconsidered January 12-14, 1991, Jaipur Planning for Tourist- An approach, SID Raj. Chapter Jaipur.
Oppermann, M. and Chon, Kye-Sung	1997	Tourism and Developing Countries. London, Int. Thomson Business Press.
Pandey, A.K.	1995	Taxonomy and Biodiversity. CBS Publishers & Distributors, New Delhi.
Panwar, L.K.	1986	The Battle of Survival in Jaisalmer: Seven Story, in Environmental Degradation in Western Rajasthan (Ed. by Mohnot, S.M. and Bhandari, M.M.), (Jodhpur Univ. Press).
Panwar, L.K.	1997	Developing rural tourism for socioeconomic development in rural areas of Rajasthan through Panchayati Raj Institutions (PRIs), Int. J. Mang. Tour.
Pearce, D.G. and butler, R.W. (ed.).	1993	Tourism Research Critiques and Challenges (Reutledge), London
Popelka, C.A. and Littrell, M.A.	1991	Influence of Tourism of Handicraft Evdution Int. J. Manag. Tour.
Prakash, I.	1975	The Ecology and Zoogeography of Mammals. In Environment Analysis of Thar Desrt. English Book Depot, Dehra Dun
Prakash, I.	1982	The living Thar desert. Sanctuary.
Prakash, I. (Ed.).	1988	Desert Ecology., Scientific Publishers, Jodhpur
Prakash, I.	1994	The hunting desert. Hornbill.
Prakash, I.	1994	Biodiversity Conservation in the Thar Desert. Indian For.
Prakash, I. and Ghosh, P.K.	1980	Human animal interactions in the Rajasthan desert. J. Bombay nat. Hist. Soc.
Pal, H. Bishan		The Temples of Rajasthan; Prakash Publishers, Jaipur
Pearce, D.	1987	Tourism Today, A Geographical Analysis, Longman Group, U.K. Ltd
Rahmani, A.R.	1986	The great Indian Bustrard in Rajasthan. Tech. Report No. 11, Bombay nat. Hist. Soc., Bombay.
Robinson,H.	1976	A Geography of Tourism, Macdonals & Evans, London
Richard and Sharpley Julia	1997	Rural Tourism: An Introduction, London, Int. Thomson Business Press.
Rodgers, W.A. and Panwar, H.S.	1988	Planning Wildlife Protected Area Network in India. Wildlife Institute of India. Dehra Dun. Vol. 1 (The report).
Roonwal, M.L. (Ed.).	1977	The Natural Resources of Rajasthan. (Univ. of Jodhpur Press), Jodhpur
Sankhala, K.	1964	Wildlife sanctuaries in Rajasthan. J. Bombay Nat. Hist. Soc.
Seth, P.N.B. and Sushma, Seth	1993	An Introduction to Travel and Tourism, (Sterling Publishers Pvt. Ltd.), New Delhi.
Shackley, Myra	1996	Wildlife Tourism. (Inst. Thomson Business Press), London
Sharma, K.C.	1996	Tourism: Policy, Planning and Strategy.. (Pointer Publishers), Jaipur
Shaw, James	1985	Introduction to Wild Life Management.. (Mc Graw-Hill Book Company), New York
Singh, Tej Vir, Kaur, Jagdish and Singh, D.P.	1992	Studies in Tourism Wildlife Parks Conservation.. (Metropolitan Book Company Pvt. Ltd.), Delhi.
Singh, A K	1976	Tourist Industry in Bihar The Deccan Geographer, VOl. 14.
Singh, T.V.	1982	Garhwal Himalaya: Sacred Sites and Secular Seers. Tourism Recreation Research
Singh, Tej Vir	1980	Impact of Tourism on Environment : A partial analysis of Uttarkhand Himalaya. The National Geographical Journal of India, Vol. 26,
Singh, Tej Vir, Kaur, Jagdish	1978	The Valley of Flowers in Garhwal: A Case for a Biosphere Reserve. The Journal of Himalaya Studies and Regional Development, Vol. 2.
Smith, L.J. Stephen,	1989	Tourism Analysis: A Hand Book. New York. (Longman Scientific and Technical).
Soni, R.G.	1994	Checklist of birds of Indira Gandhi Nahar Project. Stage-II (Rajasthan), Indian
Sharma, Dasharatha		Rajasthan Through the ages.
Singh, R.B.,		Tourism Development Environment Monitoring and Remote Sensing, Studies in Environment and Development; Common Health Publishers, New Delhi.
Sood, Vibha Krishen	1999	"Impact of Tourism on the Social-Cultural Step of Ladakh", Geographical Review of India, Vol. 61, No. 2, June 1999.
Surendra Kumar,	1991	Conference on Development Reconsidered, January 12-14 1991, Jaipur Strategy for Development of Tourist and Handicraft in Rajasthan, Surendra Kumar, SID Raj. Chapter.
Surjit Singh	2003,	Tourist in Rajasthan- Some insights, Institute of Development Studies, Jaipur.
Thakur, P S	198	Kullu Valley: The Tourist Paradise. The Geographical Observer, Vol. 16,
Thangamani, K	1976	Ootacamund: The Sweet Daughter of the Nilgiris. The Tourism Research, Vol. 1.
Thangamani, K	1980	Tourist Behaviour, Economy and Area Development Plan, Ph.D. Thesis, Mysore University.
Tourism Highlights	1996	In International Tourism Overview, WTO Publication Unit, Madrid.
Vasantha, Kumaran T.	1998	"The Application of Geographical Information Systems (GIS) in Tourism", The Geography Teacher, Vol. 5, No. 5, 1998/1999.
Vishwanathan, Prema.	1996	Economic Contribution of Tourism Section, New Delhi, Indian Express, Jan. 1996.
WTO.	1993	Global Tourism Forecasts to the Year 2000 and Beyond: Executive Summary. Madrid, World Tourism Organisation.

1 राजस्थान का भूगोल डा. तेजसिंह चौहान विकास प्रकाशन जोधपुर

2 राजस्थान सुजस, राजस्थान सरकार , जयपुर

3 राजस्थान का वन्य जीवन, एस. के. वर्मा आई. एफ.एस. आकांक्षा प्रकाशन जयपुर

4 भारतीय रेगिस्ताान के पर्यावरणीय पर्यटन डा. ललित के. पंवार, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
5 राजस्थान दर्शन, पर्यटन कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार
6 नागौर जिला दर्शन, राजस्थान सरकार
7 जालौर उत्सव 2001, जालौर उत्सव आयोजन समिति जालौर
8 प्रगति प्रतिवेदन 2003–04 पर्यटन विभाग राजस्थान
9 राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा ;मकण्द्वए 1998 डा. जयसिंह नीरज व डा. वी.एल.शर्मा राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
10 राजस्थान का भूगोल 1998 सम्पादक डा. महेश नारायण निगम, डा. अमित कुमार तिवारी राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर